

୧୫୫୩ ୨୨୨୮- ୫୪୭୫ ଘରପାଠକ

'વૃદ્ધિ' ૨૨૧ મ અંક ૦૧ માન્ય ૨૦૧૭ (વૃષ ૧૦ માસ ૧૧૧ અંક ૨૨૧)



૨ અંકમે અર્થ:-

१ संपादकीय संदेश

२०६५

૨૧૧ ગાદીશ પુત્રાદ માહુતક દુટા ઉઘ કથા રગાદીશ પુત્રાદ માહુત સાગૈયા પોપૈ૧ (તેસ૧ સંસ્ક૧મા) સં ૧૩ ટા ઉઘ
કથા

२२॥॥देव महादेवक पाठ मँमन उपन्यासक ऐगारा कड़ी

२३-वीणद- गा-प्राप्त मक्षि- क-पेय

૨૪૧૭૬ શ્રી કુમાર પાસાદ- આયોજ-દર્શિ સાહિત્યકે આગ સાહિત્યસં શુટકેવાક પાપોળગ-૨-૭૬ કૈશ કુમાર
મશિન-ગમાક સં વાવાદ હોજા મૈથિ આ મૈથિ સંસકર્ગ

3454

રૂપાશીષ અયનિલ- કલિ પોગી આર્યાગા

ଉତ୍ତରାଘୋଷ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଶାଳୁଣୀ 'ଅଗାଧି' - ୧୮ ମାର୍ଚ୍ଚ

૩૩૧નાખીવ નાખન હા- ર ટા ગાખર રમહેશ ડપ્પનામી- મહેશ પદ્યાવધી - અનુનોય

૩૪૫૧દી૫ પૃષ્ઠ- ૨ ટા ગાળથ

૩૫ પૃથ્વી માસ- અપના છે અપનાઈ ઇડર પડા

ઘો તો તહે ઇનક વેઘૌ ડોન દૌનઘાદોડોઈ સિસુસોડ વ્રશ્યપ્દશ્ર માતિહિર્ષિ માગાડનિ નિ પદડ ડોનમાત નદ માતિહિર્ષિ
 ઋદ્ધી વ્રદ્ધિ ચોક્સ પાનિતનિગસ પહોતો ડિસિ વદિદ્દક પુનાન અંક આ આંડયિ વ્રોડયિ પોથી યાત્રીનકલ્ શ્વેટો સનક શ્વેર
 સન ડાડનલોડ કનવાક હેન નીચાંક ઇકિ પન ખાડા

ପ୍ରଥମେ ଏ ଅବସ୍ଥାକୁ ସଫଳ ଭାବେ ଆକାର



होमि उडयिषि वदिस डयेवौक गनुप



होमि वदिस गोगेगनुपस



होमि ओडयिषि वदिस

थौतिने नो वी नैगुवन वदिस डवे मनोदयासतस नहनुगह शेनसियोपे



वदिस पाठवत्तक डसिकसन शेनमपन पाउ

संपादकीय

वदिस "गेपाठक वनमान मैथिली साहित्य" वषिक वशिषांक गकिठवाक गेपान केठक अछि ठाकन संयोगक श्नी दगिस धादव जी नहना।

अर वशिषांकमे गेपाठक वनमान मैथिली साहित्य केन मूठयांकन नहना। अर वशिषांक छे सग वशिषांक आठेयना- समीक्षा- समावेयना आदि पनसनावति अछि। समय- सोमा कछि नै गहयि पना आठेय आवि गेनै नहयि, मुदा पनयास नहना जे एही साठ मर- जून वनै ई वशिषांक आवि जाए। उम्मेद अछि वदिस ई पनयास दूगू पायापन एकटा पूठ जून वनाए।

वदिस द्वागना संयावति "आमंति नयनापन आमंति आठेयकक टपिपामी" संपादक दोसन भागक घोषणा कए जग नहना अछि। दोसन भागमे अर वेन गेठमायव यौयनी जीक नयना आमंति कए जग नहना अछि आ गेठमायवजीक नयना ओ नयनायनमितापन टपिपामी कनवा छेठ केवस कुमान मशिनीगेक आमंति कए जग नहना छनी। दूगू गोटाकेँ औपयानकि सूयना जठेयि पठओठ जाए। नयनाकानक नयना ओ आठेयकक आठेयना जपने आवि जाए। ओकन अगाधि अंकमे ई पुनकाशति कए जाए।

अर संपादक पहि भाग कामगिजीक नयनापन छठ आ टपिपामीकन मयुकांन हाजी छवह।

जेना की सग गोटा जगै छी जे वदिस २०१५ मे तीग टा वशिषांक तीग साहित्यकानपन पुनकाशति केठक ठाकन मापदंड छठ साठमे दूटा वशिषांक जीवति साहित्यकानक उपन नहना जइमे एकटा ६०- ७० वा ओइसँ वेसी साठक साहित्यकान नहना। दोसन ४०- ५० साठक (मैथिली साहित्यकान मने गाना आ गेपाठ दूगूक)। ऐ कनमे अनवनिद गकुन ओ जगदीश यंदन गकुन "अगठि" जीपन वशिषांक गकिठ युक्त अछि। आगूक वशिषांक कनिकापन हुअए नइ छेठ एक मास पहिनेसँ पाठकक सुहाव माँगठ गेठ छठ। पाठकक सुहाव आएठ आ ओइ सुहाव अंतगत वदिस कछि अगाधि वशिषांक पनमेसवन कापडि, वीनेदून मठकि आ कमठा यौयनी पन नहना। हमन सवहक पुनयास नहना जे ई वशिषांक सग २०१७ मे पुनकाशति हुअए मुदा ई नयनाक उपव्यथापन गनिन कन। मने नयनाक उपव्यथाक हसिावसँ समए उपन- गयिया मड सकै। सग गोटासँ आगूनह जे ओ अपन- अपन नयना गगागेदना वदिसयोम पन पठ दी।

व्रदिह सम्मान

व्रदिह समानागत साहित्य अकादेमी सम्मान

व्रदिह समानागत साहित्य अकादेमी श्रेष्ठ पुनस्का २०१०-११

२०१० स्त्री गोवर्गद हा (समग्र योगदान ठेठ)

२०११ स्त्री नमानगद गोमु (समग्र योगदान ठेठ)

व्रदिह समानागत साहित्य अकादेमी पुनस्का २०११-१२

२०११ मूठ पुनस्का- स्त्री जगदीश पुनसाद माह्ठठ (गामक जगिगी, कथा संग्रह)

२०११ वाठ साहित्य पुनस्का- ठेठ मायागाथ हा (जकन गानी यत्न होइ, कथा संग्रह)

२०११ पुवा पुनस्का- आगद कुमान हा (कूठ, गटक)

२०१२ अगुवाद पुनस्का- स्त्री नामयेयन ठकु- (पद्मानदीक माही, वांग्ठा- मानकि वंद्योपाय्याय, उपन्यास वांग्ठासँ मैथिली अगुवाद)

व्रदिह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुनस्काक रूपमे पुनसद्वि)

व्रदिह समानागत साहित्य अकादेमी श्रेष्ठ पुनस्का २०१२

२०१२ स्त्री नाजगदग ठठ दास (समग्र योगदान ठेठ)

व्रदिह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुनस्काक रूपमे पुनसद्वि)

२०१२ वाठ साहित्य पुनस्का- स्त्री जगदीश पुनसाद माह्ठठ केँ “नयेग” वाठ पुनक व्रह्मिकथा संग्रह

२०१२ मूठ पुनस्का- स्त्री नाजदेव माह्ठठ केँ “अम्वनी” (कविति संग्रह) ठेठ

२०१२ पुवा पुनस्का- स्त्रीमती ज्योता सुगीत यौवनिक “अन्यसि” (कविति संग्रह)

२०१३ अगुवाद पुनस्का- स्त्री गनेश कुमान वकिठ “ययाग” (मनागि उपन्यास स्त्री व्रष्मि सप्यानाम प्याम्डेक)

व्रदिह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुनस्काक रूपमे पुनसद्वि)

२०१३ वाठ साहित्य पुनस्का- स्त्रीमती ज्योता सुगीत यौवनिक- “देवीजी” (वाठ नविव्य संग्रह) ठेठ

२०१३ मूठ पुनस्का- स्त्री वेयन ठकु केँ “वेटीक अपभाग आ छीनदेवी” (गटक संग्रह) ठेठ

२०१३ पुवा पुनस्का- स्त्री उमेश माह्ठठ केँ “गशिपुकी” (कविति संग्रह) ठेठ

२०१४ अगुवाद पुनस्का- स्त्री व्रगीत उत्पठ केँ “मोहनदास” (हिनदी उपन्यास स्त्री उदय पुनकास) क मैथिली अगुवाद ठेठ

व्रदिह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानागत साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूठ पुनस्का- स्त्री गद व्रविस नाय (सप्यानी पेटानी- ठठ कथा संग्रह)

२०१४ वाठ पुनस्का- स्त्री जगदीश पुनसाद माह्ठठ (गै योयै- वाठ उपन्यास)

२०१४ पुवा पुनस्का- स्त्री आशीष अगयगिहान (अगयगिहान आप्य- गाठ संग्रह)

२०१५ अगुवाद पुनस्का- स्त्री शम्भु कुमान सहि (पाय्ठो- तुकानाम नामा शेटक कोकमी उपन्यासक मैथिली अगुवाद)

गटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ यात्रिकला क्षेत्रमे व्रदिह सम्मान २०१२

अनन्य- मुप्य अनन्य,

सुस्त्री शिल्पी कुमारी, उम्- १७ पति स्त्री ठक्षम हा

स्त्री शोभा कान् महो, उम्- १५ पति- स्त्री नामअवतान महो,

हास्य-अनन्य

सुस्त्री पुनपिका कुमारी, उम्- १६, पति- स्त्री व्रैद्यगाथ साह



श्री दुर्गागंड गकुल, उम्- २३, पति- स्वर्ण गकुल

गुरु

सुश्री सुषमा कुमारी, उम्- १६, पति- श्री हेनराम दादव

श्री श्रीमती नमन, उम्- १८, पति- गजेश्वर कामन

यतिनका

श्री पनकठा मम्ड, उम्- ३५, पति- स्वर्ण सुन्दर मम्ड, गाम छपगा

श्री नमेश कुमार गानगी, उम्- २३, पति- श्री मोती मम्ड

संगीत (हामोनियम)

श्री पनमनगंड गकुल, उम्- ३०, पति- श्री गुरुगु गकुल

संगीत (ढोलक)

श्री वृण गानगी, उम्- ४५, पति- स्वर्ण यष्टि गानगी

संगीत (नसगयौकी)

श्री वहादुर नाम, उम्- ५५, पति- स्वर्ण सनपुग नाम

शिल्पी-वस्तुकार

श्री जगदीश मठक, ५० गाम- यनौगांग

मूर्ति-मूर्तिकार

श्री यदुगंड पंडित, उम्- ४५, पति- अश्वि पंडित

काष्ठ-कार

श्री हनेषी मुष्या, पति- स्वर्ण मूंगाठा मुष्या, ५५, गाम- छपगा

कसिनी-आत्मनियम संस्कार

श्री छमी दास, उम्- ५०, पति- स्वर्ण श्री शमी दास, गाम वेनमा

वैदिक मैथिली पत्रिका समाज

- २०१२ श्री गजेश्वर कुमारी ह

गटक, गीत, संगीत, गुरु, मूर्तिकार, शिल्पी आ यतिनका क्षेत्रमे वैदिक समाज २०१३

मुख्य अंगन-

(१) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री नामावत दादव, उम्- १८, पति- गाम+पोस्ट- यनौगांग, भाया-

गमुन्या, पति- मधुवनी (वहिन)

(२) मो समसाद आठम सुपुत्री मो ईषा आठम, पति- गाम+पोस्ट- यनौगांग, भाया- गमुन्या, पति- मधुवनी

(वहिन)

(३) सुश्री अपरमा कुमारी सुपुत्री श्री मनोप कुमारी साहु, पति- १८-२-१८८८, पति- गाम-

उत्तमगियाँ, पोस्ट- छपगा, भाया- गहियाँ, भाया- वैकही, पति- मधुवनी (वहिन)

हास्य-अंगन-

(१) श्री वनमदवे पासवान उन्म नामगानी पासवान सुपुत्री- स्वर्ण उत्तम पासवान, पति- गाम+पोस्ट- औनहा, भाया-

गहियाँ, भाया- वैकही, पति- मधुवनी (वहिन)

(२) टाँसखि आठम सुपुत्री मो मुस्ताक आठम, पति- गाम+पोस्ट- यनौगांग, भाया- हंदापुन, पति- मधुवनी

(वहिन)

गाटक, गीत, संगीत, गृह्य, भूगोल, शिल्प आ यतिनकषा क्षेत्रमे ब्रह्म सम्मान (भांगनीपिवास सम्मान योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह नागपुरा :

श्री नामवृक्ष सह सुपुत्र श्री अनुरोध सह, उमेर- ५६, गाम- शुभवनिया, पोस्ट- वाववनही, जिला- मधुवनी (बिहार)

भांगनीपिवास सम्मान: मथिली लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री नाम उष्यन साह पे स्व पुत्रीसाह साह, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- गगनसागा, अगुमंड- शुभवनिया (मधुवनी)

गाटक, गीत, संगीत, गृह्य, भूगोल, शिल्प आ यतिनकषा क्षेत्रमे ब्रह्म सम्मान (सम्मान योगदान सम्मान):

गृह्य -

(१) श्री हनिगनायाम माह्मद सुपुत्र- स्व गन्दी माह्मद, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजगा, गाया- गनहिया, जिला- मधुवनी (बिहार)

(२) सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री नामदेव पासवान, उमेर- ९६, पता- गाम+पोस्ट- यनौगांग, गाया- हंदापुरा, जिला- मधुवनी (बिहार)

यतिनकषा-

(१) पद्म प्रकाश माह्मद सुपुत्र- श्री कुशेश्वर माह्मद, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपहा, पोस्ट- वौनहा, गाया- सनापहा, जिला- सुपौर (बिहार)

(२) श्री यगदग कुमार माह्मद सुपुत्र श्री मोठा माह्मद, पता- गाम- पड़गापुरा, पोस्ट- वेठही, गाया- गनहिया, थागा- ठौकही, जिला- मधुवनी (बिहार) संपूर्ण, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कक्षा एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना

हनिगनियों हनिमोगनिम

(१) श्री महादेव साह सुपुत्र नामदेव साह, उमेर- ५८, गाम- वेठहा, वार्ड- नं ०८, पोस्ट- छजगा, गाया- गनहिया, जिला- मधुवनी (बिहार)

(२) श्री जागेश्वर प्रसाद नाउ सुपुत्र स्व नामस्वरूप नाउ, उमेर ६०, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, गाया- नमुनिया, थागा- हंदापुरा (आनस शिवनि), जिला- मधुवनी पिन- ८४७४९० (बिहार)

ढोक् डेक्का ढोक्किया

(१) श्री अरुण सदाश सुपुत्र स्व , पता- गाम- तुमसियाही, पोस्ट- मनोहरा पट्टी, थागा- मनौगा, जिला- सुपौर (बिहार)

(२) श्री कठ्ठन नाम सुपुत्र स्व पट्टी नाम, उमेर- ५०, गाम- ठक्कमगियाँ, पोस्ट- छजगा, गाया- गनहिया, थागा- ठौकही, जिला- मधुवनी (बिहार)

नसगयौकी ब्राह्मक-

(१) ब्राह्मदेव नाम सुपुत्र स्व अरुण नाम, गाम+पोस्ट- निम्मी, वार्ड नं ०७ , जिला- सुपौर (बिहार)

शिल्पी-वसुनकषा-

(१) श्री वीरू मणिक सुपुत्र दानवानी मणिक, उमेर- ७०, गाम- ठक्कमगियाँ, पोस्ट- छजगा, गाया- गनहिया, जिला- मधुवनी (बिहार)



(२) श्री नाम वीरस धनकिम सुपुत्र स्व गेदास धनकिम, उमे- ४०, पता- गाम+पोस्ट- यनौगांज, भाया- नमुनिया, जिला- मधुवनी (वहिन)

मूनाकिम-मूनाकिम कवि-

(१) धूमन पंडित सुपुत्र- श्री मोरू पंडित, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी (वहिन)

(२) श्री पुनरु पंडित सुपुत्र स्व , पता- गाम+पोस्ट- नहिया, थागा- ठैकही, जिला- मधुवनी (वहिन)

कापड-कवि-

(१) श्री जगदेव साहु सुपुत्र शनीयन साहु, उमे- ३६, गाम- निमठी-पुनवास, जिला- सुपौठ (वहिन)

(२) श्री योगेन्द्र गुरु सुपुत्र स्व वृद्ध गुरु उमे- ४५, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

कसिनी- आनमनिम संस्कृत-

(१) श्री नाम अन्नान नाउ सुपुत्र स्व सुवध नाउ, उमे- ६६, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

(२) श्री नौशन दादर सुपुत्र स्व कपडेश्वर दादर, उमे- ३५, गाम+पोस्ट- वनगामा, भाया- नहिया, थागा- ठैकही, जिला- मधुवनी (वहिन)

अष्टमहारा-

(१) मो जीवध सुपुत्र मो वरिध मलूम, उमे- ६५, पता- गाम- वसहा, पोस्ट- वडहाना, भाया- अन्धनाडा, जिला- मधुवनी, पति- ८४७४०९

जोगा-जोगा-

श्री व्ययन मल्ल सुपुत्र स्व सोनानाम मल्ल, उमे- ६०, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

श्री नामदेव गुरु सुपुत्र स्व जोगेश्वर गुरु, उमे- ५०, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

पनाली (पुनगाली) गौनहिन आ पनाली पौनगाली वादक-

(१) श्री सुकदेव साक्षी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इहनी, पोस्ट- वेरही, भाया- निमठी, थागा- मनौगा, जिला- सुपौठ (वहिन)

पनाली (पुनगाली) गौनहिन - (अग्रहसं माघ-श्रावण तक गाओठ जाइत)

(१) सुकदेव साक्षी सुपुत्र स्व वावूनाथ साक्षी, उमे- ७५, पता- गाम इहनी, पोस्ट- वेरही, भाया- निमठी, थागा- मनौगा, जिला- सुपौठ (वहिन)

(२) ठेठु दास सुपुत्र स्व सनक मल्ल पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

हनी-

(१) मो गुठ हसन सुपुत्र अवुठ नसीद मलूम, पता- गाम+पोस्ट- वेनमा, भाया- नमुनिया, थागा- हंदापुन (आनएस शिविनि), जिला- मधुवनी पति- ८४७४९० (वहिन)

(२) मो नरमान साहव सुपुत्र, उमे- ५८, गाम- नहिया, भाया- शुभपनास, जिला- मधुवनी (वहिन)

गाठ वादक-



(१) स्त्री जगन नामाग्राम मम्भुड सुपुत्र स्व पुत्रीया मम्भुड, उमे- ४०, गाम+पोस्ट- ककनडी, माया- गनहिया, थागा- ठैकही, जगि- मधुवनी (वहिन)

(२) स्त्री देव नामाग्राम यादव सुपुत्र स्त्री कुशुमठा यादव, पना- गाम- वनहूठा, पोस्ट- अमही, थागा- घोघडीहा, जगि- मधुवनी (वहिन)

जीतलानी ठैक जीत-

(१) स्त्रीमनी शुद्धनी देवी पत्नी स्त्री नामशुभ मम्भुड, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनिया, थागा- हंहापुन (आनएस शक्तिनि), जगि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

(२) सुस्त्री सुप्रति कुमारी सुपुत्र स्त्री गंगानाम मम्भुड, उमे- ९८, पना- गाम- मछयी, पोस्ट- वठिया, माया- हंहापुन, जगि- मधुवनी (वहिन)

पुनदक वादक-

(१) स्त्री सीतानाम नाम सुपुत्र स्व जंगल नाम, उमे- ६२, पना- गाम- ठक्षमनिगियाँ, पोस्ट- छजगा, माया- गनहिया, थागा- ठैकही, जगि- मधुवनी (वहिन)

(२) स्त्री ठक्षमी नाम सुपुत्र स्व पंथ मोथी, उमे- ७०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनिया, थागा- हंहापुन (आनएस शक्तिनि), जगि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

कौनगेट-

(१) स्त्री यन्त नाम सुपुत्र स्व जीतल नाम, उमे- ५०, पना- गाम- ठक्षमनिगियाँ, पोस्ट- छजगा, माया- गनहिया, थागा- ठैकही, जगि- मधुवनी (वहिन)

(२) मो सुमान, उमे- ५०, पना- गाम+पोस्ट- यनौनागंज, माया- नमुनिया, जगि- मधुवनी (वहिन)

वेगुन वादक-

(१) स्त्री नाम कुमान महो सुपुत्र स्व ठक्षमी महो, उमे- ४५, गाम- गिनमठी वान्ड नं ०४, जगि- सुपौठ (वहिन)

(२) स्त्री धुन नाम, उमे- ४३, गाम+पोस्ट- वनगामा, माया- गनहिया, जगि- मधुवनी (वहिन)

मनौ गनैया-

(१) स्त्री जीवछ यादव सुपुत्र स्व नूपाठा यादव, उमे- ८०, पना- गाम इहनी, पोस्ट- वेठही, माया- गिनमठी, थागा- मनौगा, जगि- सुपौठ (वहिन)

(२) स्त्री शम्भु मम्भुड सुपुत्र स्व ठप्प मम्भुड, पना- गाम- वठियाघाट- १ सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- गिनमठी, जगि- सुपौठ (वहिन)

पसिंसक- (पसिंसा कहैवठा)-

(१) स्त्री छुलू यादव उन्स नामकुमान, सुपुत्र स्त्री नाम पेठावन यादव, गाम- घोघनडहि, पोस्ट- मनोहन पट्टी, थागा- मनौगा, जगि- सुपौठ, पनि- ८४७४५२

(२) वैजनाथ मुपिया उन्स टहल मुपिया-

(२) सुपुत्र स्व ठोगा मुपिया,

पना- गाम+पोस्ट- औनहा, माया- गनहिया, थागा- ठैकही, जगि- मधुवनी (वहिन)

मथिठा यतिनका-

(१) सुस्त्री मथिठिस कुमारी सुपुत्र स्त्री नाम देव प्रसाद मम्भुड 'हानूदान' पना- गाम- १ सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- गिनमठी, जगि- सुपौठ (वहिन)

(२) स्त्रीमनी वीसा देवी पत्नी स्त्री दीपि हा, उमे- ३५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, माया- नमुनिया, थागा- हंहापुन (आनएस शक्तिनि), जगि- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

प्यजनी प्योजनी ब्राह्मक-

(२) श्री कशिनी दास सुपुत्र स्व गेवैत मम्भुठ, पना- गाम- नसुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, बाया- निम्नमि, जिठा- सुपौठ (वहिन)

नवम-

श्री उपेन्द्र यौधनी सुपुत्र स्व महवीर दास, उमेन- ५५, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, बाया- नमुनयि, थागा- हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जिठा- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

श्री देवनाथ ब्राह्म सुपुत्र स्व सत्तजीन ब्राह्म, उमेन- ५०, गाम- हाँहपट्टी, पोस्ट- पीपनाहा, बाया- धनगिर्, जिठा- मधुवनी (वहिन)

सांगी- (छुना-मुना)

(१) श्री पंथी शकुन, गाम- पपिनाहा

हाथि- (हथिवाह)

(१) श्री कुन्द कुमान कर्मा सुपुत्र श्री र्गुन कुमान कर्मा पना- गाम- नेवाडी, पोस्ट- यौनामहथैठ, थागा- हंदापुन, जिठा- मधुवनी, पनि- ८४७४०४

(२) श्री नाम पेशव नान सुपुत्र स्व कैठ नान, उमेन- ६०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, बाया- नमुनयि, थागा- हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जिठा- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

वौसनी (वौसनी ब्राह्मक)

श्री नामयन्त्र पुनसाद मम्भुठ सुपुत्र श्री होटन मम्भुठ, उमेन- ३०, वौसनीवौसनीवासुनी वज्रवै छथि पना- गाम- नसुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, बाया- निम्नमि, जिठा- सुपौठ (वहिन)

श्री ब्रिजिनाहा सुपुत्र स्व कण्ठीन हा, उमेन- ५०, पना- गाम+पोस्ट- कछुवी, बाया- नमुनयि, जिठा- मधुवनी (वहिन)

वेक गाथा गायक

श्री नवगुन ब्राह्म सुपुत्र सीतानाम ब्राह्म, पना- गाम- तुठसपिहा, पोस्ट- मनोहन पट्टी, थागा- मनौगा, जिठा- सुपौठ (वहिन)

श्री पथिकुन सदास सुपुत्र स्व मेथन सदास, उमेन- ५०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, बाया- नमुनयि, थागा- हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जिठा- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

मजनि ब्राह्मक (छोकटा हाथि)

श्री नामपनामम्भुठ सुपुत्र स्व अन्तुन मम्भुठ, पना- गाम- नसुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, बाया- निम्नमि, जिठा- सुपौठ (वहिन)

मृदंग ब्राह्मक-

(१) श्री कपडिश्वर दास सुपुत्र स्व सुगुन दास, उमेन- ७०, गाम- धक्कमनिगिर्, पोस्ट- छपना, बाया- गनहिया, थागा- ठौकही, जिठा- मधुवनी (वहिन)

(२) श्री प्यपन सदास सुपुत्र स्व वंश सदास, उमेन- ६०, पना- गाम+पोस्ट- वेनमा, बाया- नमुनयि, थागा- हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जिठा- मधुवनी पनि- ८४७४९० (वहिन)

नागपुन सह बाव संगीन

(१) श्री नामवृषिस ब्राह्म सुपुत्र स्व दुप्यन ब्राह्म, उमेन- ४८, गाम- समिना, पोस्ट- सांगी, बाया- घोघडिहा, थागा- शुभपनास, जिठा- मधुवनी (वहिन)

ननसा नासा-



श्री जोगेन्द्र नाम सुपुत्र स्व वरिष्ठ नाम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, माया- नमुन्या, थागा- हंदापुन
(आनएस शत्रिनि), जगि- मधुवनी पगि- ८४७४९० (वहिन)

श्री जोगेन्द्र नाम सुपुत्र काशेस्वर नाम, उमेर- ५८, गाम- महौना, पोस्ट- छपना, माया- नमुन्या, जगि-
मधुवनी (वहिन)

महाविक्रमार्किकावाट ब्राह्म-

श्री सैनी नाम सुपुत्र स्व उरति नाम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, माया- नमुन्या, थागा- हंदापुन
(आनएस शत्रिनि), जगि- मधुवनी पगि- ८४७४९० (वहिन)

श्री जगन्नाथ नाम सुपुत्र स्व उरति नाम, उमेर- ६०, महाविक्रमार्किकावाट ब्राह्म, १८७५ ईस महाविक्रम
छथा पता- गाम- वदियाघाट-सुआन, पोस्ट- मुंगनाहा, माया- निम्न, जगि- सुपौठ (वहिन)

गुमगुमिया गुम वाजा

श्री पनमेश्वर नाम सुपुत्र स्व वहिनी नाम, उमेर- ४९, १८८० ईस गुमगुमिया वजा छथा

श्री जगन्नाथ नाम सुपुत्र स्व श्री श्रीयन्द्र नाम, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, माया- नमुन्या, थागा-
हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जगि- मधुवनी पगि- ८४७४९० (वहिन)

उका देव ब्राह्म

श्री वदनी नाम, उमेर- ५५, पता- गाम इहनी, पोस्ट- वेरमा, माया- निम्न, थागा- नमुन्या, जगि- सुपौठ (वहिन)

श्री जोगेन्द्र नाम सुपुत्र स्व वरिष्ठ नाम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, माया- नमुन्या, थागा- हंदापुन
(आनएस शत्रिनि), जगि- मधुवनी पगि- ८४७४९० (वहिन)

उका (हेविमे वजाओ जगि)

श्री जगन्नाथ यौधनी उरति यमिनी दास सुपुत्र स्व महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, माया-
नमुन्या, थागा- हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जगि- मधुवनी पगि- ८४७४९० (वहिन)

श्री महेश्वर पोद्दाम, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- यगौनागंज, माया- नमुन्या, जगि- मधुवनी (वहिन)

गडेना उगिनी-

श्री नाम पुनसाद नाम सुपुत्र स्व सन्ध्या मोथी, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- वेरमा, माया- नमुन्या, थागा-
हंदापुन (आनएस शत्रिनि), जगि- मधुवनी पगि- ८४७४९० (वहिन)

ब्रह्म कछि ब्रह्मपां:

१) हकू ब्रह्मपां १२ म अंक, १५ जून २००८

ब्रह्म १५ ०६ २००८ पड ब्रह्म १५ ०६ २००८ थनिह्मापड १२५६७

२) गजग ब्रह्मपां २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

ब्रह्म ०१ ११ २००८ पड ब्रह्म ०१ ११ २००८ थनिह्मापड २१५६७

३) ब्रह्मिका ब्रह्मपां ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

ब्रह्म ०१ १० २०१० ब्रह्म ०१ १० २०१० थनिह्मा ६७

४) वाठ साहित्य ब्रह्मपां ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

ब्रह्म १५ ११ २०१० ब्रह्म १५ ११ २०१० थनिह्मा ७०

५) गटक ब्रह्मपां ७२ म अंक १५ दिसम्बर २०१०

ब्रह्म १५ १२ २०१० ब्रह्म १५ १२ २०१० थनिह्मा ७२

६) गानी ब्रह्मपां ७३ म अंक ०१ मार्च २०११



ब्रह्मि ०१ ०३ २०११ ब्रह्मि ०१ ०३ २०११ थनिल्ला ७७

७) वाठ गण्ड वसिषांक ब्रह्मि अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

ब्रह्मि ०१ ०८ २०१२ ब्रह्मि ०१ ०८ २०१२ थनिल्ला १११

८) अक्षागण्ड वसिषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

ब्रह्मि १५ ०३ २०१३ ब्रह्मि १५ ०३ २०१३ थनिल्ला १२६

९) गण्ड आठोयगा-समाठोयगा-समीक्षा वसिषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

ब्रह्मि १५ ११ २०१३ ब्रह्मि १५ ११ २०१३ थनिल्ला १४२

१०) काशीकांग मक्षि मधुप वसिषांक १६८ म अंक १ जनवरी २०१५

ब्रह्मि ०१ ०१ २०१५

११) अगस्त गण्ड वसिषांक १८८ म अंक १ नवम्बर २०१५

ब्रह्मि ०१ ११ २०१५

१२) गण्डेश यण्ड गण्ड अगठि वसिषांक १८९ म अंक १ दिसम्बर २०१५

ब्रह्मि ०१ १२ २०१५

१३) ब्रह्मि समभाग वसिषांक- २००म अंक १५ अप्रैल २०१६ २०५ म अंक १ जुलाई २०१६

ब्रह्मि १५ ०४ २०१६

ब्रह्मि ०१ ०७ २०१६

१४) मैथिली सोठी अठ्ठम गीत संगीत वसिषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

ब्रह्मि ०१ ०१ २०१७

ठेपकसं आभंगानि नयगापन आभंगानि आठोयकक टपिपामीक संपाद

१ कामगीक पांय टा कवति आ ओरपन मधुकांग हाक टपिपामी

वस्यएअ २०८१ह सिसे ब्रह्मि दू सए गौम अंक

ब्रह्मि ०१ ०८ २०१६

ब्रह्मि ६-पानिकाक वीछठ नयगाक संग- मैथिलीक सन्तुष्टेष्ट नयगाक एकटा समागानान संकठ

ब्रह्मि:सदेह:२ (मैथिली पुनवन्ध-नविन्ध-समाठोयगा २००८-१०)

ब्रह्मि:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००८-१०)

ब्रह्मि:सदेह:४ (मैथिली कथा २००८-१०)

ब्रह्मि मैथिली ब्रह्मि कथा [ब्रह्मि सदेह ५]

ब्रह्मि मैथिली उद्युक्था [ब्रह्मि सदेह ६]

ब्रह्मि मैथिली पद्य [ब्रह्मि सदेह ७]



ब्रह्म मैथिली नाट्य आसव [ब्रह्म सदेह ८]

ब्रह्म मैथिली शशि आसव [ब्रह्म सदेह ८]

ब्रह्म मैथिली पुनवन्ध-नविन्ध-समाधेयना [ब्रह्म सदेह १०]

भातिहिली भौकस याग वे दौगवोदेह उओम:

हानपसःसतिस्गोउठियोभाब्रह्महियोमब्रह्म-पोनर्ह

भातिहिली भौकस याग वे पुनयहसेह उओम:

हानपुःगोभाउगनि

बेन गहे उनिसा गमि भातिहिली वौकस याग वे गेदोन कनिहये - गेदोनस भूप भातिहिली भौकस नि पनिहये उओमाग

(युगेतेसप ब्रह्म) उओम भाउगेन कनिहये सगोनेस, गहेसे वौकस ने देवविनेदौगदौदौगिठेससधः-

हानपुःगोभाउगयोम

अपन भंगवप गगगगेनहानव्रह्महियोम पन पडाउ



गगगेनहानव्रह्महियोम

गगगगेनहानव्रह्महियोम

रे यगपन अपन भंगवप गगगगेनहानव्रह्महियोम पन पडाउ

रगह्य

२११ गगदीस पुनसाह माहउठक हूटा ठवु कथा २११ गगदीस पुनसाह माहउठ सगभैया पोप्यै (तेसग संस्कृतमा) सँ १३ टा ठवु कथा

२२१ गगदीस पुनसाह माहउठक गग गमन उपगयासक रेगवा कडी

२३१ गगदीस पुनसाह माहउठक गग गमन उपगयासक रेगवा कडी

२४१ गगदीस पुनसाह माहउठक गग गमन उपगयासक रेगवा कडी

१ गगदीस पुनसाह माहउठक हूटा ठवु कथा २ गगदीस पुनसाह माहउठ १याति 'सगभैया पोप्यै' ठवु कथा संग्रहक तेसग संस्कृतमासँ १३ गोट कथा

१

श्री गगदीस पुनसाह माहउठक

हूटा ठवु कथा



संक्षेप

तीस दसिम्ब, शुक्र दनि। २०१६ ईस्वी। साँहक साग वणे वृहन्मानन्द वावा वीतैग दनिक साँह आ एगठ दनिक पैछठ साँहमे अपन अनाम-वसिनाम कनैवठ। जगहपन असगने शोकाकुठ वैसठ छठ। दनिका पहिठ उप्पडाहमे जे दूटा नोटी जठपैक नूपमे प्येठ छठ, वस आणुक दनि ननकि ओतवे अहान भेटठ छैठेन। नतिथ एगानह वणेमे नहेनहिन आर तीग वणेमे नहेठ, जप्पन वय्याक पान्थवि शनीनकें असमसाग पुँह्यौठ गेठ। ओना, दनिक नानस पनविानमे नऽ युक्त छैठेन, मुदा तेहेन वेन ओ घटना भेट जे ओ नानस कएठ भोजन वनगनेमे पड़ठ छठ। नहेठ पछात्र प्येवाक इच्छा वृहन्मानन्द वावाकें जूनू भैठेन मुदा भोजन नोकवा-छे तोतेक दून-भूग ननक यानूकानसँ ऐ नूपे वेन छैठेन जे ननक इच्छा नगेमे धुनियि-अनियि जगि, मुदा मुहसँ नकिठैक साहसे ने होइना। साहसो केना होइना, एक दसि पनविानमे सगसँ उपन-उमेनो आ प्याढ़ियेमे-होइक नाते जँ वएह नऽ सहि सकता। तँ दोसऽ केना सहि सकता। मुदा सहवो तँ सहव छी, एक अन्न-पानिक सहव भेट, दोसऽ वाग-व्रियानक संग सुप्प-दुप्पक। तूमे पनविानक नूदन आ समाजक जगिआसु नूदनक घान वहाये नहठ छैठेन।

यौकीपन वैसठ वृहन्मानन्द वावा अपन वीतठ, वीतैग आ अवैवठ काठहिक संघ्या-वन्धन कऽ नहठ छठ, मुदा वागहे कुवागह नऽ जाइना। कुवागह ई जे वीतठ नअ घनटा शोके-शोक, दुप्पे-दुप्पमे वीतठ छैठेन आ अवैवठ वीतैग नाकि भोजनक आशा सेहे नहिये छैठेन। काठहिक एहेन कठिने समए पान कऽ सकव की नहि, से नगे-नग वृहन्मानन्द वावा व्रियान नहठ छठ। नगे ई जे नागिनिक साहित्यिक कान्यकनमे जवावदेहक नूपमे पान कनव छैठेन। जवावदेहि एहेन जे कही कान्यकनमे ने नैसिया जाल। एहेन नान नमिहैठे तँ कनहे मजगून याहि जे भोजनसँ शनीनकें भेटन, सहह हेना गेठ अछा।

जामागिप दौड़मे दुगू दसि वृहन्मानन्द वावाकें वाधा वाधति काइये नहठ छैठेन। तैपन नग कुद-कुद अपन संक्षेप दसि दौड़-दौड़ जाइना। जेकना वृहन्मानन्द वावा शनीनाग वुहटानिकऽ वहटानए याहै छठ, वएह छड़ियि-छड़ियि ननकें यानूनसँ वेन छैन नहैना।

पनविानमे ओहेन घटना भेट जइमे एकटा अयेठ वाठ-वोचक अन्न भेट। युक्त केनए भेट ई जँ पनविानक ठेक नहिगुमा छैन तँ आणुक गुमायोश गुमागिन केना नऽ सकैए। मुदा वावाक नगेमे इहे नयैत नहैना जे अपन ऐ वागकें नगे ऐ घटनाकें व्रियानवसँ नीक ई हए जे ननकाठ वागवनासकें पहिने असथानि कएठ जाल। जँ व्रियान-वनिनसक कनमे कोनो मानक व्रियान सोहमे आवाजाल आ यामेक मुँह छी, कही ओ व्रियान नगेमे छड़ैप कऽ मुँह होइना नकिठ गेठ, जप्पन तँ ओ आनो मानूप हएना! तँ नऽ व्रियानवे वेसी नीक।

मुदा उगठे छैन वावाक नगेमे उर्गठैठेन जे अनेको जगिआसु जगिआसा कनए जइ घटनाक छेठ आवा नहठ छैथ आ घटनाक नन सथठकें देपए ने पारि नहठ छैथ, जप्पन तँ ओ अये-छधि जगिआसा ने भेट। असमजसमे पड़ठ वृहन्मानन्द वावा नसिये ने कऽ पारि नहठ छठ जे की नीक हएना। आँपकि सोहक जे घटना अछि ओकना जेते नीक जकाँ अपन व्रियानि सकै छी, ओते वसयिएठमे थोड़ हएना। तूमे कौठुका काज आनो जठठि अछा। एहेनो तँ नऽ सकैए जे जहनि आर पनविानक घटना भेट जहनि काठहिसमाजमे नऽ सकैए, जप्पन तँ पनविानक व्रियानकें अगुयाएवो नीक नहिये हएना, तँ अपन व्रियानवे वेसी नीक।



तही वोय वनह्मानगद वावाकें समाजक सनोकानी वहनि, जगिकन घन वगछेमे छैन, पहुँचि। अगवास, वाड़ी-हाड़ी
पेन-पथान सेहो दुनू गोमेक एकठेगाम छैन। दनि-नागि पड़ोसीक रूपमे दुनू आर सगँ वन्यसँ संगे जगिगी जीवैत आवा
नह छैथ। ओना वनिदा यागिमास वनह्मानगद वावासँ जोड छथनि, मुदा दुनूक वोय वरह 'ने-टे' वग सम्बन्ध नहियेसँ मागे
वय्येसँ संगे आवा नह छैन, जे अप्पनो पोता-पोतीसँ ननठ घन नहिनो, ओहने छैन।

अपना संग वनिदा सुठिठक थानीमे दस-वाहटा जोटी आ वाटीमे ननकानी गेने, ई सोयि पहुँचि जे दगुका गानस
वनह्मानगदक पनविानमे कएछे नहिनो, ओकाकुठ पनविान नहने अप्पनो मागे नागियेमे गानस नहिये होन आ काहिये
कप्पन होन तेकनो डेकान नहिये अछि। सियान-येनन सहिये सकैए मुदा पनविानमे जे दूटा वुढ आ गीनटा छोट-छोट वय्या
अछि ओ केना सह सकत।

ओना वनह्मानगद वावा अपन कोठनीक केवाड अडका कऽ असगने वैसठ वय्यानि नह छ। तहिकाठ वनिदा केवाड
प्योठ कोठनीमे पहुँचि।

अवागि वनिदा पनोसठ थाड़ी आगू वढवैत वजि-

“जे दगिक दोग छठ से भेठ, यनिगा छोटह, प्या ठएह”

वनिदाक मुहसँ प्यसति वनह्मानगद वावा छुटैक-छुटैक कऽ कानए उगा-

“हमन वेठ केनए जेठ, हमन वेठ की भेठ!”

ओना वनिदा अनुमान केथि जे ‘वेठ’ पोताकें कहै छैथ।

वजि-

“कछि ने भेठ, जहनि आएठ नहनि जेठ। ई दुनयिाँक नीति छएि, सभकें होश आएठ अछि, आगुओ होश यथैत
नहना”

एक वन्य नअ मासक नोशनक पुनासागत पानमि कहुआ कऽ भेठ नागियेसँ यथि अथैत शीतहनी अपन वकिनाठ रूप
पकैड गेने छ।

गगिसुनका पहना सुनमशीठ पनविान नहने पनविानक सभ अपन-अपन काजमे उगियुठ छ। कयिओ अंगना-घनक
काजमे तँ कयिओ माठ-जाठक पाछा ओ वय्या-वेठ-जाडक सभ वसत पहिनने-मागे जागना-मौजा आ सुगी कपडासँ उऽ कऽ
उनी सूटीन, कोट, टोपी सभ कछि पहिनने-हाथमे एकटा गठिस गेने यापाकठक आगू जे पानकि प्याथि छै, तभे गठिसमे
पानिअि जेठ ओना जाड नहै कगिनभी, थाठ-पानिसँ ओर वय्याकें वशिष सगिह छेछेह। यंगठ वय्या तँ नजैतसँ ओहठ
होश छ। गठिस गेने जे आंगनसँ नकिठ, से दोसनो-तेसनो देपठका मुदा सभ दनि कोनो-ने-कोनो वसत गेने नकिठ
छठ, तँ कयिओ कए ओहूपन वशिष नजैत दश। पानिअि प्याथिमे जापन जेठ, ननसिक तहिकाठ ओ पछि कऽ प्याथिमे
यथि जेठ ओना, प्याथिओकें वहुन गहिन नहिये कहठ जा सकैए, मुदा एक-डेह हाथक वय्याक ठेठ तँ गहिनगन छेछेह तहूमे



जहनि वनस्थ जकाँ समए जहनि पानी सेहे छैथै। पनविानजान नहिती कियौ ओर वय्या दिसि नर नकठका सदिफिओ पुन-पुन कनिति नहै। छथि नकैक कोनो संको ने नहै। दगि-दगिक वनस्थ छैथि। कछिए काथे वय्या जाडसँ तेना आकान्ता गज गेठ जे पुनासागन गज गेठ! जपन वय्यापन गजै गेठ आ नक-हेन सुनू मेठ जपनो वनह्मानगद वावाक मन गवाही दशो नहै। जे मनसिक कियौ योना कज औगावै दुआने नपनिगे अछि। वय्याक माथे प्याथिसँ मुश्ठ वय्याकँ नकिओ आंगन आवा निपै। वजि-

“हमन नोशन!”

ओना नीको समैमे आ अथे समैमे तँ नसियति मनो-पति, नारयो-वहनि आ ददो-ददीक गजै न ओर वय्यापन नहि। छथ मुदा पाँय दगि पहिने वनह्मानगद वावाक पनविानमे एहेन दुपद घटना मेठ छैथे। जे पसैत-पसैत पनविान वय्यैना मुदा घटनाक एहेन वकिनाथ नूप छथ जे मने नहि, केतोको गोनेक शनीनोकेँ नीक जकाँ आकान्ता अपनो केनहि छथ। होशो अहनि छै जे पनविाने आकाँ समाजमे जँ कोनो मानूप घटना घटै तँ पनविानो आ पनविानजानकेँ सेहे हकहोनि दशो अछि। जसँ पनविानक अगेको जनुनियति काज सगपन सँ गजै न हटिये जाइ छथ तँ कछो जाइ छै जे ‘वपिना’ असगने नर अथै। एक संग अगेको अति अछि।

नोशन आ कृष्णा दुनू सहेद न। वनह्मानगद वावाक तेस नेटाक दुनू सगना कृष्णा जे, जे साढ़े नीन वनस्थ अछि आ नोशन छोट जे एक वनस्थ नथ मासक छथ। नोशनक मुँहमे उपन छह जोट दाँ आ नयियाँ यानि दाँ सेहे जगै गेठ छथ। दौड़ै यति छथ। वोथी तँ साश्च नर मेठ छैथे मुदा कछि शव्द साश्च जनुन नार जेठ छैथ। कपनो ‘वा’ वनह्मानगद वावाकँ कहै छैथे, तँ कपनो सपिआपन ‘ववा’ सेहे कहै छैथे।

वनह्मानगद वावा कृष्णाकँ सगहसँ ‘वेठ’ नाओ नपने छैथ। मास दगिसँ नोशन सेहे अपनाकँ वावाक वेठ वुहए उगठ छथ, तँ वावाक मुहसँ ‘वेठ’ नकिओ नोशन वाजि उँठ छथ-

“पै”

‘पै’ कहि दौड़ कज उगमे आवा हाथमे जे कोनो औजान वा प्या-पिबैवठ। वीस दैथे छथ ओ छीन उर छैथे। प्याथी वीसेटा नर छीनै छैथे, संग उगिवाड़ी-हाड़ीक काज दिसि सेहे वदि गज जाइ छैथे।

वय्या पेव वनह्मानगद वावाक मनमे अपन जनिगीक सात्थकता सेहे नयति नहै छैथे। जनिगीक सात्थकता ई जे एक समए मागे एक कृष्ण-पठ जँ एकसँ उपन अगेक कनियिक संग यथ। से वनह्मानगद वावाकँ ‘वेठ’ पेव होइ छैथे। कहथे जाइ छै जे उमनदिक मागे वुढ़-वुढ़ासक प्रथम काज मेठ वाठ-वोचक संग नहि कछि सपिआवा से गेटिये जाइ छैथे।

ओना वनह्मानगद वावा पेठ-पथानमे काज कनैवठ अपन हथियाएठ औजान-हंसुआ, पुनपी, टोगानी, कुड़है, हथौली, वेसठ, आड़ी श्याद जिवनोपयोगी औजान अपना-ठे तँ नपनहि छैथ, मुदा तँ वेठ-ठे नर नपने छैथ सेहे नहिये कहठ जा सकै। मोथियाएठ आ आकानोमे छोट अगेको औजान वेठ-ठे सेहे नपने छैथ। वेठ यथिगेठ मुदा ओ औजान जे वेठक छथ, ओ तँ छैथे ओना कछि एहो तँ ऐछे जे वेठ अपन औजान वावाक हाथमे यड़वै।



हुनकर हाथक छीन छै छैना मुदा ओहना वाठ-वोचसँ जाँ काज वायति होइक सम्भावना हए, नयनो तँ दूटा उपाय
अछए, एकटा जो ओइ हाथियासँ नगिन काज यड़ा थका दए वा मने खुसछा कऽ वहका दए। वनह्मागन्ध वावा सए कहै
छछ। नयने पोना हाथक औजान छीन छै छैना क' आड़पिन वैस गमछामे वाग्हठ पागक पोटीनो प्योठि डकै छछ-

“के पाग प्याए?”

जहना घन-पनविनसँ हटछी गीत-गाए वा अन्ध कोनो अवाज वाठ-वोच जाँ सुनैए तँ अपनो ओहि अवाजक अनुकाम
करए छैए, जहना वेठवो ‘पाग’ सुनति वाजति उँ छछ-

“हम!”

वेठवाकें गाजी होइतो वावा वजै छछ-

“जो सज पाग प्याए ओ सज एए औना”

‘एए औना’ सुनति वेठवा हाथक छीनछ हाथिया ओतै नयनो डकै आवाजक वीसकें उगटवए-पुनटवए छैछ
जोना-जोना दैपैत तेना-तेना करवो करैत तँए वावा पहिनि पागक पाग आड़एक-टुकड़ी दऽ दऽ छैछयनि। नयन जगदा वेन
अवै छछ नयन मुग्गा छछ जगदाक सीसी मुँहमे हाँड़ि कहै छैछयनि-

“आव यै यै यै”

‘यै यै यै’ सुनति वेठवा अपन औजान-पुनपी-पकैड़ आड़पिन प्यायि पुनए छै छछ।

वनह्मागन्ध वावा यौकी पन वैसठ तेतो जोड़सँ शुद्धकछा जो आँजग तक कागवक अवाज पहुँच जेछ। ओसा पन वैसठ
महिला समुदाय, जो नगि दिक कागवक वनिम नेगह छैछि आ वेठवेक नयन कहै छैछि। वाठ-वोच वेठवा, अयेन वेठवा, ओ
केना जगिगीक मन्मकें बुझै ओ केना बुझै जो आगि-पागि जिवन दऽतो अछि आ उरतो अछि ओ केना बुझै जो जहना वाठ-
वोच-छे शीतलहनीक शीताए पागि जगमाना अछि जहना तँ आगियि अछि किनि।

वावाक कागवक अवाज सुनि महिषा समूहसँ एक वजि-

“नगि दिक बुझै करति नहि जेछ!”

दोस वजि-

“कहुन जो पोते छछ अपनो यछि जेछ! अहना सज दिससँ होइए एछैए मेछा-डैछामे जहना वाठ-वोच प्येछिना कोनैए आ
प्येछा-प्येछा नस्रोमे आड़ि छैए, सए बुझुना”

मुदा वीयमे वैसठ, जो कषमे कछि पहिनि मुँह वन केने छैछि, ओ शुद्धक उँछि-



“आव, वावाक कागान-पेन के छगिगै!”

वेठ सन्निश्च वृहन्मानगन्धे वावाक नर छैथैग। पन्निगनक सवहक छै।

माश्क ‘नोशन’, वापक ‘ठठ्ठा’, दादीक ‘वौआ’, वड़की माश्क ‘वौका’ श्यादा सवहक अपन-अपन छै। सग छै।
गह, अपनो अछा माठक घनमे दादीक वौआ ऐ-ऐ कनै। गोवन-गोत बुढ़िया माँकें देपैवो अछा, वसिना ओर दनि नर दनि
दुगियाँकें वसैन अपने ब्रिदा हेग।

सुन्तो तँ सुन्ति छी, ओ तँ कयि अपने जीना जगिगी धनिकि ने जान्ति दऽ सकैए हँ एहनो सुन्ति तँ हेरो अछा
जे महाजानक अभिमन्यु जाँ वाठ-वोथेक रूपमे डाढ़ अछा। हमनो वेठक मृत्यु ओर पन्निगनमि मेठ नर पन्निगनमि
पन्निगन-समाजक वीथ वेवस्थाक ठठ्ठा श्रुति छै। पोने दू वृष्यक वेठवा कए माश्क दुप बुढ़ै। जे पन्निगनमे नानीक जगिगी
अपन केरो शुभकम जाँ ओरिहै अछा। मुदा वेठवो तँ वेठवा छी ओ तँ माएकें कहवे कन कनि जे माए हम अयेन छै।
जीवन-माम नर बुढ़ै, तँ सयेन हे जे नवसि एहन नर होउ।

वसिना वृहन्मानगन्धे वावाकें देप वनिदा वज्जि-

“पेठैना वनिआए छै आ पेठैने जाँ यठिगे, नर एते दुप-पोडा केठासँ की हेनह?”

यानिमास जेठ वनिगक वाग सुनि वृहन्मानगन्धे वावा वज्जि-

“हमन वेठवा पेठैना नर छै, ओ तँ दुगियाँकें पेठक पेठाडी छै।”

तैवीय वृहन्मानगन्धे वावाक पन्नी कृष्णाकें हाथ पकड़ने पहुँचि। कृष्णाक मनमे अपन पुनस्रन छै आ कशिनीक
मनमे अपन वियान छै। तैवीय वनिदा ननकानी-नोटी सगठ थानी कशिनी दसि वढ़ै। कशिनी हाथसँ पकड़ छै। पकड़ति
वृहन्मानगन्धे वावा वज्जि-

“पहनि वाठ-वोथकें दियौ।”

निय्यामे थानी नय कशिनी एकटा नोटी आ ननकानी वेठवा दसि वढ़ै। ओना देप्पा-देप्पी वेठवो घटनाक पछाशा
अन नर पेने छै, मागे जान-नोटी नै पेने छै। मुदा वसिना आ दोकानक यठपटीआ वनिग्यास प्या मनकें थोत तँ नयनह
छै। हाथमे नोटी छसँ पहनि वेठवा वज्जि-

“वावा, अपन नोशन वौआ हंदापुन डाकूटन ऐगम जेठ अछा कनि?”

कृष्णाक वाग सुनि वृहन्मानगन्धे वावाक छाती दहै जेठै। कोनो अवोध वय्याक पुनस्रनकें काटना? ओहो तँ वय्याक
ओ दृश्य-पतिगक हाथमे हाँप वय्या मोटन सारकिसँ डाकूटन ऐगम जेठ छै-देप्पे नर, तेकन पछाशा यिया-
पुनाक संग पेठेमे ठाँजि छै।

वृहन्मानगन्धे वावाकें मनमे उठै- अपन संग वय्योकें दुप-सगनाप देव नीक नर, वज्जि-



“हैं, नोशन वौआ हंहाऽपुन डाकूटन ऐगम गेअ अछा प्यायनि वौआ डुमगिअ छेछे कनि!”

अपन पुनसूक उगाऽन पेव वडका वेअवा भागे कृष्णा हाथमे नोटी अऽ प्याए अगअ कृष्णाकें प्याश देप कसिनी
वनिदा वहनिाँ अपटैन वजि-

“घनक गाऽनगन गऽ अहि कनवै नप्यन औन ओक युप नहना अहाँ मग थीन कूना”

थीन होशे वनहमानगऽ वावाक मगमे उडैअ- सुगगा उडगिअ आव केकना पाकअ अगम आ वैनक हाड पनहक पाकअ
नठिकोन देव!

○

शवऽ सम्प्राः १८४४, तिथिः ६ जगवनी २०१७

वृथ डे

थैग मनगासन होशे वैशाप्यक आगमन गऽ गेअ ओगा, जहनिा मासक जगम मेगे मास मगतिा अछा आ जगैमगो
अछा, नहनिा ने मौसमोक मासपन होशए

मगिसुनका समय पुनप्यन मौसम नहने सूत्रक कनिमिमे पुनप्यनगा आविए गेअ अछा यौक-यौनाहाक दोकान-दौनी जे
जाडक मासमे सनिसगिअ अवेन कऽ पुजै छअ ओ जेगा-जेगा गनमी यवैग गेअ जेगा-जेगा सवेन पुजए अगअ, तँए आव याना
वजे सवेनगनेसँ यौकक दोकान पुजए अगैए ओगा, दोकानो-दौनीक अपन-अपन हसिाव अछा कछि एहेन अछा जेकन गहिाँ
यानिवजे मोनेसँ पहुँचए अगै छै आ कछि एहो अछा जे आऽ वजेक पछाश पुजैए आ कछि एहो तँ ऐछे जे दस वजेक
पछाश पुजैए

आगे जाकाँ जिवन काका सेहे यानिवजे मोने यौकपन हूँ-साँय समायागो सुनेछे आ जेगी-पथानीक गपो-सप्प कनैछे
पहुँचये कनै छैथ। मौसमो अगुकूछे नहै छैना मौसम अगुकूछे ई जे जहनिा वानह मासक साअमे गीगटा मौसम नहने छहटा गीग
अछा, नहनिा ने दनि-गाकि वीय सेहे हूँ। मौसम अछा तैसंग हूँ। समनस सेहे अछाए। एकटा मेअ गाकि-दनिाक
सीमागपन ‘मोनक’ आ दोसन मेअ दनि-गाकि सीमागपन ‘साँहक’। ओगा, हूँ मौसमक अपन-अपन गुम सेहे छहै।
जहनिा पुनवा हवा देहक अपनमे ँढा अगैए आ देहक मोनग पौनप्रिबैए नहनिा ने पछवा हवा अपनसँ पौनप्रिबैए आ मोनगसँ ँढ
वगवैए। प्याए ई तँ मेअ हवाक वाग, साँह-मोनक अपन हसिाव अछा जे हूँ हूँ गागि यवैए। भागे ई जे जप्यन हवा यवैए
नहना, जप्यन एक नंगक मेअ आ जप्यन हवा ँढ नहना जप्यन दोसन नंगक मेअ मुदा से गहि, एक तँ सुनूक समय जे
अंगेजोकीक वीगैग मान्य आ यवैए अपनीअक मेअ, आ वसन्त गीगुक अयवेसू वसन्त मेअ



यौक-यौनाहक हवा-पाणि पीव जीवण काका घनपन एवा। ओना माठ-जाठकें सेवेने घनसँ नकिाँ वाहनक नादमि
वाग्हिप्यार-पीवैठे सानी-कुट्टी उगाइए गेठ नहैथ, जे प्या कऽ माठे-जाठ अनामसँ वैस गेठ छथ।

घनपन अवाति जीवण काका पहिने माठ-जाठ देखैथ। नीनू माठकें वैसठ पौण कनैए देख योटे छुभकिऽ दनवज्जापन
होइ आंगन गेठ। तँ देखैथ जे दखनिवनिपि ओसापन मन मानि पुनोहु वैसठ छैथि आ पछवनिपि ओसापन पत्नी दुनू पोती
आ दूटा आन अंगनाक स्त्रीगामक संग युपयाप वैसठ छैथ आ मने-मन कछि वीयानि नहथ छैथ।

दुनू ओसापन गजैए प्यानि जीवण काका नागनमे पड़ गेठ। जे कएि सज एग। ऽकुआए वैसठ छैथ! अप्पन तँ मोनक
समए छी, दनिक सुनूआनक समए, जे केतोको काण कनैक समए छी, नप्पन कएि सज मन मानि वैसठ छैथ? जँ मोनेमे
ओकक काण हेना जाए, मागे नइ नहै नप्पन ननिदिनि पाणि उँगोनाइ छोड़ि ओ कनै कौ?

आंगन-दनवज्जाक वीय मुँहथैपन गढ मेठ जीवण काका दखनिवनिपि ओसापन वैसठ पुनोहुपन गजैए देखैथ तँ
देखैथ जे पुनोहुक आँपसँ मोनक वून छटिक नहथ छैथ। मोनक वून देख मने-मन सोयए उगावा जे कछि कामस जतून अछी
मुदा जावे ओ कछि वज्जा नहि, नावे वुहवो केना कनव?

पत्नी दसि गजैए दैए जीवण काका वज्जा-

“कएि सज हड़गाठ केने छी?”

पत्नी तँ ‘हँ-हँ’ कछि ने वज्जा छैथ। मुदा मनमनिस पुनोहुक मुहसँ नकिाँ-

“नोशनक आइ वन्य डे।”

‘नोशनक वन्य डे’ सुनि जीवण कक्काक मनमे जोनक चक्का उगावैथ। चक्काक कामस मेथैथ जे नीन मास पूनवे
नोशन दुनयिँ छोड़ि युक्त छथ। मागे कठ उगाक प्यायमि जइमे कठक पाणि जमा होइ अछी, ओही प्यायमि प्यसि नोशन जाडे
कहुआ कऽ प्यामागन कऽ युक्त छथ। शनीनक तँ अग्न नऽ गेठै मुदा जनिगीक अग्न केना मानठ जाए। कछिओ दनि तँ
घनवास केनहि अछी।

ओना, जहनि आन पनविनमे एक-एक वेकतीकें अगेको नाओसँ पुकातठ जाइ छै नहनि। जीवणो कक्काक पनविनमे
छैनेह। जीवण काकाकें सेहे कछि गोने ‘जीवण काका’, तँ कछि जाने ‘मनू वावा’ सेहे कहति छैथ नहनि। नोशनोकेँ
कयि ‘नोशन’ तँ कयि ‘वेठ’ तँ कयि ‘वेठवा’ तँ कयि ‘छोटका वौआ’ सेहे कहति अछी।

पहठि वन्य पुनवापन नोशनक वन्य डे युमयामसँ पनविनमे मनौठ गेठ छथ, आइ दोसऽ साठ छी। ऐ वियेमे नोशन
पौने दू वन्यक आयु पुनवैए दुनयिँ छोड़ि दैठका जहनि गाम समाजक वुढ़-पुनाग जीवणिकें मन्त्रोकेँ^[१] आ मन्त्रोकेँ
मन्त्रोकेँ^[२] वुहवो कनै छैथ आ वज्जा कनै छैथ नहनि। जीवण काका सेहे पुनोहु दसि नकैए वज्जा-



“नोशन सूत्राङ्क सुप्प कयैए, अपना सग नृकमे छी, नप्पन अनेने जे घन-पनविनाक काण छोड़िसिग यगिनाति मेठ वैसठ छी से अनेने गो दगिक जे भावी छठ ओ मेठ। नरुं अनेने सोग-पीड़ा केने की हए। जे धानए से केथिए जागिकऽ वा अगजागमे यूक मेठ हए, से ओ माशु कए।”

ओना वपौक कृममे जीवण काका वाजिाँ गेठ। मुदा अपनो मन मोलने-मोलन कागए-कठपए ठाँवैना कागए-कठपए ई ठाँवैना जे नोशन तँ येतगशीठ अछिनिह, नप्पन ओकन वुध केना कृपिशीठ हेतऽ आ व्रियान केना जे पनविनामे अहनि कनी कम-वेसी होशो छश। तूमे नंग-वनिगक ठोक सेहो नहति अछि, तँए टुटी-छुटी कनी हेवे कयैए।

नंग-वनिगक माने मेठ जे एक वंशक वा एक कुष्ठ-पगदानक नहने ठोकक शरीरक नंग-नूप, उम्वार-यौनार कएिने एक नंग हौउ, मुदा वुध-व्रियान केना एक हए। ओ तँ मोलन-वाहन दुनूक वीयक शक्ताछी, ओ तँ उमेनोक हिसावे आ गान्शिठोक हिसावे कम-वेसी हेवे कए।

जीवण कक्काक मन डमैक गेठैना डमैक ई गेठैना जे नोशन तँ ने आव ए धनीपन आविमाइक दूध पीवत आ ने हमने संगे हँसुआ-पुनपी नेने वाड़ी-हाड़ीमे पसैत-पड़ैत, कनैत-प्यौत जाए, ओ तँ आव नर नहए, ई तँ सभकेँ वुहए पड़ैत कनि?

तैसंग ईहे ने वुहनी जे नोशन देहसँ हटिगैठ, मुदा देही वा शरीरसँ थोड़े हटए ओ आत्मा-स्वरूप येतग शक्ताछी, पौने दू वन्यक नोशनक ओ शक्ताँ तँ अपन आत्म-स्वरूपमे मठिगैठ अछि। नरसँ पौने दू वन्य, एककैस मास नऽ गेठ। एककैस मास यौनासी सप्राह नऽ गेठ आ यौनासी सप्राह, सात गुमे वेसी दगि नऽ गेठ, श्र्यादि-श्र्यादिमाइ गेठ अछिनिह, तँए स्मृति सिनेस नर देत सेहो तँ नहयिँ कहए जा सकैए।

अगायास जीवण कक्काक गनिएठ आँपकि वूण एक-दोसने सटि-सटि टघान वनगिगाठपन होश टघैत नहवे कयैत, नहि वीय पुनोहओ आ पन्गयिँक आँपयिद्वैत, आँपयिद्वति व्रियानक संगाम हुअ ठाँवैना। तौवीय साउस-सुदामा-संगाम होशो सामंजस कयैत पुनोहकेँ कहएयनि-

“नोशन की तोयेटा छेठह जे हेयेठह आ तोयेटा दुप्प होइ छह, हमन पोता नर हेनाएठ, वुड़हाक ‘वेठ’ नर हेयेठह! सवहक हेनाएठ! तँए आव सग कयिँ अपन-अपन प्यैठह^[३] नेने अपन-अपन जनिगीमे नर ठावह तँ काठ्हि-दगि केना यवतह।”

पन्गीक व्रियान सुगिजीवण कक्काक मन पघवि-पघवि कऽ गीठ हुअ ठाँवैना वेठवाक नंग-नंगठ नंग सवहक मनमे नायए ठाँवैना। अंगनाक नूप वदएठ। मन-यति दाविसिग अपन-अपन दगियन्त्रा दसि वदथी।

आंगसँ दनवजापन अवैत-अवैत जीवण कक्काक मन घुमए ठाँवैना। अपन घुमैत मन देप्प जीवण काका सोयथैना जे या तँ ओछाइनपन पड़िनिह या नर तँ वैसयि जाइ कएि तँ नप्पन अपनो मन वेसमहान नऽ जाए। नप्पन तँ आनो वेसी गोकसाग हए।



दनवज्जाक ओसाक दछनिबन्याि यौकीपन वैसो जीवन कक्काक मन पुनोहुक मुहसँ गकिथ शव्द- 'वन्थ डे' पन गैथेन। कहाँसँ कहतिथ जे 'जन्म साध' छी, जन्म दनि तँ संभव नहि अछि। तानीप वा तथिकिँ दनिक मठिन नर होए। वा 'साध जीनह' छी, यएह जीनह ने गोइया कऽ जाँड वगैए, जेकना 'वन्थजाँड' सेहो कहै छै।

मुदा ठाठे जीवन कक्काक मन पाछू घुमैथेन। घुमति देखैथेन जे पनविन-पनविनक ओक दीविक संग आव मोवाइमे वन्थ डे मनवैत, थोपड़ी वजा-वजा वन्थ डे जवैत देखैए-सुनैए। कोन माइक इच्छा नर होएत जे हमना कोप्या गृहनिहुअए। जाँ वन 'वन्थ डे'क पुनसून अछि, ई शव्द छी, वेसी-सँ-वेसी पाँतजिऽ सकैए, मुदा गाथा तँ गाथा छी, गंगा सङ्ग अछि, जइमे नीक-अथवा सवहक समावेश होइत अछि। तँ पुनोहुक वात जीवन काकाकँ अनूयजिन नहि नूयजिन ठाठेन।

ओना तीनू गोटे-माणे जीवन काका, जीवन कक्काक पत्नी सुदामा आ पुनोहु स्यामा-नीन दसि गजैत वढैथेन, मुदा नोशनक 'वन्थ डे' कनिको मनसँ सोइहनी नर हटैथेन। हटवो केना कनिनि। जाहिना जीवन कक्काक मनमे जाहिना सवहक नोशन वसैथे छै।

मानसा-घनमे पएन दइते स्यामा युधकिँ गोड़ ठाँत वज्जि-

‘हे युधकि, अही छी आ हमही छी जे ठाठक पहिठि ‘वन्थ डे’क दनि केना जीवैत छहछ कजैत नहवै। पहिठि साठक ‘वन्थ डे’मे ईवैत केना कप याह आथि-अन्यागाक सेवामे जा युक्त नहि, मुदा आइ।”

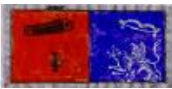
अवैत-अवैत व्रियानक क्षेत्नमे आव स्यामा डमैक गेथि। डमैकते डकुना गेथि। डकुनाइते जेना जनिगीमे जाठ जंग छुट-छुटि जाठेन। जाति मनमे उपकठेन- यएह छी जनिगी आ जनिगीक ठीठ। सज जगै छी जे जे देह नूपमे जन्म ठेठक ओ अन्त कने केना। मुदा देह तँ देहटा नर छी, जाँ सोइहअना ओकना माटयिक मानिठेव सेहो तँ उयति नहयिँ हए। यठवो-अनिव आ सोयवो- व्रियानव दसि ने देखैए पड़त।

एकाएक स्यामाक गजैत दौडैत नोशनकँ दूनु हाथे पकैड, कोनामे उठा, वीय आँजाने गढ, अपन छातीसँ ठाँगेपन पड़ैथेन। जप्पन नोशन अपन पहिठि साठ जनिह पैने मौजा-ज्वासाँ ठऽ कऽ देहमे सन्ट-पेन्ट, माथपन टोपी जा। मनौने नहए, ओइ संग पनविनो आ कुटुमो-समाज तँ ननिदनि नोशेक वनिदावठि जवैत नहै, मुदा अपन दोसन साठ जनिह नोशन कहाँ देखै पौठक! कहाँ हमही आकाँइ युधकि छहछ नहै अछि।

मन-यतिन समेट स्यामा जीवनक दुप्प-यन्थामे जागिथि। मनमे उठैथेन- पौने दू वन्थक वेटा दुनयिँ छोड़ठक, की ओकना मनमे हमहूँ-सज वसठ हेवइ? नर! हमना सज जाँ ओ कहाँ नहै? ने ओ कछि वुहपिबैत हए आ ने यनिह पवैत हए। ने ओकना वुहैक आ ने यनिहैक कछि शेष हेवइ ओकन सोयै-व्रियानैक जाहे मेटा जेठ, ओ वसैत जेठ हमना सजकँ!

स्यामाक मन थनथनए जाठेन। पानिजाँ थनथनइत मनकँ थिन केथि। मन थिन होइते मुहसँ वकान सुटैथेन-

“कोप्यकि सन्तान छै। अपना उकति जे जाठए से तँ कने केथि। आव वेसी-सँ-वेसी एवे ने हए जे अपन दठिक डायनीमे, सन्तानक संप्रदाये ठपिकिऽ नाप्पव जाँ से नर नाप्पव तँ पुनसव पीडाक वेदना, मानवक जे वशिष्ठिना छी ओ हेना जाएत। जइसँ नानिवक सक्रानि कमी औता।”



माथक घनक थैने सुदामा काकी गोवन उडैवे वैसवे केवी की आंगनसँ पछुअवैत नोशनक स्मृति रूप आगूमे आवा गोवनकेँ देखवैत कहैकैग-

“ई-ई-ई!”

सुदामा दादी बुढ़ी गेथी जे नागहटा वय्या गोवन उडवए कहै नहए अछि सुदामा काकीक मनमे डहैक एतेन जे की गोवनकेँ घृणाक गणनयि देया नहए अछि आकि कृपया स्वरूप?

मुदा सुदामा काकीक सग दगिक जे काजक अगियास छैग, ओर अगुकूठ वगैरा मनसँ जपगौ हाथ कृपयाशीठ गऽ गेथैग।

जपने हाथ काजकेँ पकैऽ कजयिवैत जगिगीकेँ कजयिवए ठगैत अछि जपने जगिगी कजयिअन कीर्तन दिसि वढवे कजैए, सुदामा काकीक हाथ वढवैग आगू वढति मनमे उपकैग- ई तँ दुनयिँक छी छी, जेते दगिक प्यागनि आ जेते नूनकि कजैक गान ठऽ कऽ नोशन आएठ ओ कजैत गेथी मनमे उठति सुदामाक पुनशागन मन उदगिन मनकेँ शागन कजैत नोकैत कहैकैग-

“कनोड़ो जेगनसँ साजठ अकासमे साइयो जगमे छैत आ टुट-टुट पिसवो कजैत, तँए कअकासक शोभा-सुन्दरमे कमी होइए आकि विषीन होइए, नहि! ओ तँ नहवे कजैए अपनो पनविन ऐछे, जेगने जकाँ ने वढवो कजैए आ घटवो कजैए मुदा जौगम वढती-घटतीक समनूप नहए जौगम घटवानी-वढवानी हवे किए कनाना”

पुनशागन यतिन होइते सुदामा काकीक मन सहमैग। सहमैग ई जे येतने-अयेतनेक वीय ने दुनयिँ यथै नहए अछि जपन अहि दुनयिँमे अपनो छी जपन ओहिक देया-देया ने अपनो यथै पड़त। अपन जगिगीक तँ ग्रह ने छेया-जोया हए जे जऽ दगि यनीपन पए देथी जऽ दगिक पनविन की छए, समाज की छए आ आर की अछि अहि वीय ने कम-वेसी अछि, जऽमे ठेक अपन हानि-जोत बुढ़ैए अगेने मनकेँ बौअवै छी...

मुदा तैवीय पहिठ गोवनक योग सुदामा उठ नेने छेथी आ दोसरा योग दसि हिया कऽ देय नहए छेथी, जपने बुढ़ी पड़वैत जे ऐसँ नमहन अछि उठि कऽ गढ होइते मनमे उठैग- नोशनो तँ अपने अमठानीमे आएछ माने ई जे अपने जोगा-जगिगीमे एवो कएठ आ जेवो कएठ केना कोनो दादी अपन पोताकेँ वसैत जाएत? नोशनक दादी हमहि ने छए, पोता हमने ने छी, की मनमे जे जपनी वधिया दैथैग ओइमे एतवो जगह प्याथी नै अछि जे अपना नोशनकेँ अपनो मनमे छिपि जायव? पौने दू वन्यक नोशन पौने दू वन्य जहनि सवहक संग संगी वगसंगवे जकाँ नहए नहनि ने संगवे जकाँ यथवो कनाना माथक घन आवा नोशन जहनि गोवन देखवै छए, नाइ-पुट्टा देखवै छए, धून जग वैस आगिया तपै छए, संगे-संग जेवो कजै छए नहनि ने मन-मनदमिमे वास कजैत जाथैत वसैत नहए जाथैत वसै छी।

गोवन समेट कऽ उठ माथक घनसँ सुदामा काकी नकिछी तँ यापाकठक यवुतनापन गढ स्थापनापन गजैत पड़वैग गजैत पड़ति आँप उठ-उठ पुतोहु दसि देयए जगिगी तँ मन कहैकैग जे नोशन तँ हमन पोता भेठ, असठ तँ कोयकि नान जगिक छेथैग हुनका मनमे की वसैत नहए छैग। जठ सागनसँ उठ व्राधु जठ वन्या कजैत आकि काठ सागनक कानी? मुदा



तैकाथ श्यामाक गणै नोशनक ओ नूप देय नह छैनेन ओ दादीक आगू-आगू प्पेनक प्पायमि एग पुर्य देयवै छैनेन ओना आगू-आगू नोशनकें वढ़ने सुदामा दादीक मान वढ़ति छैनेन मुदा तैयो नोशनकें ऐदुआने अगुएने यै छैने ओ वाठ-वोथ अछि, अपन हाथ-पल अस्थिति नर मोठ छै, जँ अपने अपन मान कमवै द्दुआने पोताकें पछुअवैत यठव, सेहो तँ नीक नहियँ हएत। एक तँ जपने ओकना पाछू कनवै जपने ओ कानन, कएिक तँ आगू केनए जाएव से ओकना वुहठे नर छै, जँ देयवो-वुहठ हेतै तँ यंग मन उयैग जेठ हेनर तैसंग ईहे तँ ऐछे ओ अपनो आँपि (नणैत) अपने आगू ने देयत, ओ पाछू नह तोकना केना देयत। तोकना ऐपैक तँ उपाय यएह ने हएत ओ ओकना आँपिक आगू अपन आँपि नायव।

अपन वेथकें श्यामा सुदामा दादीपन थोपैत वज्जि-

“आव ने नोशन अछि आ ने नोशनक दुनयिँ। आव के वुढ़िया दादीक हाथक आँगुन पकैऽ पाछूओ-पाछू यठत आ आगूओ-आगू देयवैत यठत।”

पुनहुक वाग सुनि सुदामा काकी डमैक जेथी। डमैक ई जेथी ओ जँ पुनहुकें कछि कहवैत तँ ओ अनेने अपन दैनंदिनक कृपिया नोकि सभोहमे पड़िजेत, नरसँ नीक ओ कछि वज्जि ने कनव।

अही अगदगिमे सुदामा काकीक मन पड़ठ छैनेन। तही काठ जीवत काका दनवज्जिआसँ ई सोयि उठि कऽ कऽ दसि वढ़ठ ओ जहनि। अपन मन वेठवाक स्मृतिमि वौड़ नहठ अछि। नरसँ कोनो काजमे नज्जि ने सनहिया नहठ अछि, तहनि तँ ने पत्नियौ आ पुनहुओकें हेनर छैत।

मानस घनसँ आगू वढ़ति जीवत काका देयवैत ओ गोवनक पथिया माथपन नेने पत्नी, प्पेनमे पुनठ गोवनक प्पायि एग डमकठ माथपन मानी नेने गढ़ छैत। तहनि पुनहुओ कठक हेनठठि पकड़ने सासुक उगतनक आशा देय नहठ छैत।

पत्नियौ आ पुनहुओकें देय जीवत कक्काक मन मानी जेठ छैनेन ओ दूगू गोने अपन-अपन जीवत कृपियामे एग जेठ छैत। मुदा अपन मनक स्मृतिमि जीवत कृपिया दसि वढ़ए नहठैत। जंग-जंगक प्रसंग मनमे वन्याक वुठवुठ जकाँ उठैत आ एगठे शुट-शुट व्रिथिन हेनर जाइत। मुदा वन्याक तँ कछि वुठवुठ एहनो हेनर अछि। ओ एगठे नहठ शुट पानकि टघानक संग कछि दूत याना पकैऽ संग यनिया-यनिया वढ़ति अछि ओना, छी तँ पानियैक वुठवुठ जइमे स्थायित्व नहियँ छै मुदा तैयो अपन जनिगी वंयवैत कछि दूत यनितँ वहति अछि।

अगाप्रास जीवत कक्काक मन पत्नियानसँ सन-समाजक ओर असनिवाएपन आवि अटैक जेठैत ओ नोशनकें आशीष नूपमे दैत देयने- सुनने छैत। ओ व्रियान शुट जीवत कक्काक मुहसँ नकिठैत-

“कहाँ नोशन दीर्घजीवी नऽ सकठ! कहाँ ओ अपन नवसिक नवतिव्य देय सकठ!”

ओना जीवत कक्काक मुहसँ नकिठैत तँ जेठैत मुदा एगठे प्रसागत मन सागत कनैत कहठकैत-

“ई तँ दुनयिँक प्पेठ छी ओ सन अगठि आशा देय जनिगीकें कृपियाशीठ वनवैत।”

23



२

श्री गणेश प्रसाद माझड नयति 'सगैया पोपै' छु कथा संग्रहक लेखन संस्कृतसँ १३ गोटा कथा

श्रुति

कोआ डकैसँ पहिने केतौ-केतौ गाछपर पौनूकीक वोठ छुटै क'नछुनी वावाक नीन टुटैना पहिने अन्धयेन अवस्थामे कछु वना जाइत पहिने मुहसँ गकिछैना-

“आइ श्रुआ छी। नागिनिकि हँसैत यागकें सुनूजक ठाठि अगिनाकिऽ आवायुके अछा केनेक सुन्दर नागि दनिक संग मठिनिह अछा जे जीवए से भेए स्याउ।”

वपौन-वपौन नछुनी वावाक येतना येत जेठैना येतने मन दोहौठकै-

“जे जीवए से भेए स्याउ।”

मुदा जीवति-मनुष्यक वीथ एहेन पट्टा-पट्टी अछा जे के मन आ के जीवए से वठिगाएव कछि अछा कियो जीवति-मनुष्य वुहवे ने कएत, तँ कियो वुहति मानवे ने कएत। कियो तँ वुहवो कएत तँ कोने हटौने नैह। शिवजीक सीमा पयिब कछि अछा।

पौह छुटति पहिने सुनूजक आगमन हुअ छौत पहिने नछुनी वावाक अठिसाए मन जनिगी दसि गपौन उठैठकैना।

पहिने कोनो ब्रह्मास्थीक पहिने कछि कोनो प्रसंगमे अँटैक जाइत पहिने नछुनी वावाक मन अँटैक जेठैना। ओछाइनपर पड़ै-पड़ै कड़ु छैनैना। मनमे उठैना, अनाइयो-बुनाइयो कोदनासँ परती पेट नामि छै। कहँ ओकना ह। जाँ छुनिसिपिए पड़ै छै। मुदा वनि छुनिये तँ कोदनायो ने पाड़ै जा सकै।

अँटकै मनमे छैन उठैना- कछि छुनिये कऽ नऽ जाइत, कछि हाथ पकैऽ सपिँवो जाइत आ कछि नौड़-नौड़ कऽ सपिए। नछुनी वावा छमकै। पुनः मनमे एठैना- पहिने पानि माटकि अपन छछिछ घाना वनि आगू वढैत पहिने तँ सुनूजक कनिमि छछिछैत पूव-सँ-पयछिम यवै। अँटकैत कहँ अछि? हँ अँटकै! प्यायमि पानि अँटकै, नामि पेटक गोठमे सुनूजक कनिमि अँटकै। मनमे संयाग जेठैना। दनिक संगुन उयाड़ै छै। श्रुआक दनि छी। श्रुआक ब्रह्म सेहो छी। आइ नागि येतक आगमन सेहो हए। मन मधुएठैना। पावैक दनि छी। वसन्ती पावैना पुआ-मधुपुआ प्याए, गंग-अवीन भेएव, हेविक संग वनिहा वसन्त, ठोठ-उन्हाक संग जेवो कनव आ गयवो कनव। मुदा मन पसीज जेठैना। पसीज ई जेठैना जे- ‘एक दनिक गोठे की आ एक दनिक नागे की’



नहुनी वावाक डमकठ मग पाछू वढैछै। वसन्तक मध्य, हेछी पावैग। माघक श्रान्तिया-पंथमी हेछीसँ एक मास वीस दनि पून्व वसन्तक जन्म भेछ। मुदा यै-वैशाखक वसन्त मानगे तँ पून्व पक्षे हे। जाश अछी तँ मध्य मानव तैयो पयास-साईकि हूनी वनी जाश अछी।

ओहनाए मग मुडैछ कऽ मुडैछ गेछैग। मगे दस वन्यसँ हेछी मगाएवे छोड़ि दिने छी। ७५ दऽ कऽ भोजने-टा शेष वँचैए सेहे दनिक श्रु छी। मुदा श्रु तँ अनेक नरक होइए- मडि होइए, पट्टो होइए आ पट्ट-मधुन सेहे होइए। तीनू संगो नहैए आ अठगो-अठगो नहैए। जाम्नाली पुनकामक भोजनमे तीनूक अपन-अपन महान छश भोजनमे जाए अया। अपन वसिष महान वनीगे अछी, वरह असगनमे दाँतकें तेना कोनयि का। कऽ दऽ छै जे का। कनैसँ हगछनि कनए छौए। मगकें धुमति उपकछै- वसन्तक आगमनक दनि। आइ सनस्वती पूजा सेहे छी। आइ हवाह गृहस्तक हन पनीपन गढ कन। गढे गै कन, अढ़ार मोड़ धुमवो कन। अढ़ार मोड़क वोइगो नहनि। सभ पनीगी प्येवो कन आ जेते यागसँ हनक नास डुमौ तेते छैयो जाए। पसानी नाथीक आगमि याग-मनूआ ठावा छोड़ि साँठक समए गुन। मुदा सेहे होइ कहाँ छश? हेवो केना कनै, गाए-महिसाकि मास एककैस-वाइस दनिक होइ छै आ मनुष्यक मऽ जाइ छै तीस दनिक। जाह कहुनू संगो नहैए संगे उक्ष्मी वनैए, संगे ऐनाव।

नहुनी वावाक मगमे उडैछ- अनेगे कोन श्रुडमे पडै छी। पावैगक दनि छी, हँसी-पुशीसँ उडव प्याएव-पीव भोजन-मस्ती कन। जे गानि सवहक से गानि हिनो। तखे अनेगे एते मगाज-मानी कनैक कोन जानू।

नाम-श्याम कनै। नहुनी वावा ओछाइनसँ उडैक व्रिया। केछैग। तयमे गाम दसिसँ 'पीह-पाह'क अवाज कागमे पडैछैग। मोहनवा गढ़ियाक अवाज जाकाँ अकागए छौए जे की कहै छश।

नहुनी वावाक मगमे उडैछ, ओह! अनेगे पावैग छोड़ौ। जावे जीवे छी तावेये गे। मनी जाएव तँ के देप्प आ केकन। देप्पवा मगमे श्रु उपकछै- कए गै पावैग छोड़ि? जइ हेछी पावैगक नाओपन श्रुणा-आवू आ यन-सम्पैक छूट हुअ ओ पावैग कए कनव? मुदा गुनाही गाछ वुह कियौ आमक गाछन जाएव छोड़ि दै तँ आम केना प्याए? जामुनपन सहजे जम वैसछे अछी वेछ श्रुडने कौआकें की? प्याए जाह जअ जाह जात। गामक वाग गौआँ जाह। मुदा पनीविन तँ अपन छी। पनीविनक नीक-अथक तँ जवाव दनि पड़। मुहौ योना कऽ नहव नीक नहनि केते दनि जीवे कन। आइसँ श्रु श्रुआ प्येव। मुदा प्येव केए? पनीविनक संग प्येव।

नहुनी वावाक मग नीक जाकाँ असथानि गै भेछ छेछैग कदिदी आवाटोककै-

“सौसे गामक छेक हन-वनिडो कनैए आ अहाँछे मोनो गे भेछ! आवो उडव की सुनछे नहव?”

जाहनि गुनगन वसिकुट प्येपन याह पीवैक मग होइ नहनि। नहुनी वावाकें भेछैग। धोकयठ भौहक वीयक कनयि। तीन नैन वज्ज-



“जाम्बुन अहाँ आवए जेवै नम्बुन कए मे गाछक जड़ए-मे पानि ढानी जे डानि-पान सगतै न पहुँच जाएन। अही संग
शुभ्रा प्येवै”

वावाक वाग दादीक हृदयकें वेधै छैकै। छटपटाइत अन्त देवपनि-

“अम्बुन जे तीस-पैंतीस गोनेक शुभ्राड़ी छै। अछि ओ केकन छए? जहनि कृष्ण वृन्दावनमे स्याउ प्येवै छै।
नर्स क किम हमन अछि”

मुस्की दै नम्बुनी वावा वज्ज-

“अम्बुनो यनमिने वेरानी ऐछे जे अपन कहए आ हमन छोड़ि छैए?”

अद्भुत कछि सद् सती साधदादी उगै-

“अहाँकें आन वुहै छी जे सुटा क कहौ”

“अच्छा छोड़ ऐ सगळें। पन्नामे सगळें कहि दियौ जे दुपहर तक सगळी गहा-प्या तैयार न जाए। वेन पहर दुनू
गोने केन। पुआनी वनिवै से सौसे पन्नामे सुना देव”

वावाक वाग सुनति दादीक आँपमिधुआ जेवै। वज्ज-

“आवक छेकें नमिहौ। मग अछि की नहि जे दुनागमक तेसने दनि पट्टा काटए पू-गन जे नहि। ऐग नैदी न
जे नहि आ उठ वन्यक पछाई आए नहि?”

दादीक वाग सुनति नम्बुनी वावा उकि वैसै वज्ज-

“अहुका छेकक मने वदै जे अछि जेकन देया-देयोसँ वावो-वय्या पन्नामे नहि नहि अछि”

वज्ज-वज्ज जहनि दादी-दुनयो वसै जे नहि सुनै-सुनै कथा-वक्ता-सुनै। जहाँ नम्बुनी वावा अपन
जनिगीक वोगमे वोगा जे। एक मग औगाए उगै तँ दोस मग गावए उगै-

“सदा आनन्द नहि अहि दुआने मोहन प्ये होनी हो”

दादी दनवज्जसँ आँग दसि गुनगुनाइ वद्वै-

“कयि उठवए अपन महिमा”

पुआनीक नंगमे नंग नम्बुनी वावा गाम दसि वदि जे। दनवज्जक वाट टपगामक वाटपन पहुँचो मने उगै-
देया याही, केतो नवतुनिय सग देवपन नंग सकेए आ केतो पुआन-जहान अकाससँ अवी उड़वै।



मुदा छाठे मनमे उठि गेबैन ओको छाग तँ कहि छी कनि। ययि-पुना केना नंग देना हँ नयन पेछाएन अपनाने मुदा छयिया उठि तँ पड़न तँ ओकरा की कहवै?

एका-एकी दादी पनविनक सभकेँ अपने मुहँ कहैएन। माने वावाक समाद दादी नगमिन वंटैएन। गोक-वेणाए दुनूक समीक्षा हुअ छाग। अन्तो-अन्त सभ ग्रह वृहत्क पो कहियी ने से पावैन दनि। वृह-पुनाक हुकुम छएन, तँए याद सवूप सुनि छैव गीके हएन। के कहक ऐछा होछि देयना कनिह दियेयना। तँ देयवो कनना तँ के कहक पो पाँयि तोड़ि कऽ देयना। आका ओछाइन येने देयना, तेकन कोन ठेकान।

मुदा ईहे वाग मने-मन उठैत पो ग्रह देयना हमहि नै देयए? कम-सँ-कम तँ ई हएन कनि पो सौसे पनविन एकठाम वैस पावैनक दनि वनिएव। दादीकेँ पोती कहियी देठकैन पो आइ नानसो गोने कनए पड़ौ।

समैसँ कहि पहि पनविनक सभ कयिी दनवज्जापन पहुँचय। वावा-दादीक वाग तँए महदेव-पान्त्रनीक शृंगु सवहक मनमे घुमैत, सवहक मुँह वग्ग। सभ वावा-दादीक वाग सुनैछे कान पाथि गजौन अँटकैने।

नघुनी वावाक मनमे उठैत पो गठि-गम्हूठ तँ छेदा जाए तँ वठिगाएत जा सकैए मुदा तँ पानि-भाटा छेदा जाएत नयन केना वठिगौत जाएत? गीन प्याढीक वीय पनविन अछा सवहक अपन-अपन स्नान अछा, अपन-अपन जनिगी अछा। जनिगीए-मे पुसियी अवैत-जाइत नहै छश मुदा जहनि ओक अपन गीक छेठ सभ कहि कनैए जहनि ने पनविनो छेठ कनैए। तँ पनविन पैघसँ छोट कए ने गऽ गेठ हुअए।

शृंगुआ दनिक उमकीमे मन उमैक गेबैन। जहनि वनप्याक पानमि ययि-पुना उमकैए जहनि ववो-दादीक मन उमकए छाठैन। दादीकेँ वावा टीप देठयनि-

“जऽ साठ द्वागमन गेठ नहए आ पनदेस गेठ नहै, से मन अछा आका विसैन गेठौ?”

वावाक प्रश्नक उत्तर दादी केना नै देथनि। वावाक नोय छैन मुदा पनविनक तँ जानजने छैथ। तेतवे नहै, नयिछासँ अपन सेहे छथि। सनिमाक कठकान जाकाँ पोछामे वज्जि-

“ओक सुय ने वसैन जऽ छै मुदा दुय तँ मोने नहै छश कए ने मन नहना।”

दादीक पोछ देय छोटकी पोत-पुतोहु अपन हाथक द्वागमन वृह वावाक प्रश्नपन जोन देठक।

पुतोहुक टाँट वोछि सुनि दादीक मनमे उठैत पो मुँहजोन पुतोहु अछा, एकटा उत्तर देवै तँ दोस दौहना देना। मुँह नोय कऽ प्या जाएत। तऽसँ गीक पो अपने मुहँ कहए दएन।

हानिभागत देय नघुनी वावा छपैक कऽ दादीक प्रश्न पकैऽ वाजए छाग।



“कन्यायों, गल-कवनिये नही। मौख-दाढ़ीक पम्ह अवति नहए। गीन साउसँ पनदेश प्यटै। नही। जोड मास नहए, हुनागमन मेथे नहए। हुनागमनक तेसने दनि मेडिया सभ पू-गन जेवाक समए वनौक। अपनो घनमे यूडा-भुसवा नहवे कनए, वटपनया ७५ छै। माडा-भुडी छे गोन छाश्वठा नूपैआ सेहो नहवे कनए। तेसना दनि यथी गेथौ।”

जानिआसा कनै। पुनोहु पुछकैग-

“पएने गेथयनि आक गिाडी-सवागीसँ?”

जेना गुड घावसँ पीण नकिछैक। सुआस पडे छै नहनि। वावाक मनमे मेथेन। व्हिचर होश वज्ज-

“ननिमथी नक तेगगिाडीसँ गेथौ। तेकन वाद पूव दसिक नसना येने कोसी घाटपन पुहुंयथौ।”

“यान केना टपयनि?”

“कन्यायों, जोडुआ समए नहए। यानक पेट प्याथी गज जोड नहै मुदा तैयो अगम पानागँ नहवे कनए। ओना यान सुवाश्क समए गज जोड नहै मुदा सुवाएथ नै नहए। वेसी नाव गदवनियामे डुमन एक वेन अहनि। मेथ जे अपने गौआँक मेडिया घुमैक। डुमि गेथे।”

उत्सुक होश पुनोहु पुछकैग-

“केतो गोने नहथनि?”

“तेनह-यौदह गोने अपना गामक नहैथ आ आन गोने आन-आन गामक। याथसि-पैनाथसि गोने नाहपन यदुथ नहैथ।”

“केतो दनि पू-गन कमाइ छे गेथयनि?”

मन पाडै। नघुनी वावा कछि काथक पछाश वज्ज-

“कन्यायों, तेकन डेकान अछा। मुदा तैयो वीस-पय्यीस वन्य तँ जेथे हएवा।”

“कए दनि पुहुंयै छेथयनि?”

“ओश्वेन गीनयें दनिमे नगैथी पुहुंय गेथौ। वज्जसँ थोड़वे हटकि काण पकड़ा जेथ यन्हीनवे गनिह नहए।”

“जँ ओश्वीम काण नै पकड़ैतैन नयन की कनतिथनि?”

पुनोहुक प्रसन्न सुनि नघुनी वावाक पुआनी मन पडैथे। जोशमे वज्ज-

“की कनतिथि! कोनो की ओतवे देय्थ-सुनथ नहए। मोनगमे नै काण मेडै। तँ आगू वढिजिगौ। सविगुडी, असाज, ढाका नक डेका दैगए। मुदा काण केने वनि नै अवति।”



“कोन काण कहै छैयनि?”

काणक नाओ सुनिवावाक मन वौना गेथैना कहयनि-

“कन्याँ, काणक कोनो ठेकाग अछि गनिहसतौआ सग काणक ठूनी अछि ओना वन-नोपनी, वन-कटनी आ पटुआ कटैठे जाइ छैथौ।”

“केतो दनि नहै छैयनि?”

“साथमे दू-वेन जाइ छैथौ। घुमा-झुना कऽ छह मास ठाँ जाइ छैथ। वन-कटनीमे तँ एकठाना काण नहै छैथ, मुदा पटुआ काटैक समैमे काण छड़िया जाइ छैथ।”

मुँहपन एकटा आँगुन छै पुरोहु सैन पुछयनि-

“एकठाना काण केकना कहै छथनि?”

पुरोहुक प्रसन्न सुनिघुनी वावाक गुनमग जायैना गजैन-पन-गजैन दैन वज्र-

“एकठाना काण ओ मेठ जे कूनमवद्ध यथै। एकक वाद एक काण अथै। जेना भागस कहैकाथ यूँहि पिजाना विनान यदवै छी। अदहन दऽ छै। पानागिन होइ, नयन सदिस ठाँवै छी। ग्रह कूनम एकठाना मेठ। मुदा नयन नोटयौ पकाएव नह, ननकानयौ वगाएव नह आ भागो नाहव नह। नयन ओ काण छड़िया जाए। छड़ियाए काणमे अधिक मनसयौ आ युष्मिक जूनान पड़ जाइ छः नहि तँ मनसयौ असमानुआ नह तँ छगिडी-नागमे पड़ गेथ।”

“एकठाना काण केना कहै छैयनि?”

“पटुएक कहै छी। पहिने ओकना कटौ। काटिक जमा कऽ देथि। गिन-यानिदिनिमे पत्ता हड़ जाइ छैथ। नयन ओकना अँटियाह वोह वनवै छैथ। पानाठेकना उघा कऽ ठऽ जाइ छैथ। पानामे वाँसक पुट्टी पाट कऽ, गिन-यानि छैथ। ठाँ दऽ छैथ। जसँ एक-दोसनाकँ दवो केक आ उपनसँ माटकि येका यद दऽ छैथ। पानकि नमे सग दुमा जाइ छैथ। गोनका वीस-पय्यीस दनिमे सोह जाइ छैथ। नयन ओकना मुंगनीसँ हाड़ि-हाड़ि साश्च कहै छैथ।”

“पटुआमे गनिग काण की होइ छः?”

प्रसन्न सुनिघुनी वावाक आँपिठवढवा गेथैना आँपिठवढवासे पानि पड़थ पौजनी जाँ मन मयून गऽ गेथैना वज्र-

“कन्याँ, अपन अहाँ वाठ-वोच छी। दुनयौक गीन-मीठ नै वुहथिए मुदा कहै छी- काणो जनिगी छी। तँ काणसँ सटवाक कोसशि हनिम कनी। हनिम कहैक मतव ई नऽ जे गनिदिनि देह युनी। जहनि नाप मसिनी मकानक नक्शा वना मकान वनवै नहनि काणोक छः छोटे-काण नमह ठाँ ठऽ जाइ छै आ आगू मुहँ टुसकयिवो कहै छः”



वयियेमे पुनोहु वगथी-

“पुनश्च छुटिगैथेन वावा?”

“कनय्याँ, की कहवा नमकानी तँ ओथो छी जे गाछमे एकटा होइए, जा कऽ पट-दे उप्पाड़िथि। ओठ उप्पाड़िमे जेते समए ठाग ओइसँ कम समैमे सजमैग तोड़थ जा सकैए। मुदा सकैओ छुड़ैवथ सजमैग वगि। देप्पमे-सुनमे टेव केना सकै छी। टेवव असाग तँ गही दूटाक गुठना कनव छी, जे असाग गही, कएिक तँ कछि एहेन होइए जे कमे उमेनमे सुशुआ कऽ गमहन मऽ जाइए आ कछि पुठुआ कऽ वौगा मऽ जाइए। जँ छोट जागि, छोड़ैग जाएव तँ ओ नयेन पुआ जाए, मेहनत दुमिजाए। तँए हठुको काज मानी होइए।”

वयियेमे शेन पुनोहु टोकैथिपनि-

“वावा, शेन मँसिया गोथपनि?”

“मै कनय्याँ, मँसिया कहँ छी। होइए जे हूँए आड़िअहाँ सवहक वीथ छड़िया दी आ अहाँ सज नगिनि जाकाँ सज पीव थी। मूँद वगिजापन काज कनए गकिठौ, जापन मगिनि की आ हठुको की। मुदा एकटा वाग धियागमे जून नमक याही जे कोन काजमे केते जापनि उडव पड़। जाइ काजमे जेते जापनि होइ ओइमे ओते सानक नही। नमके नसना वगवैए। पटुआक काजमे सजसँ मगिनि अछिपटुआ हाड़ि सोन वगौगाइ। पहिना एक-दोसन जागिगी पवैत पहिना जाँड़ मगिसिउठ पागमि जोक-डोकि संग वषिथ साँप सेहो नही। यागपिन टहलैआ नौद, गयियाँ जाँड़ मगिपागी सन-गनमक वीथ सनीन नही। तैपन एकठाग गढ मऽ कपनो एकटंगा ठेहुन वग। पटुआक जाड़िजोड़ जाइए, तँ कपनो वामा हाथमे उठा दहीना हाथे मुंगनीसँ हाड़ि जाइए। माछी-मयछनक तँ डेकागे कोना।”

सगिहासकि होइ पुनोहु पुछथकै-

“केते दगिक पछाइन घुमथपनि?”

“उठ वनपपन घुमौ। ओइ साठ नौदी मऽ गेठ नहऽ। नूपैआ पग दए आ अपने कमाया।”

“अगदगि, वगि सगिगक समैमे कोन काज कनै छेथपनि?”

“कनय्याँ, वएह समाग सज-पटुआ, तोनी, याग न्याद-जापन तैपान मऽ कऽ देहासँ वजान अवे छेथे तँ वजानोमे काज वढि जाइ छेथ पछाइन उट्ठ काज कनै छेथौ।”

○

सर्व सम्पदा : २१३१

ॐ साग



गाममे प्येतीक यन्त्र होशो ठाठ काकीक ठस सागक यन्त्र उडि जाश अछि ओना यनयोक् कृम अछि, मुदा ठाठ काकीक अछा पहयान नहने उपजा-वाड़ीसँ उँटन यन्त्रक संग वेकतीन्वक यन्त्र नामायस-महामानक पुनमुप पद्यक यन्त्र जाकाँ हुनको होशो छैना।

यनयोक् गनिग-गनिग कृम, केतौ-केतौ पाषा गहुमेक यन्त्र यथै न केतौ अगवे घागका केतौ प्येहनक संग दठहिनोक यन्त्र यथै न केतौ प्येहन, दठहिन आ ठेठहनक यन्त्र एक संग उँटि जाश। केतौ अग्नक संग तीमनो-ननकानीक यन्त्र उँटि न केतौ तीमन-ननकानीक संग सुठो-सुठहनाकि एवे नहि, केतौ एहनो होश ठे प्येतीक संग माछो आ दूयोक् यन्त्र उँटि जाश।

गणनाक गणनमे पहिना केतौ साप्पीसँ गणन सुन होश न केतौ गणनक वोय-वोयमे साप्पी यथै, आ केतौ साप्पीए-सँ वसिन्गनो होश अछि नहिना ठाठ काकीकें सेहे छैना। ठस सागक संग ठाठ काकीक सगिह आ पाषा सगिहे नहि, जनिगयिओ ओहन छैन ठेठन वैवाहिक वग्यन होश। पहिना कनाह-पोनसँ ठस कऽ दविडा मोड़मे वसैवठाक संग एकसँ एक देवसुगनै अपन जनिगी समनपति कऽ अपन कुठ-पगदानक संग समाजक मुनेठा सम्हानि नपै नहिना ठाठ काकी छैथ।

जऽ दवि ठाठ काकी सासुन एषी नहि दवि ठस साग सेहे संगे-संग एषैना हुनागमन मेठापन जप्यन ठाठ काकी सासुन वदि हुअ ठाठ न सानयिा घाग प्योछमि दऽठे ठे जप्यन नहिन नहिमे ठस सागक वोआ छपि कऽ ओहि घागमे ई सोय मिठि छैथ ठे ज कागनक पुड़ियिमे वा ठाठमे वाग्न नप्यन न प्योछमिन नहिना दियि ठेठि, जप्यने दियिती न प्योछे कनी। जप्यने प्योछती आ सागक वोआ दियिती न हे-ने-हे डाशन-जोगनिक सुसाद ने कहि उँटि जाए से नऽ न गिछैहमे कनी समैये ने ठाठ मुदा कियि वुह न गहि सए केठेना।

सागक वोआ गेहनसँ सासुन अगैक कानसो नहिन। पहिना हजानोक मोड़मे प्रेमिक नपै प्रेमिकापन नहिन नहिना ठाठ काकी अपन प्रेमि-साग-क संग छोड़ नहि याहैथ। ओना मनमे ईहे होश नहिन ठे अगेने कए सागक वोआ ठस जाएव, जऽ गाम जाएव ठेहू गाममे न ठस साग होशो होत, मुदा मन नै मानठकैना। मनोक मानव न सायानस नहियँ अछि न ठे सायानसो वाग वा काग कहि मना ठेव, ई अछा अछि मुदा ठाठ काकीक मन ओहू हुआने नै मानठकैना ठे गाम-गाममे पहिना घागक प्येती होशो एकनगाहे घाग होश आ नहियँ होश, नहिना ने सागक अछि, केतौ मतौना-ढेकी साग होश न केतौ पाठक-डड़िया, केतौ ठठका डड़िया न केतौ हनयिना, केतौ उजाना मुठ्ठा न केतौ सानगा।

नै पहिना गाम-गामक पाग, नहिना घासा, नहिना प्येती, नहिना वाड़ी, नहिना हाड़ी, नहिना सुठवाड़ी नहिना ने आनो-आन होश अछि नै कोनो जूनी नहि, ठे ठस साग ओहू गाममे होशो होश जँ नै होश होत नै ठठे-वठिठे नऽ जाएव। ठस जाशमे की ठाठ, वुह ठे घागे छी। यए सन सोय ठाठ काकी पहिना तीन्थस्थानक यात्री पनपीवा वननक संग सदिले-समन संगे ठस यथै नहिना ठस सागक वोआ संगे ठस अगि।



उस सागक गुप्त ठाँव काकीकें वृद्ध नहै। कएक तँ गैहलोमे वेसीकाँ प्येवो कजैथ आ उपजेवो कजैथ। प्येगयो हउएक।
जपन सागक गाछ पुआ जाइत जपन ओइमे सुउठ वीआ सेहो नसे-नसे पाका जाइत। जहनि वुढ़-वुढ़ानुसक प्रिया न गि
पुछनौ सुठ-सुठ हउए ठौन जहनि सागक वीआ गाछक आशा छोड़ि प्येपैक ठाँव जाकाँ यकै-यकै वहा जाइत। केनवो
पानि-पाथन वनसौ आकाँठक प्यसौ जहनि छह-मसुआ वय्या भाइक छातीमे सटि सूनौ नहै जहनि सागक वीआ
पृथ्वीक कोनामे सूनौ नहै अछा मुदा अयेन नहनि येन नऽ ओइ दनि सुनसुना कऽ उड़ि जाइत जइ दनि उँक समए
अवैत। तँ कयि सागक वीआ जागा समैपन प्येकें नाम-कोनो वाउ नहियौ कजैत तैयो ओइ प्येमे अपनो जगैत जाइत जइमे
पैछा साँठ भेट नहै।

उस सागमे ठाँव काकीक जहनि कानस छैन जे ओ जगै छैथ जे जौगम ठेक नून-गान आकाँठ-नोटी प्या जौवन
वसन कजैत तौगम जँ यागि। उस सागक पत्ताकें एकठोटा पानिमे कनी नून दऽ मेनयाइक खोनसँ खोना देवै तँ तेहन सगिहि
नऽ गान-नोटीमे सटि ओहन गापिकें छैन जेना प्यास सड़कमे ब्राहन थड़ै। यागि पाक मेजक संग अहल कयि भीटन
ससाइत अछि।

जगिगीक संग पुनर्जिन साग अपन कथा-वेथा ठाँव काकी छोड़ि केकना ठाँव जागता जे ओकना दसि घुमयि कऽ ने
नकैए तेकना कहए कऽ की हेन। प्येक आड़पिन पहुँचते गुप्ताएठ गेन-पुनू जाकाँ ठाँव काकीकें साग कहैत-

“काकी, आइए नहि, हजानो वन्यसँ गेनहानी, वधुआ, नोनी श्यादकि संगे-संग यवैत एवै, कयि हवाइ जहाजपन
भोजन-गान कजैत मुदा हमनापन कए ने केकनो गजैत पड़ै। जँ गजैत पड़ै नहति तँ अहनि बनौ बेग नहति?”

सागक दुपगामा सुनि ठाँव काकी बहिवर नऽ कहयनि-

“वहनि, कयि अपना गजो-कनमे जौवैत-मजैत। तखे अनेते कए दुप कजै छह। जइ दनि उँपैत जेवह तइ दनि वृद्धिक
जे प्या तँ इ बनौ गै नहए दसि याहै वा इ बनौ नहै-जोकन नहए।”

साग जागै-

“ठाँव काकी, ठेक वड़ कुमेठा कजैत गै तँ, कहू जे समिटीक अंगन-घन वना कऽ नहै आ हमनो जँ अप्पाठमे कनी
माटि छड़िपि समिटीक अंगनमे आकाँठजपिपन ठाँव देन तँ की आसीन-काकि तक गौन गै पुनवै मुदा अने साग जाकाँ
जे सुटा दइ जे इ जगनीक छी तँ इ जाड़क छी। गदवानि साग प्येवो क गै याहि, से कहू जे इ होइ?”

सागजगना दैन ठाँव काकी कहयनि-

“अखे कए दुप कजै छह, तोहन तँ मान-मज्जादा एते छह जे वनि तोने अपन भाइयो-वापक उद्घान गै कऽ सकैत।
कनह दहक जेते कुमेठा कनवाक छै से कनह।”

मथिपियठक भोजन जहनि अदिसँ आइ बनकि भोजनक शहिस अपना पेटमे समेटवे अछि जहनि गामो गे समेटवे
अछि एक दसि जहनि गान दारिक संग ननकानी, तैसंग-संग पानिमे वनठ अदौनी, तेठमे वनठ वन-वनी आ दहि-यगिनीक



संग वसिन्ताण होइत। जे मोक्षक शहिस पुनर्जाति कैत। तहिना वायमे वनठ नयवानक प्योपड़ीक संग वहुमंजुलि मकानक वीथ आदि मनुष्यसँ ठऽ कऽ सन्ध मनुष्य भागे आधुनिक मनुष्य तक शहिसक हठकी सेहे दैत अछि।

जऽ दनि ठाठ काकी सासुन एही तऽ दनि ओ पनहे-सोहे वन्यक छेथि। अगे-आग जाँ हुइए वन्यक पछाशा पार्किं मुझे बघिवा गऽ जेथि। हुइए वन्यक अग्रिगन्त 'ठाठ मौजी', 'ठाठ काकी', 'ठाठ दादी' क माथा समाज पहिना देठकैत। एकोटा सगन्तान नै भेठ छेथि। जऽ दनि पति मुझे तऽ दनि एहेन ओहीने ठाठ काकी ओहीना जेथि जे नानि पोष कागारि नै सकथि। ओहीनो ई ठाठेन जे जऽ समाजमे वैयव्य वागह एोक सकक अछि जे ना-जनिगी वैयव्य यागस केने नैहै, तैपन अशुभक उपनाग उपनसँ मुदा, की समाज ई गान ठऽ जे ओकन जनिगी ज्ञानाक संग केना यथै। जे समाज केकनो जीवन नै दऽ सकैए की ओर समाजक केकनो ओगनी वावैक अधिकार छऽ? बघिवाक संग जे-जे कनिदानी समाज कैत आए अछि आ काइयो नहै अछि, की ओ समाज समाजिक वगवग वगवैक अधिकार नयै?

गानी जागनास ठेठ ओकन सुनकाक पक्का वेवस्था सेहे हेवा याहि जाँ से नहि, तँ नै ओ पनविनक संग अपन पुनर्जाति वैया सकैए आ नै वाहने केतौ वैयासकतौ।

पतिक पनोछ भेठापन माइयो-वाप आ सनो-समाज ठाठ काकीक केतवो हठिठपनि-ठेठिठपनि मुदा ठाठ काकी अर्द्ध जेथि जे समाजमे हमना सन वहुनो छैथ, जहनि हुनका सवहक जनिगी कटौत नहिना हमनो कटत। जेते भोग पानस छठ तेते भोगवै, आव माँ मथिठिक छुठवाड़ी छोड़ केतौ नै जाएवा जप्पन अपने हँसुआ, पुनपी आ कोदानि यिठवैक ठूनी अछि, जप्पन केतौ नहि जीवन-यापन कऽ सकै छी। अपन मान-मन्यादा अपने नऽ वगिाडवा।

अस्सी वन्य पान केठापन ठाठ काकीक नपौन ओर दसि ठेठेन जे-जे नपौनसँ देप्पने नैथ। जहनि नपौन-सँ-नपौन मथिएव आ टकनाएव हुन होइत नहिना ठाठ काकीक मनमे सेहे उठैत। एहेन नयिनसँ जनिगीमे कहियो वैसवो नै कए नैथ जे वुहवो कनिथि आ सोयवो कनिथि जे जऽ जनिगीमे वुधि-वियाज जाँ जनिगीक संग नै यथ ओ जनिगीए केहेन हए।

जुनयुनमे पऽठ एक मन कहैकैत-

“हमना सन-सन ठेठ जे वेवहाज यथ नहै अछि ओकन नमिनजना के कनि?”

तँ दोस मन उत्तर देठकैत-

“जे नमिनजना कैवठा छैथ ओ जप्पन अपने यावै ओघनाए छैथ जप्पन अगका की देप्पथनि। पय्छमि मुहँक गाड़ी पकैऽ पूव मुहँ जाए याहै छैथ, से केना होइत।”

मनक धंधौन देप्प ठाठ काकी काइयि जे ओनाहै-ठे वदाम अगने छेथि, ओनाहैठे वदि भेथि।

○

शब्द संप्रदा : १२०६



गठिकोनक नुआ

गहनिग नमहन दोकानमे पुनवेश कनिगि गीवगोपयोगी वस्तु देख्य मग हुअ छौगि जे ईहे कीनछि, ओहे कीनछि मुदा पार्श्वो आ व्रियानो तँ ओगवे नहए जेते पहिनसँ व्रियान मेथ अवैए। गहनिग इच्छा नहनिगि कसिगठाथ कोठनीमे डस्निगि टेवुथ गै उगा। ओसातेपन अपनो दुगू पनागि आ अगथिगि-अग्यागकें पुअवैए अछि कम दनमाहा सायानाम गनिगी। सहनमे नहनिगि गामक यात्रा-ढाँचिवेसी, कानामो सुपष्ट जे सहनी वगैरे सहनी गनिगी वगवए पड़ै। जे ओहनिग नहि, पार्श्व हथे वगै। पार्श्वक काज मुहसँ थोड़े होइ छइ मथै मुँहक आगू पार्श्व मोथ जेहेन होइ प्यासा कयौड़ी मुँहमे छड़ै-याड़ै गड छवैए देवकाग्न वजग-

“आह! वृहथ कनि कसिगठाथ, कछि होइ, दुगियाँ साग वेन कएि जे उगटै-पुगटै मुदा अपना ऐगम गामक जे गठिकोनक नुआ अछि ओकन गुठग केनए हए?”

देवकाग्न पार्श्व वाग सुनि कसिगठाथक मगमे कनियौ हठिकोन गै उडै। कएि तँ मगमे प्रए गाय होइ नहै जे उनामे गौआँ एग हेन, तँ ए ई गै अगस हुअ जे प्येगाइमे डक छैक। गीक कएि व गनिपेट कहुना प्याथि जँ से गै होइ तँ दसगम वजग। जे प्याइ-थे गनिपेट गै देथक। गहि वीथ मगमे उडै जे पुछि-पुछि पुआएव गीक। जे कम-सँ-कम पहिछि वेन तँ कहना जे हँ इच्छापूना प्येवै, आव कनि अनाम कनैक ओगियाग कनह आ तोहँ सग प्या-पीवह, काज-उदम देखहक। दैग्य दृष्टि देख्य कसिगठाथ वजग-

“भाय साहैव, पार्श्व-जोकन वगथ अछि की नहि कहँ पार्श्व छए, यानि आनो गेगे आवी?”

पहिछि ढकान ढकनै देवकाग्न उगन देवपनि-

“अँ हौ कसिगठाथ, तँ हमना नाकषस वृह छह जे आगूमे एते वस्तु देनियि देथह हेन आ तैपन सँ पनसग उइ कहै छह?”

गहनिग डानि गजग मयकीक पहिछि आस होइ गहनिग, मगमे आस जगनि कसिगठाथ वजग-

“भाय साहैव, कनियँ-कनियँ समान सग पनसैथे वनवाँकें कहने छैए। जेना-जेना भोजन कनै जेना तेना-तेना पनैस-पनैस दै जेवै।”

नहसाग जकाँ नहियाए भोजन पावै देवकाग्न पार्श्व मग गजगए नहवे कनै। कसिगठाथ वाग अगनो गे मेथ छैथ कियियेमे देवकाग्न वजग-

“अँ हौ कसिगठाथ, तँ अगनियि वृह छह अपन वन छी! जे प्याग आकवेसी पार्श्व मग हए ओ मांगिक छेव। नइहे तोना मगमे कएि होइ छह जे गुपथे उडिजे। हम ओहन ठेक नइ छी जे पार्श्व छेव आ दुसियि देव।”

जपने कसिगठाथकें पानि-सहिस्वनी-हथक रसानासँ शोन पाड़ि पुछवनि-



“नतिकोनक नुआ-दे कछि कहैक कनिह?”

“कए?” कसिगठाउ पुछैक।

“नतिकोनक साग आ यटनी तँ पार छी, वनवैयोक ठूनी अछि, मुदा नुआ गै प्येने छी।”

ओना सहिस्वनी देवकागा नायसँ अढ़ गऽ पाकिँ कहैत नहथनि मुदा वोषिमे एहेन टाँस देने जे देवकागतो वुहथनि। साग आ यटनी सुगति देवकागाक मनमे उठैत- साग तँ केने दनि प्येने छी। नहूमे पेशावमे गडवडी नहने पथप्रमे ग्रह यथैत। मुदा यटनी तँ गै प्येने छी। ठाण-संकोय तँ ओकना गे होइ छै जेकना वुह पिडै छै जे गानी छी, मुदा हम कोन गानी छी जँ गानी नहिनौ तँ वुह छै नहैन। गै वुह अछि तँ वुह छैव कोन अथवा हए। जँ कहियो पारयेक मन हए तँ वुह छै गे काण दे।

अया नहूमे छै देवकागा नहूक कन समेट कऽ घोटैत वण्ठा-

“कसिग, ई की कोनो गाम-घन छी जे कनियाँ एते संकोय कनै छैथ। एते आवह कहूनि, कनी एकटा वानो वुहैक अछि।”

देवकागाक वान सुगति कसिगठाउ तँ ससैत कऽ ठामे आवागैत, मुदा सहिस्वनी कछि आगू वढि, कछि पाछू आवाकऽ गढ मेथि।

जहनि कोनो वय्योसँ कोनो गप वुहै वेनेमे गंग-गंगक प्रसन्न पूनक प्रसन्न पुछि संतुष्ट होइ अछि। नहनि देवकागाक मनमे ह्रु अछि। जे कोनो वान वुहै छै सोहल-सोहल गीक होइ छै। ठाणकोट तँ वहुत वान छोड़ि दैत अछि। वहुत वसिनियो पार अछि। दोपह तँ दू गेथ। अपने गयियाँ उतैत सहिस्वनीकेँ अपन यढ़वैत देवकागा वण्ठा-

“कनियाँ, आइ गे कसिगठाउ दू-पार कमार छै तँ सुठपेन्टो पहनिने देखै छै, मुदा जप्पन गाममे छै जप्पन तँ ग्रह एकटा यनहित्थी गामछा छै। जँ जेमे छैत गे नहै छै। गप-सप्प कनैमे कोनो ठाण-याक गै हवा याहि। हम जे वुहै छै से अहूँ पुछू आ जे गै वुहै छै से हमहूँ कए गे पुछव। तखे ठाण-संकोयक कोन काण छै।”

पानीकेँ युप देख कसिगठाउ वण्ठा-

“नाय सारैव, कहैत तँ गाममे गै छी मुदा गामे जाँ एतौ छी। गे ओते कमार होइ जे होइत घुमव आक पिनेनी घुमव। प्याथि डेनासँ कानप्यागा आ कानप्यागासँ डेना अवै-पार छी। अठवने छुट्टी दनि कनी-मनी घुमि छै, सेहो पपे।”

पाकि वान सुगति सहिस्वनी पाछूसँ ससैत कनी आगू वढि गिछिया कऽ गढ होइ वण्ठा-

“की कहैथनि?”

देवकागा वण्ठा-

“कहौ ग्रह जे नतिकोनक यटनी केना वनवै छै?”



सहिस्त्रनी-

“भैया, हनिका क कोनो नै वुहठ होन?”

देवकाग-

“नर कनयिँ, कोनो क हिमना जँयैक अछि, यनमागनी कहै छी नै वुहठ अछि”

तैवीय सामंजस करै कसिगठ वाजठ-

“भाय सहैव, ओना हम नूनओ प्येने छी, सागो प्येने छी, आ यटनयिँ प्येने छी आ ययि-पुतामे पाकठ ठिकोनक श्रुऽ सेहे प्येने छी। जावे माए जौवैत नहए गावे आन दनि तँ नहयिँ मुदा जुड़सीतठ पावैने ठिकोनक नूनआ अवस्से ननए वऽ पन्याक यीज छी। ओतेक पन्य कनी कऽ प्याएव असाव थोड़े छश”

पतिक सह पवति सहिस्त्रनी वजठि-

“भैया, हमन माए-वाप वऽ जनीव छश। ननपेट अन्गो ने भेटे छैथेन, नप्यन जे नूनआ-वगहनआक सेहने कनीतिथ से पान ठातिन?”

सहिस्त्रनीक वाग सुन मुडी डोवैत देवकाग वजठि-

“हँ, से तँ डीके हमहूँ की कोनो वेसी प्येने छी। जहयि कहयि घनदप्येने केतौ जाइ छी, नप्यन प्याइ छी। सेहे आव उडवे भेट जाइए। आव तँ सहजे छेक तेहेन यकिनयि नऽ गेठ जे अछुएक पाँयटा पूना छश। नवका नून तँ प्याइ कोन गप जे वुहवो ने करैत हए। पान-पुन कहि थोड़े प्याए। अयछा छोड़ ऐ सनकैँ, असठ वाग तँ छुटठे अछि”

त्रियानक सामंजस पाव सहिस्त्रनीक असाह जगठेन, वजठि-

“भैया, साग तँ वुहठ होन जहनि कदीमा पान आक अनकिंयन पानकँ कानासँ काटि नूनठ जाइ छै नहनि ठिकोनो पानक होइ छश”

हुँहकानी ननैत सहिस्त्रनीक वागकँ मान देवकाग वजठि-

“हँ-हँ, ठिकोनक साग तँ केतनादनि प्येने छी। मुदा यटनी नहि”

जहनि नव काज केने, नव जगहपन पहुँचने वा नव छेकसँ दोस्ती भेने मनमे पुशी होइ नहनि दस वन्य पहठिका पेटहाक यन्य करैमे सहिस्त्रनीकँ मनमे पुशी उपकठेन। मुसकयिआ वजठि-

“भैया, जहनि अनकिंयन-पानकँ कदीमा पान वा आन पानक ननमे दऽ पतौडा वना आगनि पकौठ जाइ छै, नहनि ठिकोनो पानकँ पकौठ जाइए। नप्यन उपनका पान हडैक जाइ छै नप्यन वुह जाइयौ जे ठिकोनक पान सीह गेठ हए।



ओकना यूएई सँ गकिठि याहे पानकि वनानमे दऽ दियौ गै तँ कनीकाठ सनाइ-ठे छोड़ि दियौ। नप्पन सना जाएन नप्पन ओकना पनौड़ासँ गकिठि सिठौटपन थक्युकिऽ पोसिठिआ वहुन मसठ्ठाक काजो गै पड़ै छश यसगनसँ गूग मनियाइ दऽ दियौ। वस गऽ गेठ ओगा, ठेक गानोमे प्याइए मुदा नोटीक तँ वुहियौ जे नहनि गानक दाठि छी, नहनि नोटीक ठिक्कोनक यटनी छी।”

सहिस्रनीक वाग सुगतिरेसऽ ढकान कतैए देवकागन ठेठा उठा पानापीव वजठा-

“कसिगठाठ, वहुन पेठियिह समानक आगू पेगहिन थोड़ै दऽना वऽ ओनियिग केने छेठह।”

नहनि गीक वदियाथी वोन्ड वा पुनविन्सटिमे टाँप केवोपन हुहुआश जे हुश्यो पुनसिन नम्वन औन नहै तँ असूसो पुनसिन पुनजिनए, नहनि कसिगठाठ कहठकैग-

“भाय सारैव, कनियौ आन प्याइयौ।”

आगूह सुगतिदेवकागन वजठा-

“हम कि कोनो नाकषस छी जे केनवो प्याएव तँ पेटे गे मनान। मनुष्यक जे भोजन छए से तँ पेवे केवौ। तू गै अगदाम केठहक जे ठेक केने प्याइए पेटेक कोन वाग जे मनो मनगिठि अय्छा एकटा वाग कहह जे अपन गौआँ के सभ ऐगम, नहै छैथ?”

देवकागनक पुसून सुगति कसिगठाठ मने-मन सोयए ठाठ जे वम्वर सनक सहमे के केनए नहैए, ई माँज तँ मान्ना हुश जेनेकेँ नहै छश पहिठि जे काज गै कतैए आ दोसऽ जे कोनो कम्पनीक एजेसी कतैए हुअए वाँकीकेँ कोन जानान छश अडवावे छुट्टी होइए नश्मे कसिन कनव, केने कनवा कपड़ा-ठाना प्योयव आकसिपूनाह नकि अयम्पूना गीग पुनाएव, आकि हुग पुनागी मठि कोनो गव जगह देयए जाएव आकि मँट-घाँट कनवा नप्पन तँ ओहुना कियौ-गे-कियौ दन्सनीय जगहपन मँट-घाँट भाइए जाइ छैथ। गाम-घनक हाथो-याठ वुहिये छी आ संग मठि याहे-पान कऽ छे छी।

अपन मजबूतीकेँ छपियैए कसिगठाठ वाजठा-

“भाय सारैव, अहूँक जेगजग तँ पनियेने छऽ कऽ नहै छैथ, हुनकासँ सभ माँज ठाठि जाएन। नप्पन हम एते जानू कहव जे जइ कन्यागामे काज कतै छी नश्मे गीग जेने छी। कहैठे तँ उठे काज अछि मुदा सभ दनि काजो ठाँए आ एकेशम साग दनिक पजानो भेटैए जश्मे नवदिक सेहे भेटैए।”

देवकागन-

“औहुका तँ छुट्टी ठिअ पड़ै होह?”

“कए छुट्टी ठिअ पड़न। कोनो कि ओकन दनमाहवठा नोकनी कतै छए। औहुका वदठा नवदिक काज कऽ देवश कोनो की सूकूठ-आँशुसि छी जे सोठहनी वग्न होइए कन्यागा छए, सभ दनि यठि नहै छश।”



“पनविन कएि गामसँ छऽ अगठहक ऐगामसँ कमे पन्यमे गामक पनविन यथैए?”

“गाय साहैव, अहँ अगठ कऽ वणै छी। गाम-घनक ठोकक कनिदागी नै देखै छएि जे गाड़ी-दातू पीव-पीव कसिग कनैए। अपन झण्डा अपन सोहलमे नीको होइ छै आ ठोक वँयास्यो सकैए। नयन देखियौ, मनमे तँ ऐछे जे नयनमे गाममे नहै-जोकन, कोनो काण गढ़ कनै-जोकन पूजो नऽ जाए, तँ गामे यथै जाएवा”

“केतो महिना वँयै छह?”

“एते दनि तँ वुहू जे कहूना कऽ गुणन केवौ मुदा आव छह महिनासँ गोटे मास हजान नूपैआ आ गोटे मास पनहो सौ वँयै जाइए”

“वैकमे जमा कनैए जाइ छह कनि?”

“वैक जाएव से छुट्टी होइए। एजेन्ट-सेजेन्ट तँ ढेनी अवैए मुदा ओकना सवहक गाँजमे नऽ पड़ए याहै छी।”

“कमो पूजोसँ तँ गाममे काण यथै छै आ वनि पूजायिक यथै छऽ”

“हँ से तँ यथै छऽ जोकना अपन कानोवा नै छै ओ दोसनाक काण कनैए। मुदा देखो छएि जे केतो वोरन दऽ छऽ गहूमे आव कहूना-कहूना दुनू पनागीमे आऽ हजान महिना उड्यै छी, ऐगाम महिनी अछि तँए कम वँयैए मुदा गाममे तँ कम-सँ-कम ओते कमाइ हुअए जे जहूना गुणन कटै छी जहूना पूना सकी।”

“अपन की अगंदाण छह जे केतो दनिमे पूना छेवह?”

“जँ गजवान नीकेना नयनमे तँ डेढ़-दू साठमे जून पूना जाए। अहाँक गाय-साहैव सवहक दोसने दनि-दुनियाँ छैना”

“गाय साहैव” क नाओ सुनति जहनि गनठ पेटक गनमी होइ छै जहनि देवकाग्नकें शुक्र दिवसकें मुदा अपनाकें सम्हालैए वज्र-
सम्हालैए वज्र-

“सुथनी गाय-साहैव! मन जेठ जे कनी वन्यै देखी, दनगंजमे टिकट कटैवौ यथैएवौ। गोह नओ-डेकाग छऽ गेगे नहहँ तँए तोना डेनापन यथैएवौ। गाय छओ तँ की, ओइसँ सगनह-वन नीक तँ छह कम-सँ-कम समाज वुहू सुआगत तँ केछह”

अपन पुनसंसा सुन किस्मिगठ वरिष्ठ गऽ गेठ वाज-
अपन पुनसंसा सुन किस्मिगठ वरिष्ठ गऽ गेठ वाज-

“गाय साहैव, ओते तँ कमाइ ने अछि जे अइठ-अइठसँ पन्य कनव, मुदा समाजक जँ कियौ डेनापन ओता तँ अगका जकाँ मुँह नै घुमा छेवा”

किस्मिगठक सह पवैए देवकाग्न वज्र-



“कसिगठा, जयन पनविने सन कोकैन गेठ तँ समाज केहेन हए। मुदा तँ सोछेअना पनविन कोकनिये गेठ सेहे वाग नए। जावे धनीपन धन मे छै जावे यै केना छश”

कसिगठा-

“माय साहेवक मेट कनवैन की नहि?”

“मन तँ एको पार नर अछि मुदा जयन ऐगम आविगिऔ जयन नहियौ मेट कनव उयति नहियै हए। तोना तँ हुनकन मोवाइठ नम्वन वुहठ हेनह कनि?”

“हँ, से तँ ठपिठ अछि मुदा मोवाइठ अपना कहँ अछि?”

“वुथपन सँ तोही कहि दहुन जे देवकागन गामसँ एठा अछि जँ गप कनए याहना तँ अपने कहथुन, नहि तँ जानकानी तँ गेटयि जोगेन”

मायपन वगिऽठ देय सहिस्वनी देवकागनकें पुछठकैन-

“भैया, एना पसियाएठ किए छथनि?”

देवकागन-

“कनियौ, की कहव! कहैठ तँ पार-कौड़ीवठा कहवै छैथ। नहिना धनक धनोवाठी छथनि। अपना तँ कनी-मनी कुठ-पनदानक ठाजो हेर छैन मुदा धनवाठी जे छैन ओ नगवानेक देठ।”

सहिस्वनी-

“जयन अपने नीक छैथ जयन हुनकन धनवाठीसँ कोन मतव छैन?”

देवकागन-

“मतव पुछै छी। की कहव, वजगि ठाज हेर जे एके पनविनक छी जयन एना किए वजै छी मुदा नहियौ वाजव सेहे तँ गठायि हए। अपने जे माय साहेव छैथ से ने मने छैथ आ ने मौगीए वठगोवना छैथ। जहाँ कछि वाजए ठागा आ पन्नीक आँपपिन गजैन पड़ैत आका वोषिए वदैठ पार छैन”

○

शब्द संप्रदा : १८४०

एकोटागे



पुनःपुनः गाममे पुनः कक्काक पनविनकेँ गौऔ आ अगौऔ पुनयन पनविनसँ जने छै। ओना असुसयिो वन्यक अवस्थामे कहियो पुनः काका कनमा-कनर नै पढ़ैत मुदा कनमा-कनरक कनिदानी देप-देप सदकिा कषुवध जून नै छै। गडे ने वैसै छै जे जे वस्तु नानापुन न्याविटपिाडासँ तौव जाल आ जँ वंटाशन-प्योटाशन पौआ-कनमा होशन नानि-माशामे यथि जाल। प्याए ओ तँ यथि जाह, मुदा दुनयिाँक एते नमहन यनी केना वंटाशन-प्योटाशन कनमा-कनर होशन श्वर दसि पहुँच जाल? बादक कनिदानी की पनाक पानि सोपि छै? जँ सोपुत याहन तँ न्याप केन? हवा-वहिाँ डि केतोका अँटका कऽ न्यासि कै। प्याए जे होउ मुदा कनैव ठानीक मयाग जकाँ अपना पनविनकेँ पुनः काका वनौने छै।

जहनि सकक-कऽग वीआ यनी यानस कनि, दियीनीक तेव-वाती जकाँ अपन तथि-तथि अनपति कए जौ। अछि, जहनि ने कनैवक वीआ केने अछि वए अँकु ने यनी यानस कनै उपन आविठनी वनिठनै। मँ पात-छोत कऽयीक आठक संग मयागपन कए ने पहुँचै। तँ कओ अपन शनीक नक्षा कनै, अपन मुँह वँयवै नै पहुँचै? जून पहुँचै।

पुनः कक्काक पनविनोक सन तेने छै जे अपनामे जँ धँधौल होनि मुदा काकाकेँ जे पहुँचते सन सकदम नऽ जाल छै, कएक तँ सन वुहै छै जे अगपिाएमे हँसिो हहिो कऽ यँ छऽ तँ जहनि नसुनापन ऐँत-जुँत यथैव साँप वौहनेमे पुनवेश कनि सोह नऽ जाल जहनि कक्काक सोहनेमे पनविनक सन सदस्यक यावि-वेवहन सोह नऽ जाल अछि ओना, वनि पैनक यथैव साँप माटपिन यथि केना सकै। मन-यतिन मानि पुनो काका नानि-दनि पनविनेक पाछु जाल नै छै। अपनो मनमे ओहनि ओ वात नजने छै जे वीन नोग्या वसुंधरा, माने जे ए यनीसँ पुन कन ओकने ई कपनो पुनो वनि तँ कपनो माए-वहनि वनियुममा छै।

येतनसँ वावोय यनिक पनविन पुनः कक्काक छै। सवहक वीय तावे मेव अजीव छै। येतन सन जहनि पुनः काकाकेँ गानज वुह छुट्टी नेने नै छै जहनि तँ वावे-वोय सन अपन वावा वुह अपने सन कछि वुहै। पनविनक सनसँ छोट वय्या यानि साक छै। तावे-मेव नीक छै।

अंगनाक सन समायानक समदिया नहिो संवाद-वाहकक काज वय्या सन कनि छै। एहेन येव मोटवो मोसकवि, मुदा से तँ छैने नवका दोसुपिाये तँ वेसीकाठ एकदम नहे यावे-वसिकुट संगे कनै छै, पुशी नै छै। पुनः काका एदुआने पुशी नै छै जे अपन वात पहि उसाति, नानि-दनि गप सुनेवे दनिमा तैयान नै। आ दनिमाक पुशीक कानस अछि जे आँप-कान तँ नपने ने काजक वनै नपन ओकनासँ काज कनाए। नऽ तँ गने-गने गेड़ी वनि जाल। मुदा से कहाँ होइ छै, एक कने सुनै आ दोसऽ कान देने उड़ि जाल छऽ उड़ै-उड़ै सुनै नानि सनटा उड़ि जाल छऽ।

वसन्तक आगमन नऽ जेव कछि दनि पहि नक जे मौसम जाऽसँ जडियाए छ, पावसँ पवए छ, ओ आव शुनशुना कऽ उड़ै सुप्याए-सडै ठानी आ कुमहे जकाँ पवति वसन्ती हवामे उड़ै जाल वेदंग मेव यनी, धन-आंगन जकाँ वाहने-सोहने वेव शाना दधि जाल। नसे-नसे नस नान हवाक नमकी नमक जाल जहनि सेवा नविाँक समए कोनो अश्वसनकेँ सुवगा सुहै तँ कोनो आगूने गांगट नकक नाय होश, जहनि शशिनि-सनिशानि समए वसन्तक वीय



हुअ छाला मुदा से वाग पुन कक्काक पनविानमे गै छैना कोछुक वनए जाँ पनविानक सग सदस्य अपने-अपने गायक पाछु गनदिनि छाला नै छैथ।

दनि आति दनिमा, वाइस या माटकि वनौठ जाणाक दुनू पट्टा दुनू हाथमे गेने दनवजाक आगूमे बैस, नसनाक धूना-गनदाकें जाणामे पीसए छाला वनि देयगौ आशा वगै नै जे वावा दनवजाके छैथ। सुनए छैथ कि जागए छैथ, नसँ कोन मतव दनिमाकें। ओ तँ अपन काणमे वेहाए अछि। भगमे नहवे कनै जे याहक वेन गऽ गेअ अछि। माए याह आगि देवे कनैगै, हमहूँ जा कऽ पीवे कनवा दनिमाक एहेन वसिवास कएि गे नहौ, पनविानक वोहसँ दवठ थोड़े अछि। जे गूग गै अछि, तेअ गऽ अछि। आकि कैसक गानोपपन जाए पड़त।

जहनि गन्त-ब्रेणा गन्त-यनिगमे नमठ नैह नहनि दनिमा अपन काणमे हेनाए नैह। कोन मतव ओकना छै जे बुहान काणक हेनाए अयम्पूआ नहि जाइए।

माइक हाथमे याह देयते दनिमा, जाणा छोड़ि आगू आगू दनवजापन उपन यदुआ

दनिमापन गजैत पड़ति पुन काका मुस्की दैत वजआ-

“की दनिवावू, याहे-गाहक वेन गेथै की नहि?”

तैवीय याह गेने पुनोहु पहुँय पुन कक्काक छामे गेथैना दनिमाक गजैत देवाएमे टाँगाए हनुमानजीक छातीक नामपन पहुँय गेअ छोटो देय दनिमा वाजए-

“वावा, उ छोटो उगानदिअि”

दनिमाकें पोछवैत पुन काका वजआ-

“वौआ, पहनि याह पीव अछि पछाइन ई सग हेअ?”

दनिमाकें जेना बुहै नै नहनि वाजए-

“पहनि अहाँ पीव गे अछि, पाछु हम पीअवा”

वहंगा पकड़िअ देय पुन काका वजआ-

“अयन हमना हाथमे गठिस अछि कैना उगानए हए?”

याह पीव, पड़िकीपन नयठ पुनपी उगानपुन काका वाड़ी दसि ब्रदि हुअ छाला हाथसँ पुनपी छगि दनिमो आगू-आगू ब्रदि गेअ।



दानीमक वाड़ी पहुँच पुनन काका हयि-हयि हयिवए ठाठा तँ वुह पड़ैत जे दानीमक जड़मि पागकि अभाव अछि। मुदा गाछक उगड़गी आ छेउ छेउ देय मग छेउ छेउ गेथेन। छेउ-छेउ छेउसँ छेउ गाछ सग जामि छेउ छेउए।

पुनपी नेने दनिमा प्याथि पुनैक जगह हयिवैत नहए। आ पुनन काका छेउ सगकेँ हयि-हयि देखैत हयिआए-हयिआए छेउ सगपन गजैत पड़ैत। मग नेने जे जेनवे-जेनवे जड़ सिवहक पढ़ उपाड़ि दए। मुदा गजैत दानीमक काँटपन गेथेन। जामि काँट गज जाइए। उपन-गयियाँ सगजैत काँट। जामने अपने पढ़ उपाड़ए ठाव जामने दीनमो कछु-ने-कछु कनर ठावा। नहमे पुनपी हथेने छस तेहेन हाड़ी अछि जे सुगवा साँप जकाँ माथमे गड़तै कगिनहेने गड़तै तेकन कोन डेकाग। जामने काँट गड़तै की कागव सुन कन। जामने कागन जामने ओकन। युप कनव आकागाछक जड़कि पढ़ उपाड़व।

समहीना कजैत पुनन कक्काक सोहमे दोसरा काज एथेन। काज ई जे छड़क गगिनी कजै। हाथक पुनपी आड़पिन नयि दनिमाकेँ कोनामे उग काका कहएपनि-

“वौआ, अहाँकेँ नेने हम टहएव आ अहाँ छड़ गनवा”

नव छड़क गगिनीक काज देय दनिमाक मग पुनसँ आनो पुनसिया गे। मुदा मगने एथे जे कट्टा नमि हाड़ीक वगानमे पयासोसँ उपन गाछक छड़ केना गनथेव? नहमे वोसे नक गनए होए? तैवीय पुनन काका गाछक सग छड़केँ अपने हयि-हयि देखए ठाठा। मगने उठैत- छड़क वोय कीड़क असन मेठ अछि कि नहि, सेहे देखै। एककेटा गाछक छड़ देय काका अगदानी छेउ जे केते हए। नहिना गोठ-गोठ, कछु नमनी नेने छेउ-छेउ छेउ हयिनी होश अपन जगिनीक छेउ पकैड़ नहए अछि, नहिना तँ गोठ-पंगना कनुआए आमक आकान सेहे पकैड़ नहए अछि।

एकसँ दोसरा गाछक छड़ जनेमे दनिमा वेन-वेन वसैत जाए। कपनो गगिनी छुट जाइ तँ कपनो अंके वसैत जाए। अनेको पनपिसक वोय एक्को वेन दनिमा वोससँ उपन गै वढ़ै।

तैवीय काका पुछएपनि-

“वौआ, केते छड़ मेठह?”

वावाक पुनसुन सुन दनिमाक मुहसँ नकिठ गेठ-

“दसटा”

“अच्छा वड़वढ़ियाँ। आवसँ एतै आवाक जे मेठह। ओगनवाहियाँ गज जेनह आ जेठवो कनवह।”

नीक छसठ मेथेन। प्याथ-जोकन छेउ हुअ ठाठा। छड़ छेउ वनगिठ। ओगा सजमैत छड़क-छड़े नहि जाइ अछि। मुदा दानीम, आम, ठाम न्याह छड़सँ छेउ वनगिठ अछि। अगनमि अवस्था अवैत-अवैत गुवा-गुवा छेउ अपने पसए ठाठा।



गाछक सग श्रुत समाप्त भऽ गेल। जहनि पनसौती जगनीकें देय-भाउक जूनन पड़ैत नहनि ने बाड़ियो-हाड़िक अछि ई सोयिपुन काका दनिमाक संगे दानीमक गाछ वग पुहुंयव। पुहुंयवो देयवैत जे जे गाछ कहियो श्रु-श्रुसँ छैत छैत ओ आरू सून-सून भेल अपन वेथा सुना नहैत अछि।

वेथति मने काका दनिमाकें पुछयनि-

“वौआ, केने श्रु अछि?”

व्रियति होश दनिमा वाजैत-

“एकोटा गो”

“ए छैत व्रियति किए होश छी। जहनि समर आएत छैत नहनि सेन औता”

“केना औता?”

“समर अगुसाए एक नक-हेन कतैत नहैत तँ एवे कतैत”

○

शब्द संप्रदा : ११४६

घोरीक भाग

जहनि तेहिया वोपान ते-तन अर्वाति आ जासो गहियेने नहैत नहनि छैत काकाकें तीन दनिसँ व्रियति सोग गहिकऽ पकैत छैत केना ओना, जप्पन कोनो काजक अगनेनामे छी जाइ छैत जप्पन छोड़ियो दऽ छैत। मुदा काज वदेत पुनः आवा जाइ छैत। मुदा कहियो केकना कतयनि, घनेछ सोग छलिन। सोगो तेहेन जे जहनि नशिनी जाइत माछ श्रुंसी जाइत, जे ने वंशी जाकाँ जे वोनाक सुगन्धसँ श्रुंसी जाग गमवैत आ ने सहकऽ सका जाकाँ भजैत। मुदा तैयो तँ घाउ छैत छैत।

छैत कक्काक सोगक दोसरो कामस छैत। ओ ई छैत जे दुनू पनानीक वीच ने कहियो व्रियतिक संघर्ष भेल छैत आ ने नक्का-टोकी। मुदा आरू ओ सद्यः भऽ गेलैत।

वाग कहि ने, बुढ़िया श्रुंसी मुदा सोग तेहेन जे नोगेनहति नहै, सोगेनौ छैत। जसँ कोनो काज कतैमे मने ने छैत दऽ छैत।

तीन दनि पहिने जप्पन सङ्ग अनेसँ ननपूना गेल, एतेन जप्पनेसँ सोगक आक्रमण छैत काकापन भेलैत जे गहिया कऽ वेने छैत। ने छोड़ैत वने छैत आ ने पूजैत। सायनास जनिगी जीवैक अगुयास तँ पार-पारक हसिब जे छे सभुयति काज कतैत जनिगी येनसँ यथैत नहै छैत। मुदा जाकि अगुछे आमद-पुन्य नहैत जाक उजना आँकन जाकाँ दौत तन प्यटपट नहैत



छैन, जे आँकनक संग मातो खेक पड़ैना गजौन उठि कऽ देपैथ तँ सोहरेमे देप पड़ैना जे मानमे योनीक प्यन्य ब्राह्मण
अछि, कएि तँ योनीक मान तँ ओर समर सन्त-सन्तैत छठ जप्पन एकाधिकान त्रेपान जाँ छठ, मुदा जौगम हू साए नूपैआक
योनी छऽ जाएव तौगम कयि पहिनिहिनि नै अछि, मांगठिक काज छोड़ि योनी मूज्जिमक वस्त्रु वर्गिठ अछि अपन तँ हू
दैनिक कमाइ दह जाएना मुदा पत्नी तँ मानि गहि अपन सोमामे सज वनाह होइ, गछै आन सोमामे गौंन पटपटवए आका
दाँन यआनए मानवो उयति गह्यै। कएि तँ पत्नीक मान तँ पनविानमे दादीक छैन वावा-दादाक पकयि संगी। सुन काजक
सुनहेमे पट-पट मेने कही अन्त यननि पटपटाइते नहि जाए, तेकन उनो नहैना।

मुदा तैयो वियानिछेव जूनो वुहठिठ काकीकें पुछयनि-

“काछिने ने गोत पूनए जाएवा आइने ने सज ओनियान-वान कऽ छेव?”

ठाठ काकी कहयनि-

“घनक ओनियान ने हम कनव, हाटो-वजानक हमहि कनव?”

ठाठ काकीक यदठ नन्क देप ठाठ काका दोहनैछेन-

“वजानक काज की सज अछि?”

“आन कछि ने अछि प्याठि जोड़ गनियोनी आ अंग-गमछा कीनछिवा”

ठाठ काकी आठैन सुनि ठाठ काका मने-मन जोड़ैथ तँ देप पड़ैना जे कयि योनी पहिनिहिनि पनविानमे नै अछि, जप्पन
योनी नर, जप्पन कुनआ आ गमछा तँ सुपठ गूग-यूडा मेठा केनवो हए तँ जठमैइए मुदा नहैथ तँ वेवसा पुछयनि-

“आव की कोनो मान-दौन यछै छै जे ई सज छऽ जाएव?”

ठाठ काकाकें यिछेन जाँ हपटैठ ठाठ काकी वजनि-

“एक तँ याउन दहिक वदठ नूपैछे छऽ जाएव मुदा नर वस्त्रु नै छऽ जाएव से केहेन हए?”

वजौठ ठाठ काकीक आँपसि गोत ढवढवए ठाठैना श्रुत छातीक दनद वाँसक हाँह जाँ हहहए ठाठै-

“वहनि मनमा मनयि जेठ, मुदा अन्तमे मुँह नै देप पछै। गजानो तेहेन छैथ जे सजटा दुप ओकने घनमे देयनि।
यदठ जुआनी दुग पनानी मज, अदर वन्यक मस्टुगान-वपटुगान वेटाक वआह छए, तेकना पाँय हाथ वस्त्रु हमहूँ नै देवै
तँ दुगयिमे के देइ?”

○

शव्द संप्रदा : ४८०



साही

गामक पहि घटना तँ गाममे व्रियति हयथ मोनेसँ उठिगेल। उठवो केना ने कतै, अप्पन यनी तँ शहिसो ग्रह कहरक आ समाजो सएह मुदा घटना वदने शहिसक नस्रो वदै जाइ छै आ वहि समाज सेहो वाह पकड़ै छश। व्रियति हयथक कामस मेघ व्रियति घटना। व्रियति-क कामस मेघ यति व्रियति वनागेल, तँ गामक सवहक मनकें कुर्याति सुयति वनवर उगेल। जेहेन जेकन नंग-गाढ़ तेहेन तेकन यति गढ़गन। तँ एक नंगाह बै मेने आनो वेसी हयथ मनक पुनेम तँ तपन ने वदै छै तपन अनुकूष पुनेमो मेटे छश। पुनेमियो की कोनो एक्के नंगक होइ जे ओहिपन गपै पड़ै आ गपै पड़ति यानक पाणिजकाँ मोटाए उगै। जँ से नइ होतै तँ जेहे छै तसमे सँ कछि नौदमे उठै, कछि यनी पीतै आ कछि ओको घटै, जहनि वधिसँ यथैवाहि गाड़ी टीशन-टीशन वधिमो यथै, मथै कुमेघ मेने नसना-वाटमे छोड़ि आन-आन दौड़त यथै। ओना, गामक व्रियति घटना देय सवहक मन उठै मुदा जनिगीक काज पकड़-पकड़ हयवै गेल। मुदा केनो हयथ तैयो तँ वाँकीए नहि गेल, सोहन्गी नहियँ हयथ। नहियँ हयथ तँ की होइ? अहसँ वेसी तँ नहि गेल, तँ वहुमोसँ ने समाज, देश सभ यथै छश। तपन गामेमे कोन उगटन नइ जेथै जे गाम-समाज बै यथै। मुदा गामो तँ सोहन्गी मनयि ने गेल अछि जे कियो गामो उरवथ बै नहै। से तँ अछि सेहो तेहेन अछि जे हजान कागकें एक्के वेन नहि दै। जहनि पूजा कन काज छी तसँ कहि हयथक काज श्रुत गोड़व थोड़ै छी। तपन बै छी तपन कए हुनू नंग होइ।

यौवट्टी पनहक ज्ञानक यथी सभसँ वेसी नइ गेल। नवकी पनजिनगी सभ थै-गोवन छोड़ि-छोड़ि पहिने पाणियँ नए ज्ञानपन पहुँच गेल। मुदा तँ कपुनियो दैदी आ धुनियो दैदी ओहने अगुआए छैथ जे पहिने पाणियँ नए पहुँचति। एक तँ वेटा-पुतोहकें डाकैने देती जे एसँ नपित्ते नीक, ने तँ ए यौथापनमे अपने घैठ उगवी। तहूमे नवका आगि गाममे पजाना माघमे जँ अगको यथग धून भेटए तँ ओकना छोड़ि देव वेवकुश्चि ए छी, मथै अपनो यथि-पुना कए ने घनमे कुरुआ जाल। ओना हुनू गोजेक घन ज्ञानसँ वहुन हयथ नहि, मुदा उग-दून कोन वाग मेघ उगोक वाटमे दसटा गप कतैवथ भेटथ तँ वेसीए समए उगन आ नहियँ भेटने हुनो उग नइ जाइ छश। सएह हुनू गोजे-पुनियो दैदी आ धुनियो दैदी-कें भेटै। जवावदेहियो तँ कम नहियँ छैन अगकन वागसँ उपन उग अपन वाग बै नपति तँ पुनियो दैदी आ धुनियो दैदी कथीका तसँ नीक तँ नवकीए, जे कम-सँ-कम अपनो हति-अपेछति उग नसगन वाग वपै छैथ।

संजोग तँ संजोगे छी, यहै काज कतैक संजोग हुअए आक मोज प्याइक, नीके होइ छश मथै ओ याव वदै कुसंजोगे कए ने नइ जाल। पूवसँ पुनियो दैदी आ दयछनिसँ धुनियो दैदी पहुँचथ। पुनियो दैदी धुनियो दैदीसँ जेठ तँ जेठक आदैन कतै धुनियो दैदी ज्ञानपन यदिसँ पहिने स्वागत कतै पुनियो दैदीकें टुसा दिअनि-

“जहनि पावैने दनि पनविन हड़वड़ जाइ नहनि दैदीकें दैथै छनि!”



अपन स्वागत देय पुगियाँ दादीक मन पुशीसँ पुशियाँ गेथेना टुटैत दाँतक मुहसँ मुसुकी दधि छाउयनि। अपन यनी पुगियाँ दादीकें येनहि जे गामक वाग हमना छोड़ि दोस वुहवे ने कएल। मछै साग पुगोहु हाथे मानि-गाना किए ने प्याश हेनी। प्याए, पुगियाँ दादी पहिने आँपि उग रगत दसि नकथी तँ वुहपि पड़ैत जे जग्गिमासु वेसी अछा घुननी दीदी दसि देखैत वज्जि-

“जै घुननी, कहुना मेथै तँ वेटीए मेथै, आर-काएहिक नव-नौतुक हमन-नोहन वाग सुगतौ। देह देय सग अपने मोटाए अछा मुदा तोना नै कहवो से केहेन हए।”

जग्गिमासा नैत घुननी दीदी मठसानि दैत वज्जि-

“कोनो तेहेन गप छैन दादी?”

पुगियाँकें सग दादी कहैत आ घुननीकें दीदी। ओना उमेनोक हिसावसँ उयति छश मुदा दुनू गामक पुगोहुए वनगाम आए छैथ। दादीक आदसँ दादी आनो अह्वाएति होश। पहिना संग्रामक संग सन्तान, व्रशिषस आदि सग अगुआ-पछुआ वनगियाँकें प्यैत पहिना दादीक मनमे सेहो उठैत। सोहरे वज्जैसँ नीक वुहपि पड़ैत जे अठकान-छन्द वनवे किए कएत जग्गिमासु ओकन वेवहने नै होश अठकान शैथिमे दादी गामक यौह्दी वागहि वाजए छाथि-

“एहेन आहलह तँ एक गामक के कहए जे पनोपट्टामे केतौ ने देखै छी, जे?”

दादीकें बहिषद होश देय दादीक जग्गिमासा तोन मेथेन। ठपैक कऽ पुछयनि-

“से की, से की दादी?”

पहिना आमक गाछक जामि पाकठ आम देय हमाड़-हमाड़ जेवा पाकठ आम पसवए याहैत, मुदा जेवनिहिन ई नै वुहपियैत जे पाकठे पसत आ काँय नै पसत। हँ एहनो होइ छै जे वेसी पाकठक उमटीक नस सुपने असागीसँ पसैत मुदा जे उमहा पाकठ छै ओ तँ ओहिना छै पहिना उमहा काँय होइ छश पहिना दादीक मन छगुनासँ छनकैत नहैत जे एहेन तँ केतौ ने मेथ से गाममे केना हए। मुदा नऽ तँ जेथ!

मेथ ई जे जग्गिमासा काकाकें तीन वेटी आ दू वेटी छैन। तीनू वेटी पढ़ि-लिपिकऽ आने जकाँ नोकनी कए गाम छोड़ि देखैत। तीन नऽ जेथनि कि साहीए-मे से नै कहि, मुदा जग्गिमासा काकाकें एको पार मदैत नै केथनि। ओना तीनू माँइ अपना-अपनी पढ़ि-लिपि छैथ आ नीक नोकनियो छैन। पहिने वेटी डाकटन पकि संग सेहो वाहने नहै छथनि। छोट वेटी वैधव्य नऽ जेथैत। असमए वेटीकें बघिवा मेने जग्गिमासा काकाकें जवदस धक्का मनमे छाथैत। अपनोसँ वेसी काकाकें छाथैत। एहेन कोन माइक छाती हए जे अपने सुहागिनी आ वेटीकें वैधव्य देयए याहए। मुदा उपाइ की! दुपक तँ सगसँ पैघ दवाइ नोन छी। जेते नोन हड़त तेते नानी दुप मेटाएत।

पहिना तेहिक संग मक्खन, छाथि मोहि आगपि नोहियामे यढ़ा घी वनकौठ जाइ से दादीकें वनकौठ ने होना तँए कृपुव्य नहैथ। वज्जि-



“आव तँ अपनो उमेन ढेनी भेठ तैपन नागा-जगम एहेन काज नै देयने छैथै से गाममे देयै छी”

दादीक वाग सुनगहिनकें आनो जगिआसा वढ़ा देठकेंग। एक्के-दुइए सग पनगिनगी एक्के वेन दादीपन जोन देठकेंग। थकथकास दादी वजगि-

“जगनयनक नीनू वेटा-नूपयन, गुनयन आ ब्रियानयन-कें जयन नोकनी छुटैग जयन गाम आवीसाही नऽ गेठयनि”

दादीक अजानसँ दादी संतुष्ट नै भेथि, मुदा संतोष नै भेथेन तँए पूनक पुनश्न केठयनि-

“नऽसँ पहिनिहिनो भेठ छेठयनि?”

दादीक पुनश्नसँ दादीकें क्रोध उठैग, वजगि-

“जोगा ठोक केवाड़ यौकी काटि-काटि वेंटवाना कनैए तेग। होशै जयन बुझिहक। आकभिनयनकें इशाना होइ छऽ महुँषि वेटा अपन वेटीक वआहमे याथिस ठाय नूपैआ जयन केठकें मुदा छोटका भाएकें पाइ नै देठकें तँ नून-तेठ ठगा केठका की ग्रह सहिआ भैयानी छए?”

दादी वजगि-

“जयन तँ कमाइयो ने सवहक सग नंग होतै, ओ केग। मथित?”

तैपन दादी वजगि-

“सएह ने देयहक। जेकने वेसी छै सएह पहिनि कहैठकें जे हमन। एते अछि, सग मथि कऽ पनगिन यथौ”

○

शब्द संप्रदा : टंटर

समयौ पोयै

पोयै कहिय। पुनौठ गेठ आ के पुनौठेन ई मथिगिनयनक शहिसे जकाँ अपन बनहिनाएछे अछि, मुदा एते गामक सग भाँए जे पोयैक वगानी ने एकोटा गाछ-वनीछ अछि आ ने आन कोनो यीजा ओगा, पोयै नमहन नहने नंग-वनिगक जसिसा-पहिनी अछि। कयि दैक पुनठ कहैए तँ कयि नाजा-नजानका मुदा जे होउ, हजान वन्यसँ अपनक पोयै जून अछि, जे सग भाँए। शूनमे पोयैक महान जेहेन नहठ हुअ मुदा अपन हड़ि-हड़ि गेठ अछि आ पोयैक पेठो गदियाह नऽ गेठ अछि।

गाममे एकेटा ग्रह पोयै अछि, मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम नहिनी पोयैक अभाव गौआँकें नै हुअ दऽ छैग। याकन-यौड़ान पेठ अपनो एछे, मुनहन जकाँ दनजानो ठेक-वपानी सदऽ।



गाममे सभसँ पुनानो आ ह्मटगानो पनविान मात्र सगभैय्याकें नहैवेना पोपैनो हुनके सवहक छएना केना भैवेन से तँ गीक जाँ कनिको बै वुहए अछि मुदा पहियासँ देखै छी पहियासँ हुनके सवहक कव्जामे नहैवेन अछि ओना पोपैन तँ गामे-गाम अछि मुदा आग गामक पोपैनसँ ऐ पोपैनक अछा पहयाग अप्पनो अछि ऐ ने एते गमहन कोनो गामक पोपैन अछि आ ने यौवगाथी महानक घाटा एक्के घाट नहने पानो नहियँ उगैत ठेगना आग-आग गामक पोपैनमे अछि आग गामक पोपैनमे वऽ वेसी अछि तँ एकटा-दूटा घाट अछि एकटा मनह आ दोसन जगना छेव तहूमे गंग-वनिगाक वेवहाग वगए अछि, जाइक यथैत जाँ कहियौ गाममे आग-छार उगै छै तँ गामे सुन गऽ जाइ छै, मुदा एकोटा पोपैन नहने आइ यनकि शहिसमे कहियौ ऐ गाममे एना बै भेए अछि ओना गामक वगावटो आग गामसँ गनिग अछि केतो गाम पूवे-पछमि सूनुयमास-उठ-गढ़ैनक वगए अछि जाइसँ पुनवा-पछवाक होकमे आग उगति युआ-पोछा जाइए

वनि जाइक पोपैन नहने अगगौआँ तँ पोपैन मानवे ने कनैत मुदा पोपैनक सभ काजक पुनानि तँ होइते अछि, तँए गौआँ छेए बैनसगा कियौ अगगौआँक गपपन ययिगो ने दइत। सभ ग्रह मानि यथैत जो कियौ अपन मुँह दुइत कनैत गीककें अथवा कहने थोड़ अथवा गऽ जाएत आ अथवाकें गीक कहने थोड़ गीक गऽ जाएत। जाँ एहेन वजगहिन अछि तँ ओ अपन मुँह दुइत कनैत। सभकें अपन-अपन गुल्ल-यन्म होइ छै, से तँ अछि ऐ यातू महान घाट नहने सवहक काजो यथैत अछि तहूमे आग गाम जाँ कोनो नोक-नाक ऐछे नहि, जो ई घाट पुनुयक छिए तँ ई घाट जगनाक, ई अछि क पुनौठ छिए तँ दोसनकें नहाए देखनि कि नहि से हुनकन मन-मनजी छिए। कियौ जाइ जाइ पोपैनक पहयाग वगैने छैथ तँ छैथ पोपैनक पहयाग गछै जाइ होइ, मुदा होइ-सोवत आकि यानमे जाइ किहाँ नहैए तँए कि ओकना कुमान कहि काज कऽ देवत आम जेगहिनकें आम याही आकि ओ जाछ-जाछी गगत। हँ, ई वात जानूत जो आमक जाछ केना होइ छै, केना उगौठ जाइ छै, केना ओकन सेव कए जाइ छै एकन जागकानी नहक याही। जाइ जाइ छे अगगौआँ नयै छैथ ओ तँ ईहे कहना ने जो जाइक काज की होइ छै? जाँ वीय पोपैनक पागकि गाप मागए जाए तँ जाइ पोपैनक कनिछैने उपयोग कनै-जोकन गहाइ-योइक पागि नहना, ओकन वीयक गाप गपैक जानूतो की नहना? ओहेन पोपैनक मागियँ केतो हएत जो एकटा घाट-जो गछै समिटीए-ईटाक कए ने होइ-वना वाँकी गाममे मोथी नोपि जेव वगा छेव आ जाँ कहि गाममे आग उगति तँ छूत-अछूत कहि गामे जाना देव, मुदा आग उगवे ने कनै से ने सोयव आ कनवा जगियँ कऽ पोपैनकें अघट वगा दुइत कऽ छेव, गहाइ-योइ-जोकन बै नहए देव तँ ओइमे दोग केकन? प्याएत जो होइ, मुदा यातू महान घाटो आ वनि जाइक पोपैनो तँ अछि ऐ

सुनहैसँ गामक सगभैया पनविान जोत-यौकियौ जेव जाँ सभत नहए अछि ओना, वीय-वीयमे वाढ़-जुमकमे थोड़-वहुत उमन-प्यामन वगवो कएत तँ ओकना पुनः सेनयि सभत वगा छेए जोए मुदा गवसि दसि बै देख, गूतो दसि देखने तँ गूत उगवे कनै छै मुदा तेकनो गवैक तँ उपाय होइते अछि

वावेक अमठानीसँ सगभैया अपन पनविानक पहयाग पनोपट्टामे वगैने नहए अछि ओना, साग गौरक भैयानीमे तीग गौरक पनविान गवए गऽ जेव जाइसँ एगो पोढ़ी अवैत-अवैत सागसँ यानि भैयानी नहि जेव। साग गौरसँ सगनह हेवा याहै छेए से बै गऽ यानपिन उगैत जेव, तेकन कागस भेए जो एक गौर वेटीक वाढ़मि दहा जेव। देवुआन गक्षत जाँ वेटीक आगमन जोड़-पछा जो आवए उगैत से डिके सागसँ सगनह तँ नहि, मुदा एकसँ एगानह जानूत गऽ जेव। मुदा एकसँ एगानह होइते हुनकन मुँह कहियौ मथिन गऽ भैवेन। मनक वसिवास अगत यन विनये नहि जेव जो पुनकनिकें अपन गति छै, ओ



अपन गश्मि-गश्मिसँ यैए। जँ से गहि, तँ एक कम्पनीक वस्तु एक नंग होइ छै मुदा तस्मे ओहने मेठ-पाँय केना गऽ जाइ छै जे मेठ-पाँय मेठोपन यागि-पाँय वा पाँय-छहसँ आगू-पाछू नै होइ अछि। गऽ तँ ईहे सकै छै जे एक नंगाहे होइ वा एकसँ पाँयो होइ वा आनो अन्तर्गत गऽ सकै छै। मुदा से कहाँ होइ? जहिना एकसँ साए यगिगू आ साएसँ एक दसि गू, पयास तँ वयियेमे नहान। तँए वेटा-वेटीक वाढि अचौ आकाजौदी होउ, मुदा अपन व्यासक अगुकूठे नैह आएस अछि आ नहो कन।

दोसरा भाए जे वयियेमे कुमेठा मेठासँ गाम छोड़ि पिटेश गेवा से पुनः घुमकि गहियै एवा। वाठ-वोथकँ सेवाक जूनीन होइ छै, होइ एवै आ सभ दनि होइ नहो। मुदा जप्पन वरह वाठ-वोथ येन गऽ जाइ छै, जप्पन हुनक व्रिक्त की कहै छै जे तँ आनक-आन नै दुहा सकन। ओ अपने अपन कर्तव्यकँ गनियानि कऽ जीवन-पथपन यथान। प्याए जप्पन यनियि भूमि छी तँ जेनए वास कन ओकने मातृभूमि वना ठेवा। तूमे ओइ वय्याक तँ अचकित वनियै जाइ छै जेकन जन्म जेनए वनियै हुअ। मुदा पुनश्च तँ अहूँ आगू अछि जँ यनी स्वर्ग वा वैकुण्ठ वनए याहए जप्पन अपनमे वंटी कऽ वन आका समन्वित गऽ कऽ? जँ से गहि, तँ हम केनए छी ई तँ देवप पड़न? मुदा मथिथिथिथि भूमि तँ वरह भूमि छी जे सभ दनि पुनर्जातिपटन नहै अछि, अपनो अछि आ आगूओ नहो कन। जँ से गहि, तँ कहाँ अन्तर्गत पटकथ आ कनोड जप्पन? सभ दनि जहिना नहै नहो अपनो अछि। मथै केनोसँ हमहूँ कहिए जे छीह।

तेसरा भाँस्क पत्रिा ए छै आगू नै वढैए जे सनीसँ गनियै नहो। मगसक वयियेसँ गऽ गेवा। जसँ नै वआह केथेन आ नै कोनो भाँस्क वाग-वयियेमे कहियै नहो। नहो वाँकी भैयानी मथि घनक मोजने समाप्त कऽ देठकै। मुदा तस्मे हुनको मगमे कहियै दुप्लो गहियै जन्म देठकै। जप्पन भाय सभ ठामे वैसैथ तँ गजै-गजै वपैथ जे 'भगे सभ कछि छी, जे मगक माथि ओ सवहक माथि' मुदा भाइयो सभ वनि कछि टोकना देगे युपे-याप सुनिथै जे अनेने टोकने आनो वनदियाएवा से गहि तँ एक होक वाजिगानद जाँ वीसा हाथमे ठेवा। आ जेमहन मग होइ तेमहन वदि हेवा। असगनूआ पत्रिामे एककँ व्रौडने पत्रिाके उसन होइ मुदा जगुआनी जाँ एकटा टांग टुटनहि की हए। एक भाँस तँ पत्रिा-टोसँ ठऽ कऽ समाप्त यगिगढ़ि छै। हम सभ तँ कहूना तैयो यागि भाँस वंथ नहो कन वाँही ठामे जानि छिड़ै नहो मुदा तँए कश्चि गाछसँ हटै नहै, एहेन तँ नै होइ।

पत्रिका अमठानीमे याकन-यौडगन, यौघाना घनक आँगन हथिसान सभ दनवज्जा, यग्नकूप सदृश रान, सनोवन सदृश वनि जाडकि पोषैक वीथ सवहक जनिगयो संयमति नहै तँए पत्रिामे हन-हन प्यट-प्यटक पुनश्च कए उडन। ओना सातो भाँस्क सातो काज सात नंगका जनिगी छै सातो उपयोगी मुदा गुप्त-वेवहन आ उपयोगक हिसावसँ छोट-पैघ। हन-हन प्यट-प्यट नै होइ कानस एकटा दोसरो छै जे अपन-अपन वृथकि उपयोग कऽ स्वर्गात् नूपसँ सभ अपन-अपन काज सम्हलै छै। एक काजमे नै कनैक वपेना गढ़ होइ-जे एना-हो, एना नै होइ-मुदा एक वयियेमे तँ से नहो होइ। समटव वछानक सुप्य जहिना सुगन्धिनकँ होइ, नहो नै समटव पत्रिाकोकँ होइ। छोट ओसा नहो आ वय्या वेसी नहो तँ ओघना-ओघना पसवे कन। प्याइओ गनि छपि-वाटी छुटन, जहिना वस्तु वेपानक सहायक छी नहो वेपान उपयोगक जइ वस्तुक जेते उपयोग जनिगी छै होइ ओ वेपान ओते यानि मुदा पुनश्च अछि जँ सभ छुट छुट छी तँ देवताक वीथ वंटाए कए अछि? जँ देवताक पनसाद पनसादे छी जप्पन महोदय कए वाँन छैथ?



अप्पन घनी सागैया पनविानमे घनाडीसँ छऽ कऽ वाय घनीक जमीनमे दुइर वेन वँटवाना भेठ छैथैन जे पूटे-पूट भेठ छैथैन मुदा एवेन नूप वटैठ गेठ। गतिनयिा गुमनाहट आवागोठ मुदा पुठिकऽ आगू गऽ वजैठ कयिो अपन डो गे वढवए याहैथा।

जहनि सुप्पठ जायैक वीय आगहिवा पवति यवैक उँए जहनि पोपैक छैहै जाकाँ सागैया पनविानमे उँए छैथैन। कानासो अछि जे कहियो केनए जे कँयका ईटापन पपड़ा घन वनौथैन सएर अप्पनो घनी यथि आवागोठ छैन। गयियाँ जहनि मुसहैनक माटी गनैठ जहनि अकासक जनेगन जाकाँ सुटठ पपड़ा छग जगोठ होइत। सुदय कसिनक घनी याहे जेठमे काज कनैकाठ वनया हुअर आकाँ सुगठि नागि, अगन कोनो गहि जहनि गोबैक दुगू गग एकै नंग भेठे उगटा-सुगटाक पुनसूने गहि, पहिठिका यदुँक यानूगग वनावे होइ छैथे आ जे वँयठ अछि ओ अप्पनो ऐछे, जहनि चोनायिक, मुदा आगुक जे सगि-मांगवठ यदुँक वा अग्न जे वसूत अछि ओ एकगगुए गहि, संयुक्त पनविानक एकाकी नूप जाकाँ वनौठे अछि जहनि जगमौटी वय्या छोटसँ पैघ वढैत सनिश्चि मागवे गहि, महामागवो वगैठ अछि मुदा वएर मगुप मगुप पस्यान अछियामे जप्पन जवैठे जाए छैथे तँ पैघसँ छोट वगैठ-वगैठ छेथि जाकाँ वनौठ अछि जहनि गे गऽ नहैठ अछि ओना, पूटे-पूट जमीन वँटनौ जहनि छुनकावठ केश कटवैकाठ सग वनवनि गऽ जाइ छैथि जहनि वायक जमीनमे कनी घटयिो-वढी भेठैन मुदा घनाडी आ पोपैक कोनो नहैक कनी-वेसी गऽ भेठैन, सग अपन-अपन उपयोगक अगुकूठ नहै आए छैथि तँ सागैया पनविानकें गामक ठेक एके पनविान वुहने कयिो कछि वजैठ आ गे कछि पुछैत। जसँ पुनवा-पछवाक कोनो ठसैत गहियेँ छैठेठ। जप्पन ठसैते गे तँ असन कएि तेलवे गहि, ईहे वुहैत जे जहनि गाछक डानि सुटने सुठ-सुठ थोडे वटैठ जाइ छै जहनि अगेते देह नगाडने तँ अपनो नगाडा छवे कनत। मुदा से गे भेठ, गऽ ई गेठ जे साग मैयानीमे तीग गौंसकें सुप्पने गाछक डानि जाकाँ यानि-टा नहैठेठ आ नहू यानि दूटा वँहयिाइ गेठैन, तँ सुठ-सुठक आशे गे नहैठेठ। मुदा दुइयो गौंस नहने यानि मैयानीक पनविान पसातै-जोकन तँ गऽ गेठ। गऽ वऽ एवे भेठैन जे एक गौंसकें एक आ एक गौंसकें तीग वेटा भेठैन। एक नहैठो मागवो वयिान आन्थिक वयिानमे वटैठ नगाडा-नगाडी सुन भेठ।

जप्पने तीग गौंस एक दसि हए आ दोस दसि कयिो असगने पड़त तँ गसियति छह हाथ पैक जगह दूटा हाथ-पएन हँपवे कनत। मुदा यदुँक तँ ओइठाम गे हाँप यानूकान अडियैत जौठाम ओइठहिनसँ उढयिा-दोवन होइत, से तँ पनविानमे गऽ गेठ छैन। वयिानवाग पनविान सग दगिसँ नहैठेठ जँ से गे नहैठेठ तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन पनविान मटयिामेट गऽ गेठ। मटयिामेट गहि, केते जहठ भोगठक तँ केते अस्पताठ, केते शँसीपन ठकठ तँ केते कपान शोडा मनत। मुदा वयिानेक यथैठ गे पनविानकें गे कहियो सम्पनादायिक आ गे जातिक हवा कनयिो उठैठकैन। समैक पुनवाव तँ सग कछिपन पड़ति अछि से तँ पनविानमे भेठैन। ओना जोकना समए कहै छए-दगि-नागि-ओइमे ओतेक वदवाव कहँ आएठ, कएिक तँ अप्पनो वानहे मास आ छवो ऋतु होइत अछि अपन-अपन गुप्त-यन्म तँ वँयौनह अछि मुदा एकटा गऽ वऽ तँ पनविानमे गऽ गेठैन। ओ ई जे एक गौंसक वेटा-सुप्पाम-मैयानीमे असगने छथनि। असगन भेगाइ तँ वऽ पैघ वाग गहियेँ भेठ, मुदा पतिाक मैयानीमे छोट गऽक वेटा नहने कछि गऽ वऽक सम्भावना तँ जगमयिेँ गेठैन।

वावाक अमठदानीमे सागो गौंसक वीय वँटवाना भेठैन मुदा ओ पुनः समटा गेठैन। कानास ई जे सुनमे तँ वँटवाना भेठैन मुदा तीग गौंसक पनविान घटने सुन समटा गेठैन। केना गे समटाइत, तीनूकें कयिो पानयिो देगहिन तँ गहियेँ नहैठैन।



यातू माँइक वीय एहेन सम्वन्ध वनए नहैएन जे मीन-मीनौजीक पनसिथितियि पैदा गै छैएकैना। तेकन कागस मेथ जे यातू माँइक यातू नहैक कागोवात नहैएना। एक कागमे यातू गीनेकें नहै वैयानिक मतभेद होइक समभावना नहै छइ। कएक तँ एक्के काग केतो ढंगासँ कएए जा सकैए। तहूमे जायन समैक मोड़ अवे छै जायन कागमे मोड़ अवे छइ। समझम गछै नहि अवी मुदा नहियँ अवे छै सेहो नइ कहए जा सकैए। यातू माँइकें पनोछ मेने पनविनामे मीन-मीनौजीक समभावना वनैएना। समभावनाक कागस मेथेन जे एक माँइकें एकेटा वेटा, जायन कऽ दोसरकें तीनटा मेथेन। दू माँइ तँ भेटाइए गेथ।

छोट माँइक वेटा नहिति श्याम मैथानीमे सगसँ जेठ, प्याथी मैथानीमे जेठ नहि, पढ़ै-ठपै दसि सेहो वसिष हुकाग नहैना। एक तँ पढ़ैक ठाग दोसर सुभ्यस्य पनविना नहवे कनैना। मुदा तीनू माँइ घनश्याम जेठौं डिया वेसी। सदकिाठ सगिमे-पनकिा आ जेठे-पनकिा उगटा-पुगटा देखैना। पढ़ैपन तँ ओतेक गपौन नहि, मुदा छोटोपन वेसी गपौन पड़ैना।

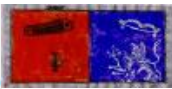
अयन यन श्यामक वरियामे कोनो हुजा-भाव गै आएथ छैएन जइसँ कोनो नहैक नीक-अथवाक पुनश्च गै उडथ छथ। जे कछि कागोवात छैएन सामूहिक छैएना। तहूमे एकटा जवनादस गुप्त श्याममे छैन जे घनसँ वाहन यनकि जे कोनो काग होइ छैन ओ तीनू माँइ-अपना ठाग। यातू-कें जतून जागकानीमे देखै दइ छथिना। मुदा मैथानीक संग दियिदनीसँ तँ वनवैत माँइ जाइत अछि। एक वाप-माए वा सहेदत पतिनी-पतिप्राश्निक वीय जे सगिह नहैना ओ तँ यातू गामक यातू दियिदनीकें एने तँ कछि-गे-कछि गडवड माँइ जाइत अछि। कागसो छै, मथिथियथेमे एक सीमा कागक गाम आ दोसर सीमा कागक गामक वीयक जँ दूनी अछि। तइमे प्याग-पाग, नहन-सहन, वोथी-वामी इत्यादिमे कछि-गे-कछि अगन वनए आवा नहथ अछि। तहूमे जइ इकाकेमे वाढक उपद्रव कम छै आ जइ इकाकेमे वेसी छै, हुनूक जीवन शैलीमे सेहो वदभाव अवे छइ। जायने जीवन-शैली वदभाव जायने जीवन पद्धति वदभाव। जायने जीवन पद्धति वदभाव जायने जीवन वीथ वदभाव। छै छइ। नहना गाममे अयन-डाहा नहने कछि-गे-कछि ठूनी कुसुतीक माँइ जाइ छइ।

नहना मध्य मथिथियथक भाषामे पश्यमि-मोणपुनी सीमा-क्षेत्रक सुआसनि एने, भाषामे कछि-गे-कछि नूप वदभाव नहै छै जइसँ भाषापन माने वोथी-वामीपन पुनभाव पड़ै छइ। नहना पुनरिया इका वा दखिनपनरिया इकाक पुनभाव सेहो पड़ति आवा नहथ अछि। जहाँ यन किटुमैतीक पुनश्च अछि ओ तँ मागपुनसँ मोहनिनी आ जगकपुनसँ समिनिया यन होइतो आवा नहथ अछि।

एकाएक श्यामक मनमे मैथानीक पुनरि सगिह कछि कमए ठाठेन। सगिहमे कमी एने कागमे कमी आवए ठाठेन। जेना सुनसँ पनविनाक कागक जागकानी सगसँ दैन अवे छैएन जइमे कछि कमी आवए ठाठेन। तीनू माँइ जेठौं डिया सोभावक नहवे कनैथ, तैवीय कागक आदेश कम पावै आनो जेठौं डिया गऽ गेथ।

अयन यन घनश्यामकें श्याममे कोनो कमी गै देख पड़ैना। तँ हसिवाक कोनो जतून गो नहियँ वुहैथ।

श्यामक मनमे सगिह कमैक कागस मेथ जे पनगी सदैवकाठ कागमे घन-घन पियवैन जे सम्पैत अपन आ सुप-मोण दियिद सग कनैए! पहिने तँ श्याम पनगीकें सेवक वुहैत आवा नहथ छथ, ई गै वुहै छथ जे दियिदनीसँ दियिदनीसँ गऽ होइ छइ। मुदा वरियानो तँ कछि छरि, अड़ कऽ पनगी पूजे कनैकाठ पसियि-पसियि वाजए ठाठेन-



“जइ पुनुपुनै कोनो वाग वुहैक ज्मगे ने छै ओ पुनुपु नहि, पुनुपुन हउ छी!”

पत्नीक वाग श्यामकें छातीमे चक्का देठकैना मग कहए ठाउँमे जे ‘हउ’क अन्थ तँ ओ होश जे कप्पन अछि आ कप्पन अपनो हउ जाएत तेकन कोनो ठेकाग नहि जे पाछु दसि ससना ओ पौनुष केना पाव सकैए? मुदा अप्पन मुँह पोछैक तँ समए नै अछि सिगिखि सुनैक समए अछि।

जहना वाउटी मनीपानमे नेवो आ यीनी न्यपि देगे तँ सनवा नै वगैए नेवोकेँ काटीगाड़ किऽ नस मथिँठ जाइत अछि नहिना यनिगिथीक अछि जहना एक शव्द वा एक पाँता पढ़ासँ वुहमि नै अवैत वृत्की दोहना-दोहना पढ़ासँ वा ऐगठा-पैछवा पाँताकि मथिगसँ वुहउ जाइत अछि नहिना ऐगठा वातक प्रतीक्षामे श्याम आँपि उठि पत्नीपन देखैना।

गजैतक पानिदिय पत्नी वुह गिथि जे ऐगठा वाग सुनैक प्रतीक्षा कऽ नहउ छैथ जहना मधुमाछीक सग छातीमे एक्के नंग मधु नै नहिना, कोनोमे कम तँ कोनोमे वेसथि नहिना आ नऽ संग-संग गव-पुनाग-पहठिका-पैछवा-सेहो नहिना तँ ए ठिकिया कऽ ओर छातीकेँ पकड़व चुचिया नी छी जइमे उगाडगी मगठ गवका मधु नहिना कएिक तँ पुनगा मधु दवाइ-दानू छेठ नीक होइ छै, प्याइछे तँ गवके नीक हएत, नहिना वकीठ जाकाँ अपन पक्ष न्यैत पत्नी वज्जि-

“अप्पन चर्ना अहाँ एतवो ने वुहै छए जे यानू माँइक वीय पननहटा वाउ-वय्या आँगनमे अछि पननहोके प्यन्य तँ सागीनदेमे सँ यथैए एके नंग छाती-कपड़ा, पेनाइ-पीनाइ अछि, मुदा ई वुहै छए जे ऐमे अपन केतो हएत आ दियिद-वाइक केतवे छैन?”

श्यामक गजैत चँसए ठाउँमे पत्नीक प्रियानमे कछि नान्व वुह पड़ैत मुदा से स्पष्ट नै नऽ सकत! प्रतीक्षाक गजैत उठि श्याम आगू दसि नाकए ठाउँ। तैवीय अवसरक ठाउँ उठैत पत्नी दोहनौकैना-

“पननहटा वाउ-वय्यामे अपन नीगठा अछि वाँकी वानह तँ मैथानीए-क मेठा तैसंग अपनो दू पनानी छी आ ओ छह पनानी अछि कनी जोड़ किऽ देय्यि जे अहल हिससा मे अपन केतो हएत आ केतो हुनका सवहक होतैना”

श्यामक मग सहमैत। सहैतो उठैत- जे पत्नी अक्षयसः सत्य कहि नहथि हेना सम्पैतक अन्थ सुप-मोग होइ छै, पनसादी वाँटव नहि।

पूजासँ उठि मोगन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोन पाड़ि कहैथनि-

“घनश्याम, दुनियौक तँ वेवहने मैथानीमे नीग होएव नहउ अछि अपनो सभकेँ कम नै नमिहठ गाममे देखै छए जे केतो छौड़ाकेँ मौछक पन्हे ने आएउ नहै छै आ वापसँ मगि नऽ जाइत अपना सभ तँ सहजो योगन-पूगन मेथौ। नीग नऽ जाह”

जेना घनश्यामो प्रतीक्षेमे नहए नहिना थॉइ-दे वाज्ज-

“मैथानी, सग दनि अहाँक आदेश मानैत एथौ, आइ नै मानव से उयति हएत। मुदा अहाँ जहना जोड माय छी नहिना तँ नामो-वठनाम अछि नथै ओ दुनू छोट माए छी, जे कहवै से कनत। मुदा तैयो वनि पुछने कछि नै कहवत”



“वऽ वढ़ियाँ, अयन जा कऽ पुछि छिहका सुग किऽ उँ छी नयन सेन गप कऽवा”

घनश्याम उँ किऽ ब्रदि भेठ।

नीनू दयिदगियाँ आ हुनू माथोकेँ एकानि कऽ घनश्याम पुछिछक-

“सवहक वीयमे कहै छी। मैया वजा कऽ कहैछेन जे मीन गऽ जाह से की ब्रियाय?”

वठनाम कहैछैक-

“ब्रियाय की मैया, ओ असग छैथ तँ जीविए छेना आ हम तँ सहजे नीनू माँइ छी। हुनका जे मनो पनाप होतै तँ ने कियी डाकूनो ऐगम छऽ जाइवथ होतै आ ने वजासँ दवाइ कीन किऽ अगैवथ होतै।”

घनश्याम-

“सवहक की ब्रियाय?”

पहठि दयिदगि-

“अपन पनविन वुह गौनी जाँ दनि-नागिपटै छी तैपन जे पाँयो मनिट याहमे देनी होतै तँ साँढ-पाग जाँ गऽ कऽए छाना। मने नीक हएना जाओ हऽएक हएना।”

सुगि उँ याह पीव पाग प्या श्याम घनश्यामकेँ सोन पाऽएयनि। अवाति घनश्याम छामे वैस कहैछैक-

“जे ब्रियाय अहाँक अछि मैया, सएह हमनो अछि अपनो वाँटि छिअ।”

घनश्यामक वोषी सुगि श्याम सहमथ। मनमे उँछै, हम जे वुहै छिए तऽसँ मनिन ने तँ वुहैए मुदा वात तँ आगू वढि गेठ आव जाँ पाछू हटव सेहो नीक गहि वजा-

“वँटवानामे कोनो वेवयाग तँ छहे गहि सन कछि अदह-अदह भेठह। नयन वाप-पुन्याक वगैठ जेगैस होइ से तँ तोहि वजावह?”

श्यामक ब्रियाय सुगि घनश्याम कहैछैक-

“अहाँ पतिासँ हमन पतिा जेठ छथ। संयोग नीक नहैछेन जे मनीजी ने भेठेन। नयन पतिाक अथकानक हसिावसँ आइ वँटै छी तँ हुनकन जेगैस केते होतै से तँ हमन हएन कनि?”

श्याम कहैछैक-



“देप्पह, नमसा कऽ बै वाजहा सग दनि अपन सगमैया पनव्रान ‘व्रियानक पनव्रान’ भागए जाइत रहै अछि, तैयाम कनी-मनी योप छेउ हगाड़व नीक गहि”

घनश्याम मुड़ी जेठवैत वाजए-

“वाग तँ वड़ सुगुदए आ वड़ सोहगान कहौ मुदा एक वंशक सग रहिगि अहाँ अइए-अइएसँ गहि आ हम सग वँटाइत-वँटाइत एते वँटा जाइ जे घसाए सकिता जाँ सग कहि रहिगि यएवे ने कनी, से केहेन हए?”

तैपन श्याम पुछएयनि-

“गोहए की व्रियान?”

घनश्याम कहएकैत-

“गीनू गौड़क व्रियान अछि जे घन-सँ-घनाड़ी, पनहिँन-सँ-पेन बनियातू गौड़ एकएग कऽ छि आ जाँ से गहि, तँ”

श्याम-

“तँ की?”

घनश्याम-

“ई तँ माटकि यन्य केँ पोजैत सेहे नहिना वाँटवा जाँ से दइए तैयान ने हएव तँ जमीनक छैसए जमीनपन हए”

श्याम-

“सएह”

घनश्याम-

“हँ! सोहगनी सहए”

○

शब्द संप्रदा : रट्टट्ट

गुप्तायलि

हूनाए घाग जाँ पयासी वन्यक शम्भु काकाकेँ ओछाइन छौडैसँ पहिनिह भिगमे उड़ैत जे आव तँ यए-यवैए छी, से गहि तँ जगिगीक अपन हिसाव-कगिाव दैये दएि, सएह नीका बै तँ शासनक कोन वसिवास केकनो दोष गाता मढ़िसजा केकनो गेटे छश मुदा सोहहामे एते तँ जानूत हए जे अपन वाग अपने नयि सके छी। तैपन जाँ गहि भागत तँ हमूँ नइ भागवै। उड़ि भिगी कसिड़ भिगी; शेषे कथी वँयए अछि।



जहनि गमहन काजमे समैयो अथकि छौए आ छोट काजमे थोड़ मुदा काज तँ हुनू कहवैए कियो काहू मगन कियो काहू मगन, मगन तँ सग अछिऐ। गंभीर प्रश्नमे ओहनाएँ शम्भु काका, तँए मन-यात्रि आ देह एकवट भेट नहै।

पत्नी कुमुदनीक मनमे उठैत जे नगसिक सुनै तँ ने नहि जेता। उमे पहुँच छाती ओठवैत पुच्छकैत-

“अपन यनी किए विछान पकड़नहि छी?”

पत्नीक सुत्राएहनेमे ओहनाएँ शम्भु काका हँसैत वज्रा-

“अपन यनी एह वुहै छैत जे अपने केहिक भागी कियो वगैए, मुदा?”

वज्रा शम्भु काका ओहनाएँसँ उठि जहनि उठैत सुनूजक दृशक छेक हुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैत नहनि हुनू हाथ जोड़ि पत्नीक आगुमे गढ़ होश दोहना कऽ वज्रा-

“भाबू मंगै छी, गठनी भेट अछि मुदा दोसनाक गठनी अपन मढ़ भेट अछि।”

अकथकाएँ कुमुदनी, वनि कछि सोचनहि वज्रा-

“से की, से की, एना किए मोने-मोन पाप यढ़वै छी?”

“पाप नै यढ़वै छी जनिगीक जे घट भटना अछि, तऽ नमिति मांगि नहै छी।”

“जपन एते कहवै केतौ जपन किए ने मनो पाड़ि देवा अहाँ तँ वुहनि छिए जे वसिया भाग प्येनहिनि वसिनाह होश मुदा नौतुका उगाँव अन्न छेक देव नीक हए?”

पतासँ अवैत वज्राएँ पानि जहनि छन-छनाएँ पवति नऽ अवैत नहनि कुमुदनीक व्रिया सुनि प्रोत्सेस शम्भु काकाकेँ भेटैत, वज्रा-

“अपना हुनू गोनेक एक जनिगी ऐ यनीपन नहै अछि की नहि?”

“हँ, से तँ नहै अछि तँए ने अन्ध्यांगिनी छी।”

“हमन देहक अन्ध्यांगिनी छी आकि जनिगीक?”

“ई वाग अहाँ वुहैत कहिये जे पुछै छी?”

पत्नीक प्रश्न सुनि प्रोत्सेस शम्भु काका सकदम नऽ जेवा मुदा उठैत जे टटको घटना वसिया जाइ छै आ वसिया घटना टटका नऽ जाइ छऽ ई नमि न करैत काँगोपन। जेहेन काँगोपन नहै तेहेन टटकाकेँ वसिया आ वसियाकेँ टटका वनवैत नहै। प्याए जे होउ पत्नीकेँ पुछथनि-

“अपना हुनू गोने एकदम केना भेटिए?”



“एना अनथा-अनथा किए पुछै छी? जे कहैक अछि से सोह डानिये कहू। एना जे हनसीकान-दनिघीकान उगा-उगा वजै छी से गर वाजा। जेकना गीक वुहवै तेकना गीक कहव आ जेकना अथवा वुहवै तेकना अथवा कहव। अहाँ उगा जे कनी दवो-उगा नऽ जाएत तँ हानि मानि छै सए गे हएत, आकि छाउन-गोवन जाकाँ छोट्टामे उडा वाध दऽ आएवा”

जहना पोषैक पत्राति नजमे सुनाव कऽ पूजाक मूर्ता गढ़ा मंन पढ़ैत दान कएत जाइत जहना शम्भु काका वडवडाए उगावा-

“जम्भन हम यौविस वन्यक नहि जम्भन अहाँ यौह वन्यक छैथौ। दस वन्यक अन्तना आर धन किहँ केतौ देय पेटौ जे पुनुष-गानीक वीय उमनोक व्रिणाजण भेठ। जँ से गरि तँ? जँ एको औनूदे दुनू गोते जीव तैयो तँ अहाँ दस वन्य वधिवे वगि नहवा ऐ वधिवक सन्यक के? समाजमे कठकक मोटनी देगहिन के? की ई वात हूँ जे जइ धनमे जेते कम वस्तु नहै छै आगा उगावापन ओतवे कम जतै छै आ जइ धनमे अथकि वस्तु नहै छै आगा उगावापन जानवो वेसी कतै छऽ? पयास वन्यक नपठ-नपाएत जनिगीक अन्त केना हएत?”

दुनू हाथ जोड़ि शम्भु काका पत्नीसँ माखी मंगलैत।

मुदा जहना वय्याकँ गर दाँत नहने अथकि-सँ-अथकि काज छि याहैत, गर औजान हाथमे एने अथकि-सँ-अथकि काजो आ अथकि-सँ-अथकि समए सेहो संग मठि वीतवए याहैत जहना कुमुदनीक सगिह आनो जगलैत। वजि-

“भाँखी-ताँखी गै मागव? पति छी तँ पुछै छी। एहन जवनी भेठ किए, से जावे गै कहव तावे कछि गै मागवा”

पत्नीक पुनश्च सुनि शम्भु काका सन्वय नऽ गेवा। मन कछमछाए जगलैत। सन् वड कटु होइ छऽ मुदा जँ पत्नीसँ उगा सन्यक उद्घाटन गै कऽ सकव तँ दुनूजिमे दोसजम कए केतए सकै छी?

शम्भु काका साँप-छुछुगैक स्थितिमे पड़ि गेवा। एहन कोनो व्रिया नमने उडवे गे कतै न जइसँ मन मानि छितैत जे ऐसँ पत्नी मानि जेती। अठ-वठ कछि वय्याकँ कहत जाइ छै, एक तँ सयिान कजि सयिानोक एगवा प्याढिमे पत्नी पहुँचत छैथ, दोस अन्ध्यांगिनी सेहो छैथ। कोनो व्रियाकँ वठजोनी थोपि गै सकै छएत, जँ थोपि दैवैत तँ मानि छेती सेहो गै कहत जा सकैत। जेते दवाव दऽ कऽ वपैक अथकि नमना अछि तेते हुनको तँ छैन्ह। जँ कछि गै कहवैत जम्भन तँ आनो स्थिति वजिड़ जाएत। जहना हुनका मनमे गेठि जाकाँ जमगाँइ पड़ि जेतैत जहना तँ अपनो मन गरियँ वंयत। जँ से गै वंयत तँ आँपि उगा देय केना पेटैत? जँ से गै देय पाएव तँ पतिकथिक? सनिखि गे-नससत तँ पत्नीक सम्वन्ध गै छी? जँ ओतवे मानि वुहवैत तँ पति-पत्नीक सम्वन्ध वुहव थोड़ै हएत। पति-पत्नीक सम्वन्ध तँ ओ छी, जहना जगकक एक हाथ हवन-कुम्भमे आ दोस पत्नीक कजेजपन नहै छैथ, मुदा जहना गर जीवक दसि व्रिपिक अन्तमि अवस्थामे भेटैत जहना शम्भुओ काकाकँ भेटैत। थाठे गड़ठ मोती जहना जहुनी हाथमे देयते गरन कमजगरन वगि जाइत जहना कक्कोक गजैकँ भेटैत। मन मुस्कलैत।

पतिक मुस्की देय कुमुदनी मने-मन नमन केतकैत।



जाहिआसु छात्र जाकाँ पत्नीक जाहिआसु गजौनकें देय प्रोसेस सभ गजौन-

“देय, प्रश्न एकेटा गै घनेगो अछि, जाँ एक-एक प्रश्नक उत्तरगो दसि छाव तँ प्रश्न छुटि जाएत। जाँ प्रश्न छुटि जाएत तयन उत्तर केना देव तँ कछि रहि बुझिओ श्रुति”

पत्नीक प्रिया सुनि कुमुदनी अथपठि कुमुदनी जाकाँ जइ अवस्थामे गौन श्रुति तँ देयैत मुदा अथपठि कपाटसँ गकिँ गै पवैत, तहिना कुमुदनी असमंजसमे पड़ि गेली।

पत्नीकें असमंजसमे पड़ैत देनी प्रोसेस सभ गजौनकें मने उठैत जे तहिना माटकि ठेपा, गोठा, येका जोड़ि-जोड़ि पैघसँ पैघ वाहवाहवाह जाइ तहिना जाँ वाहवाह दैत तँ जूनू डमैक जेत। मुदा मन मानकैत रहि पत्नीक वामे तँ अयन यनि ओहनाएत रहै। जूनू माए-बापक काज मानव जाएत। मुदा, की हमने टा पतिव्रतमे भेठ आकि दोसरो-तेसरो पतिव्रतमे? जाँ एक समाज रहि, एक गाँव रहि, अनेक समाज आ अनेक गाँवमे होइ अछि तँ जूनू दोषक जाड़ि केतौ आनो छइ अन्तरे केतए छै से कहि दैवैत, माननी तँ माननी, रहि तँ आनू कहवैत गति-गति।

तहिना उठैत गुण्ण, उठैत कठककें कहैत जे हुनू गोने संगे-संगे रहि हुनयिँ देय तहिना प्रोसेस सभ गजौन पत्नीकें कहयनि-

“सुनू, सभ वान सवहक गजौनपन सदकिँ गै नहै छै, जइ सकैए जे जे वान दस-वीस वन्य पहिने कहि दैवाक याहै छइ, से गै कहै। अपनो यिनिगमे गै नहै। तहिना असंगे वान गौनगहिनि गनि-गनि गौनको कान आ उड़ि-उड़ि छिपिबो कान तँ गनिगी-गनिगीमे हठाटा हवे कानो, कएक तँ जे जोगान नहै ओ मन नहै आ जे अव्वत नहै ओ हेना जाएत। तहिना गै अपनो हुनू गोनेक वीथ अछि”

“हुनू गोने” सुनि कुमुदनी कछमछेली। कछमछासो पाछू उठैत-उठैत देयैत छेली।

प्रोसेस सभ गजौन बुझि गेली जे शक्तिनीक वाम सटीक वैसत। तहिना वाठ-वोचक उगटा-पुगटा काज देय सियनकें हँसी-ठौठ तहिना प्रोसेस सभ गजौन हँसी छलैत। मुदा छलैत मनमे उठैत जे अपनो पैछा कएत काज मन पड़ैत तँ से होइए एकाएक मुँह वग्न जइ गेलैत। आगे-आग पुन्य जाकाँ अपन पुन्य देयवैत प्रोसेस सभ गजौन-

“आइ यनि, अयन यनि कहियो हमना मुहसँ सुटत जे हम ग्याप्राप्रासँ दम्पति भेठ जनिगी जीव नहै छी? कियो एको दनि पुछाड़ि कानए आएत जे केना जीवै छी? समाजमे जावैत बुढ़-बुढ़ासक पूछ गै हएत जावैत समाजक पैछा पीढ़ी गौन पकैत वैतनीमी पान केना हएत। हँ ई जूनू जे साँपकें डोरी गै कहै, मुदा प्रिया तँ हेवाके याही कनि”

घनमे यौकठ वननक ढगमगी जाकाँ कुमुदनी ढगमगाइत वजौ-

“जयन अहाँ हुनयिँक गजौनमे दम्पति छी तयन?”

पत्नीक यनिगसँ यनिगति जइ प्रोसेस सभ गजौन-



“अपन चर्ति छपिने नहौं जे अपन दोष अहाँकें कए दी।”

पानकि वेथासँ वेथति कुमुदनी वज्जि-

“कनी सुनछि कऽ कहूँ?”

“सेवा-गर्वित्ता होइसँ छह मास पहिने पुनसिपिठ वनौठ गेलौ। कौठेजक भान वढा पनीक्षा व्रिगाज सेहो छऽ सुनहर्हि हेवे जे केतो हो-हठ भेठ। मामा ग्यायाय यथ गेठ। गोठ-माठ जून भेठ नहऽ, जानकानीमे नै नहऽ मुदा तैयो जवावदेहक नूपमे सुँसौ।”

कुमुदनी-

“अहाँक कछु दोष नै नहए?”

पुनोश्चसऽ शम्भु-

“एकदम नहि।”

कुमुदनी-

“श्वेसठा केना भेठ?”

पुनोश्चसऽ शम्भु-

“सेवा गर्वित्ता जे दोष ग्यायाय दोषी वना छोड़िदेठका।”

कुमुदनी-

“आ हुनका सभकें?”

पुनोश्चसऽ शम्भु-

“कमो दोषवठा वेसी सजा पौठक आ वेसयि दोषवठा कम सजा पौठका।”

तैपऽ कुमुदनी पुछयनि-

“एना कए भेठ?”

पुनोश्चसऽ शम्भु वज्जि-

“जँ पहिने वुहति तँ ऐ जीन जेवो ने कनि, मुदा से नै भेठ। जाचै ठपिति-भौषिक नूपमे वेवस्था यथा जाचै अहिना हए।”



○

सर्व संख्या : १३११

पत्रिकाद्वय

आँगन बहाना, बाँहें बोर कऽ पछवना दावा भग। न्यास सुगन्धना दनवज्जा दसि नकसैन तँ वुह पड़ैत जे मासुटन
साहैव (पान) नसिक सुगठे छैथ, उठा देव उयति हए मुदा मग डमैक गेथैग। डमैको मग कहैकैग-

‘आउमे दनि गाम आएत नहैथ तँ यानविजे भोजेसँ हनवनि केने नहै छथ। जे घनमे कोढ़ियाक वाढ़ आवा गेथ अछि, जे
काजक वेनमे सुगठ नहए ओकना कहियौ गानगस हेर? मुदा ओठे दनिक दूनीमे एना कएि देखै छी?’

सुन मग धुमकैहकैग-

‘उमेनोक दोष होइ छर। ओना सगिया तँ गेथे छैथ।’

नान-मन कनैत सुगन्धना दनवज्जा-आँगनक वीथ डकुआ कऽ गढ़ गऽ गेथी, ने आगू डेग उठैत नहैत आ ने पाछूर
ससैत नहैत।

ओना जीवागन्धक नीग समैपन टुट गेथ छथ, एक तँ ओहुना उमेन वढ़ने पूनो पनयिए भौ छै आ नीनो पनयिए नार
छर। जे जीवागन्धकेँ भेथे नहैत, नीग टुटति मगमे उठैत जे उठिए कऽ की कनव? काजो कोन अछि जे नर पाछूर भागव। आँप्यो
वग्न केने सोयैत नहैथ।

जहना यग्निक यग्निक अवस्थामे नषितेन गऽ जाइत नहैत। जीवागन्ध वछैतपन नषितेन छथ। ओना आँप्यो
पुणैक आ वग्न होइक डेनो कानाम अछि मुदा हुनका से नहैत नहैत। मगमे केनेको नंगक वयिआ टकनाइत नहैत, तँ एगठ
नसुना देखैमे एक-दसिह गऽ गेथ छथ। आठमानीक कानिब जाकाँ नंग-नंगक वयिआ एकेठाम सैत नहैत, असठ वयिआ
पनयिआमे गऽत नहैत। मुदा पनयिआसँ पहिने जे अपनपन गजैत पड़ैत तँ तेनर गऽ गेथ। सेवा-नविर्त्तन गऽ गेथी, जीवैक
उपाय भैथे जे हुअर मुदा काज तँ हेना गेथ। आव काजो की अछि नर अनभेनामे समए गूदस कनव? जप्पन काजो हेना गेथ
जप्पन जनिगी केना यथ? जँ जनिगीए नर यथ तँ जीवति-मृत्युमे अग्नने की भेथ?

ई सभ वात जीवागन्ध वावक मगपन पयथे नहैत तैवीय दोसन उठ गेथैत जे कनवो केकना पथ कनव? पैछथ कियौ छैथे
नहै, एगठ उठिए गेथ। वीथमे अपनकेँ पावमिन दहैत गेथैत। सेवा-नविर्त्तनकि तँ एक अन्थ ईहे होएत ने जे काज कनै-
जोकन ने नहैथ?

सुन मग ओहुना गेथैत। ‘अग्नयेन गगनी यौपट नाजा, टके सेन गगनी टके सेन प्याजा’क पन गऽ गेथ। काजो तँ दू
नंगक होइत अछि, एक सनीनक सकासिँ कएत जाइत अछि दोसन वौद्यकि सकासिँ। हम तँ सनीनक सकासिँ नै वौद्यकि
सकासिँ कनै छैथ। जप्पन कएि नै कनैवथ नहैथ? आमक आँठि जहना कोइसँ घोजे-घोजे सककन वनसिं जप्पन सकासिं
पुनपुन कनैत, से कहाँ भेथ? जँ वौद्यकि सकासिँ सनीनक सकासिं सीमांकन कएत जाएत तँ केहेन हएत? प्याएत जे होइ,



ऽनका ऽनकै छै तँ करिओ अपना माथपन हाथ दइए मुदा सेहो तँ नै गऽ नहए अछि ओ ऽनका शरीरकें के कहए ओ घनो-दुआन आ गाछो-वगैछकें गोड़-खाड़ि दइए ओर ऽनकाकें हाथ केतोकाए वंया सकैए?

जीवागन्ध वावूक मग सैन ऽमैक गेछैन। मुश्त यात जाँ पनविनो गऽ गेथ अछि, की हमना वंयौने वंयत? वंयवो केना कनत, ने पैछा घुमि औत। आ ने ऐगवा आवए याहन। उऽ दऽ कऽ दू पनानी मेथौ, तूमे तेहन पाकए आम जाँ गऽ गेथ छी ओ कप्पन तुवपिसव तेकन कोन ठेका। प्याए ओ हैउ, जावे आँपनि के छी तावे तँ जीवर पड़त आ जावे जीव तावे जीवैक उपाय सेहो करैये पड़त। अपने जीने जनिगी आ अपने मुश्ते मन्थु!

गुन-धुनमे पड़थ जीवागन्धक मग समाज दसि वढैथ। समाजो छेथ की केछिए ओ हमना छेथ कनत। जहनि देवस्थान दस गोनेक सहयोगसँ गढो होइत आ यथो करैत नहनि तँ समाजो अछि, मुदा से तँ कछि ने केछिए! थकथकाएथ मग कहैथैन-

“की ओछाइन येने नहए आक’उडवो कनव?”

मुदा उगथे दोसत मग कहैथैन-

“उडिए कऽ की कनव?”

मग आगू वढि शिक्षक समाज दसि वढैथ। सेवा-गर्विता तँ सज होइ छैथ, मुदा, की हमने जाँ सजकें होइत? गँ सजकें होनि वा गऽ होनि मुदा कछि गोनेकें तँ हेवे कनैत। जप्पन सवहक जनिगी एक वर्त्तमाने वीतत जप्पन किए सजकें सज नंग होइत? पनविनो आ समाजो तँ सवहक सज नंग छैन। से तँ छैनहे दनिगाथ वावूकें देखै छिए ओ सेवा-गर्विताक उपनागतो वदियाए छोड़ि नै नहैथ अछि जप्पन की सुप्पदेव वावू सेवा-गर्विता होइसँ तीन वन्प पहिनिहो ओ ओछाइन येथे से अजगो येनह छैथ। पनविनमे जाँ केकनो कछि अढ़वै छथनि तँ मुँह दुसि कहै छैन ओ मनदिनि कौआ जाँ कँउ-कँउ करैत नहै छैथ। मनुष्यकें जाँ कौआ मानिथेथ जाए तँ वोथकें की कहैथ?

जीवागन्धक मग आनो घुनयि गेछैन। सैन मगमे उडैथ ओ अनेने औगाइ छी। ओतावे नहए ओतावे टांग पसानी नै तँ पओथ जाएवा सुतथे-सूतथ पन्नीकें सोन पाड़थनि-

“कनी एमहन आउ?”

आँगन-दरवाजाक वीथ गढ सुनयन। पानि हाक सुनति उग आगू उग वढैथ। केवाड उग आवा हिया-हिया देखए उगथी। पहिठिका माने सेवा-गर्वितासँ पूनवक अपेक्षा पानि नूप वदथ-वदथ वुह पड़ैथ। मग कहैथैन- एना केना मेथैन, अजग यनी तँ कछि कहवो ने केथैन, जप्पन किए पानि उतार वुह पड़ै छैन?

केवाडक एकटा पट्टा प्योथिने नहथनि आ दोसत ओहनि उगथ नहए तहि वीथ जीवागन्धक मगमे उडैथ ओ जावे नोकनी करै छैथी तावे वाहनसँ कमा कऽ आनि पन्नीक हाथमे दइ छेथिए, आ अपने अपनाकें गानजान वुहै छैथी, से तँ आव नै हए! जाँ से नै हए तँ पनविन आगू मुँह केना ससतत? पाहुन जाँ आऽ दनिपन अवे छैथी आ कमासुत वनिगाइ छैथी।



पानकि वदथ नूप दैय सुगयनाक मगमे उडैग जे अपन धन किछु कनवो ने केवैग हेग आ जे-जान सुटि नहै छैथ।

नवकन्यायिक युटकीक अवाज जाकाँ सुगयनाक आगमन बुझति जावानगदकँ उँक हूवा देहमे बै नहैग। मगोक वोहूँ तँ माथकँ ओहनिग मनिया दैग जहनिग कोनो वस्तुक वोहूँ मनियैग।

जीवानगदक मगकँ जगिगीक वोहूँ ऐ नूपे दवगे जेग। सजानी कसठ घोड़ा वा पथिश्वा होश। मनियाएग मगमे उडैग-जावे धनवाहनसँ कमा धन अगै छैथ, जइ वठे पनविान ससयै छथ ओ तँ टुटि गेथ। ओहिपन ने अपनो आ धनो-पनविानक छहन-महन छथ। मुदा से नइ भेगे तँ ओहनिग नइ जइ छै जहनिग माटकि वगठ नसगाकँ पानकि धान काटि अवलूह्य कइ दइ छइ की कमाइएपन गानजनी छथ? पानीए-कँ की सुय हमनासँ भेथेग? धन-जनिहसगी सम्हनैमे दनि-नानि एकवट केने नहै छैथ। एक तँ मथिथियठक कसिग पनविानक अजीव गढ़ेग अछि, जैगम एवापन देवगि-देवग। मोथिया जेग। सौसे जगकपुनमे जगकेक दनवान जाकाँ बुझि पडैग? नान्हटि वाग थोड़े छै? जैगम गाम-गाम व्यास गगवग वयै छैथ, गाम-गाम कीनग-गजग, मोज-मगजग। होश नहै, जैगम समाज विपिनग दशिमे वहि गेथ, मुदा दैयजैग कयिगे। दनवज्जाक सौभाग्य छथ नीक-नीक वाग-वयिग कनव, जैगम दनवज्जा टुटि अंगग धनक कोठनी वगि गेथ अछि। जैगम कम-सँ-कम ठेकक पैठ नहै, जैगम आनक सुय-दुय सुगैक आ सुय-दुयक दवाइ बुझैक अवसन बै भेटै, जैगम पानि-पानीक सम्वग्यक आधान की वगि सिकै। दैया-दैयीक दुगियिमे यगिग-यगिग कए नह। जँ से बै नह तँ मगक सुयक दशिग धाना कए ने वदथ। जीवति-मृत्युक गनिमए के कनग? केग। हएग? कोनो मुसग। गछ होइ आकि ठियाएग ठानीक होइ, ओकन वाढ़िग। यै समीयग होश जायै। ओकन। अगुकूठ वानावगस भेटै नहै। ओग, ठायो कड़ि-मकौड़ी कोमठ-कसिठकँ नष्ट कनैवथ। अछि मुदा पुनकीक तँ गजग गढ़ेग अछि, एक-दोसगकँ नष्ट कनैवथ सेहो मौजूद अछि। वगि मुँहक गछ वा ठानीक दशा तँ ओहगे होइ छै जेहगे साँपक मुँह थकुयेथ। पछाश होइ छइ।

जीवानगदकँ एहसास भेथेग जे हमनापन नहि, पानीपन धन-गढ़ अछि। जँ धन गढ़ अछि तँ समाजक पनविान कहवैक ठाय अछि। मुदा समाज तँ ओहनिग नइ केकनो महग दै, सेवाक अगुकूठ केकनो महग दै। अछि। से हमनासँ की भेथ? जयन किछु ने भेथे जयन केने महग हेवा याहि? मुदा जेकन। धन-पनविान आ गाम बुझै छै, तेकन। छोड़ि केग। देव? मुदा ई पुनस्र तँ गामक छै, अपन नहि। पनविानमे जे छहन-महन भेथ ओइमे हमना कमाइसँ की भेथ। यए ने भेथ जे वेटीक वआह केवै, वेटाकँ पढ़वै-ठपिठवै आ अगमि अवस्थामे अपन धन वगेवै। मुदा वेटीक वआह, पढ़ाइ-ठपिठा एते गानी कए अछि जे जगिगी नकि कमाइसँ ठेककँ पानो ने ठाये छइ। जँ एवेमे सग ओहना जाए तँ समाजक गति केहेग हएग? जँ समाज दुर्गतिग याठि पकैड यथ तँ मगुयक पैदाइस केहेग हएग। जैगमक जेहेग मगुय जैगम तेहेग दुगियि।

कनोट छेनो जीवानगदक मगमे उडैग जे हानिग। हग। सुडियि। पानीसँ कषमा माँगाथि। जँ से नइ माँगाव तँ हुनकन वयिग छपिग जे धनमे नहै दैथ वा नहि समाजक संग तँ वएह नहै। पानीक पुनगि जे पुन हेवा याहि से कहँ कहिये भेथ। कषम-पठक सम्वग्य नहै, जीवग-ठिठक सम्वग्य कहँ नहै। हुनकन दुगियि हमनासँ गनिग नहै। मुदा आइ तँ ओहि दुगियिंक जूनीग हमनो नइ जेथ अछि। पामुड वकिसति दैशमे जहनिग जगना-सकानक वीय सम्वग्य नहै, जहनिग ने नइ जेथ अछि। जेग। पानि नूपमे ओ सेवा केथेग तेग। हम कहँ केथिग। जँ से कनिगिग तँ ओ ओहनिग ओतै अँकठ



नहीतिथ, जोग नानो-गाम नै सोप्यपेथी। जगवो सम जगमे वतिथै, हुनका कमर पेथै, तेनवो तँ हुनका नै कऽ सकथैना। एवे नही, दनजगजग जोगे माथ अछि, आ हुनका देय गूय-पयिस कहए छै मुदा हमना देय घनिगी जकाँ नाथ। गजगव यही। अदवायैथो जँ अथै नही तैथो तँ अपन वुहिया-पियेथे कछि नै केथिए। कोनो कमिगुय छी जोगे घड़ी-भोवाइ देय मनिट-सेकेंड वुहए, ओकना छे तँ अदवायैथो सटथे-दनि मेथ। नहीना तँ गाछियी-वनिछीक अछि। पुड़सीनद दनिसँ ओकना जगजग हेवा याही से अगका तँ कहथिए, मुदा अपन। कए ओ अपन वुहए?

जहना सासुनमे जगए सासु-ससुनक आगू ठाड़-हाड़ कए जोगे इ नै अछि तँ ओ नै अछि, नहीना जीवागद ओछाइनसँ उर्ग, वैसै जग दसि देय वजग-

“एते दनिक जगजगमे कहियी गडि दूध नै पेथै। आव अहाँक दनवानमे छी, जोगे नाथी।”

जगक वाग सुगसुगयना वृद्धिथ गजगेली। अपन कानवृद्धि वोध मेथेना मग कहथैथे- जगक सेना जगक पहि दानव छी। मुदा जगजग कए सुगयना वजग-

“एना संस्कृतमे नै कहू, गजगियीथीमे कहू जोगे की कहै छी?”

जगक वाग सुगजीवागद मग हेना जेथेना जगजग सुगगा-मेना संस्कृत-पाठ कए छथे जगजग मगजग दूनी एते कए मेथ? जगजगमे ओछाइनसँ जीवागदकें वुकीन जगजगेली। वीथी नै सुटथेना।

आजक शिक्षक जकाँ जीवागदक जगजग नै नहीथे। शिक्षक समाजक जगजग समजपति छथ। ओर समाजक वीथ पढ़ाई-ठप्याई जगजगक मूठ वनिद छथ। ओ सग मागै छैथ जोगे जग वृद्धिथक जगजग वृद्धिथीकें दूधसग पढ़वाक हेर छै ओर वृद्धिथक पढ़ाईमे कमी छथ। वृद्धिथी छेथ कछि सहज वृद्धिथ हेर अछि कछि कठिना। मुदा जग वृद्धिथक जोगे शिक्षक हेर छैथ हुनका छे तँ इ समस्य नै मेथ। जँ हुनकामे शिक्षककठिना पूरना हेतै तँ वृद्धिथीकें कए समस्य गजग नही देखिना। की जग छै जोगे अपन एगम अदिसँ कऽ अपन वनि शिक्षा-संस्थानमे छड़ीक यथेन नै नही। मुदा तँ कियी पढ़ा-ठप्या वृद्धिथ नै मेथ? मेथ।

जग हेर स्कूलमे जीवागद शिक्षा कान्य कए छथ। ओर वृद्धिथकें अपन छात्रावास सेहे छथ। जगमे पयाससँ अपन छात्रो आ अदिसँ वेसी शिक्षको नहीना। मेसमे जगजग जग वृद्धिथी छेथ सहल शिक्षको छेथ वगैना। ओना, शिक्षक सग अगसँ दूध कीनानामि सुतै वेन पीथैथ।

जहना वाटमे हेनाएथ वटीही दोसकें पुछैना, मुदा उगत देगहिनो तँ गज-वनिगक हेर अछि कियी एहो हेर जोगे अपन हेवाक यन्य कएना, तँ कियी हेनाएकें आनो हेनाए वाट देया दैना, आ कियी एहो हेर जोगे कहैना जोगे संगे यथ। ओ ए आशाक संग यथेक वाग कहैना जोगे जँ कछि नै कहवै तँ गजग कहना, मुदा वनि वृद्धिथमे की जगवो देथ जग सकैथ। ओ संग केने नाथै यथेन नही जगै आंजगिन नै मेथ जग छथ। नहीना अदवायैथी नूपमे सुगयना पुछथनि-

“की सुय्या दूध कहथिए?”



जीवागन्ध वज्र-
 जीवागन्ध वज्र-

“पैनीस साधक गोकनीमे कहियो सुय्या दूध नहि पीव सकौ। पीवै जाऊ मुदा ओकना अदहासँ वेसी थोड़े कहल जेना”

जहना मन्त्रासाधन यदु गहिके सन-समाजसँ ७५ कऽ आ कुटुम्ब-परिवारक लोक आवि-आवि जागिआसा कहैत जे ‘मैया’, ‘काका’, आका ‘वावा’ कथो पार-पौवैक मन होइए, जहना सुनयना पुछथियनि-

“एते दिन जेना अहाँ छेवै छेवै आ हम छेवै छेवै। मुदा आव तँ ओतै अहँ नहव जेना हम छी।”

पत्नीक व्रतियनक गाम्भीर्यसँ जीवागन्ध आँखा पड़ैत अजान सौंपक सोहसँ पड़ा नहि पावै, वज्र-

“कहौ तँ वेस वाग मुदा मनुष्य तँ मनुष्यक वीर्य कछि वन्यन गनियानि कऽ नहै अछि। डोनी-पगहाक जाऊत तँ पशु छै जेना, मुदा वाग तँ एकमुड़िया नै भऽ सकै। ओकना छै तँ जावै दू-मुड़िया नै छै पटौत जाएत, जावै गीनह केना पड़ै। जावै कुशियनक गाछ जाँ गीनह नै वनत जावै नस-जठ केना समटाएत नहै?”

पत्नीक प्रसन्न सुनि जीवागन्ध जनिगीक ओहनी देय्यए उठाए जे ई वन्यन छुटै कहियो। तसैत मन पत्नीक कजेने पहुँचैना जहना नशिआए लोक अपने अड़-दड़ वज्र जहना जीवागन्ध वाजए उठाए-

“कामिनी, सेवकिक रूप छोड़ संगी कहियो बुझैना ई दोष केन? मुदा दोष तँ दुनू दिस देय्यए पड़त। पत्नी कोन रूप देय्यैना सन दिन ओ पानिबुहा सेवा कहैत एही कहियो कछि नै भंगैना। अपन परिवारक स्नान बुहा अपनकेँ सम्मानि जियै।”

वड़वड़ात पानि देय्य सुनयना वज्र-

“हानीमानी हठाड़ श्रुतियाए एके वेन वाजि जाउ जे जे हूँ से हेनाए, जे जीव से जेए श्रुतिया”

मजैत नोगी जाँ जीवागन्ध वज्र-

“सुय्या दूध आवो नै पीव सकै छी?”

“पीव सकै छी। जपन जाए पोसैक ठूनी अछि जपन कए नै पीव सकै छी। मुदा जैतम दिन-नाति छुटनहि न छै। अछि जैतम थनक दूध कम्ह उठा पहुँचत किनहि, तेकन कोन वसिवास?”

पत्नीक प्रसन्न सुनि जीवागन्ध जी-जी कऽ उठै। वसिंत वाग मन पड़ैत जहना ओकन रूपो-नेप्पा सोहमे आवए उठैत जहना भैषेना वज्र-

“शुद्ध-अशुद्ध दूध ने एक परिवारक समस्या छी आ ने एक गामक। दूधमे पानि दिय यथैत नऽ जेअ अछि ओना जे अपने जाए-महिस पोसै दूध पार छैथ, तनिकन संप्रदाय कम अछि। जे वेयनहि छैथ ओ दूध वेयियाउ-दाए, तनिकनी श्रद्धा कीनै छैथ। पानी दूधेमे पानि नै दैथ छथि। आनो-आनो जहना अछि, जपन कए की जाए कुठ-भठि कऽ



देखलापन ग्रह मे देखा नहए अछि जे नाड़ी पीयाक, गांजा पीयाकें गाना पढ़ि कहैत जे शोकटिया अछि अहना एक-दोसरेमे सटत सम्बन्ध अछि सभकें सभ गाना पढ़ैए आ सवहक सभ सुनैए नहूँसँ टपि अपने मुहँ गनयिा अपने सेहो सुनैए”

वहिवर हेलै सुनयना टोकैकै-

“नयन उपाय?”

“उपाय एते जे जेते परिवारमे प्युय हए कम-सँ-कम ओतवो उपानयन कऽ छेव नयन परिवारक पान ठागिआए। नहना गाममे जेतक प्युय अछि ओते जँ गौआँ मठि उपानयन कऽ छेना तँ गामोक पान ठागिआए। नहँसँ समाजोक कछ्याम नहि, देखक कछ्याम सेहो हए। ”

○

शब्द संप्रदा : २१५३

कृष्ण

जमीन गणिमोक गोटसि पावविनसिठाक सभ आशा ओहना हऽए ठाठ नहना वसन्तसँ पूर्व गाछक पाहऽ हेलै वा श्रुतसँ पहिने श्रुत हऽए ठाठ। हठसँ जनिगीक आशा देखैकसँ कृष्ण छे वोगि-दमकठ कनौठका मुदा समैपन कृष्ण अछा नै कए सकठ, नहँ कृष्ण छेक सए हाथसँ नकिछैत देख सोगसँ सोगाए अय्यडे यौकीपन पेटकाह दऽ मने-मन सोयैत जे की कनैत की मेठ। सौनक मेठ जकाँ वनसिठाक दुनू आँपमि गोत नगिगैठ।

वोसम शताब्दीक आठम दशकमे हगि-कृष्णक हवा घुसकैत-घुसकैत गाम घनपिहुँयठ। नव हवाक सुगन्ध नाके-नाकसँ छे कऽ जेतो-पनहिँनमे पुहुँयठ। गामक कसिनक सीमांकन सुनू मेठ। ओना सीमांकन नाम-मात्नेक मेठ मुदा मेठ तँ। नाम-मात्न ऐ छेठ जे सैद्यानक नूपमे तँ सीमांकनक नूप जेम्मा तैयान मेठ, मुदा जमीनक ओहनी कँटहा वाँस जकाँ ओहनाए छठ। नहँ कऽयिसँ वेसी काँटा एक-एक कऽयिमे साश्यो काँटा। सोनगन-मोटगन पाकठ देख नहँ आनीसँ जड़ि काटि दियौ मुदा होहँसँ नकिछव असाह नहि। नहँसँ वेवहानक पक्ष कमजोर पड़ठ।

यानि श्नेमीक अन्तर्गत कसिनकें नयन जेठैत। अढ़ाई एकड़सँ नयियाँ एक श्नेमी, यानि एकड़सँ नयियाँ दोस न्नेमी, दससँ नयियाँ तेस आ नहँसँ उपन यानि श्नेमी।

नयिठ कसिन छेठ सनकानी प्यजाग पुजठ। नंग-नंगक पुनोत्साहनक घोषणा मेठ। सनकानी घोषणा, तँ सभछे मेठ जे वैकक मायूमसँ वोगि-दमकठ भेटत।

मुदा नहँ मायूमसँ वोगि-दमकठ भेटत सए गगाम्प्रा एक दसि श्रौण जकाँ कसिन तँ दोस दसि जौगमसँ भेटत सए नहि। मुदा तैयो गोट-पँगना तँ छेछेह सनकानी सुवायिा सवसाँडिक नूपमे भेटत। तेकन कात्यायन गनिन वनठ।



कसिगक वीय पुनोत्साहक घोषणासँ गव जागनासक संयान भेला गाम-गाममे ग्रीष्मकालक माध्यमसँ काजक सूचना तैयार भेल अगे कसिग जाकाँ वनसिवालेक डेरा वढल एक-तहिस सवसिछी सुन विढवो केना ने कतैन। जम्मे कसिगक हाथ पानि और जम्मे यौमसिया प्येती वानहमसिया वनी जाएल। जम्मे वानहमसिया वनी जम्मे ने कसिग डानि-डानि हूँला उगा वानहमासा गौला। जँ से गह, तँ छहमासे, यौमासा ने गवैन नहल। जे यौमास कसिगक वपानी छी, तेहिमे ने गौला-युथुन उपजैल।

वस्तुगत काज तँ गह, मुदा यौमासँ यौमास बनकि, यानी गुमा उपजाक गक्षा तँ कसिगक मनमे वनवे कएल। वोला-एक-डक हिसाव भएँ जम्मे बनकि श्रुतियाएल मुदा-एक-ड-हेक्टेल तँ आवए गेल अछि कछि एल आ कछि ओल कतैन कसिग अपन हिसाव तँ वैसास एलक।

जम्मे बनकि जे छोट आ मध्यम कसिग महाजगीक कान्मे दुमठ छठ ओरमे पूजापनाकि प्रवेशक दुआन पुजल। कम सुदकि वान तँ आएल, मुदा छह मासक पछास सुद-मुनि वनी जाएल से एवे ने कएल। जम्मे बनकि जे सुदकि सुदक प्रथा ने छठ सेहो आएल। भएँ कतैन महाजग सप्पन प्या केकनो घनाड़ी उठ गेने होइ आक कतैन सप्पन प्या कान्मा दुमा देने होइ, ई अगल वान। ओहका जाकाँ देहजो ओले गानी ने छठ जेते माए-वापक सनाय। ओला देहजोक जाड मिजगान वनी नहल छठ, कएक तँ सहनक आमदनी गाम दसि आवए उल छठ।

गाममे छोट पैघ कसिगक संप्रदा वेसी, मुदा वीगहिनक संप्रदासँ कम अछि ओला सन गामक नूपो-नेप्या एक गंग गहयि अछि कोनो गाम एहेन अछि जम्मे पाँय पुनशितसँ कम जगसंप्रदा गामक गवे-पनयानवे पुनशित जमीन पकड़ने अछि, तँ कोनो गाम एहेनो अछि जम्मे दस-पनह पुनशितक अगल छस ओला, एहेनो कसिग छैथे जगिका अपन जमीनक अना-पना ने वुहल तँ एहेनो कसिग जे अपने सवतून मठि प्येती कतैन छैथ। तैसंग एहेनो एहे जे प्येक आड़पिन पहुँच जगि-गौनि तँ उगवैन अछि मुदा अपने हाथे कछि ने कतैन।

गाछी, प्यनहनी, वंसवाड़ आ घनाड़ी उगा वनसिवालेक पाँय वोला जमीन अछि जम्मे दू वोला वेप-वुनयिदमि श्वंसठ छै, वाँकी तीग वोला जोगसीमा एकटा वनह नापि सखटैती कड प्येती कतैन अछि ओहू तीग वोला जोगसीममे तीग भेठक जमीन छस पनह कटग यौमासे छै, जेकन मठुजानीक संग उगतो साठे-साठ दुमिजिह छस मुदा छोड़ियो केना देन, आप्ति प्ये तँ प्ये छी। नौदी भेगे ओहिमे ने उपजा होइ छस वाँकी सवा दू वोला मध्यमसँ गौड बनकि जमीन छस दसो कटग गौडमे मनुआ, गहै आ गहैनक संग कुनथी-नेवप्या होइ छस।

गहुमक प्येती तँ आवगेल मुदा तखे तँ पानियाह। पानकि साधन मात्र पोपैन अछि, जम्मे कनीग उगा कछि अगठ-वगठक प्येक पटवग लेक कतैन। लेकक वीय ने पढवै-ठप्यैक जाजिमासा नहै आ ने सुत्रिया। जगठ-गूथठ वदियाथ-महावदियाथ। वनसिवाले दुनू वेटाकेँ गामक सूकठ बन पढा प्येती-वाड़िमे उगौने।

मथिषिक कसिग प्येक ओह प्येमी वनठ नहल। जेहेन पानिना गानी जे वाठ वधिया होशो पुनशितकेँ कमठक माठ वना गनहनेमे ठटका हँसि नहल अछि जँ से ने नहल छैथ तँ गौनि-पडा अथशासनी वनकिए अपन प्येन-पथानकेँ



सम्पैत गै वुह प्रान्तिशक वसतु वुह नहै छैथ? की ओहनिगे पेटिकें उतम आ गोकनीकें मध्यमक व्रिया नहैथ? जँ एकना मुहावरा-कहावत वना देपव तँ मथिषिक यगिनयाना यनी गै पहुँच पाएव। जैसम पेटिकें अपन अधिकारीक वसतु वुह अपना हाथक हथिया नवा अपन स्वतंत्रताकें अक्षुण्ण नपैक व्रिया सेहो देथेन। ई तँ अपन-अपन व्रिया होइ छै जे कियो हथियाकें वम-वानुह वुहैत तँ कियो हाथक यान वुह व्रियानक वाट वगवैक व्रियान वृत्त कनैत। नहनि अस्त्-अस्त् सेहो अछि।

मध्यम कसिग वा छु कसिगक जीवैक जगिगी वृष्टिगि पेपन सदस्य वगिगी छै। जेकनामे ठाठे आ कानियो नोशनाइकें सोपैक शक्ति छै। वाढ-नौदी एकैसम शताब्दीक उपज नहि, अदौसँ नहै अछि जेहँ कहि सकै छी जे यान-युनक वाग-छाग हुआने हुआ छै। जस सकै छै, केतौ-हेश हेतौ, मुदा प्रसन्न यानेक पानकि नहि अछि, नहनि नौदियो नहै अछि। यानेक कटनी-पोटनी कम नहि अछि। मथिषियकें कोसी-कमठा तेषान कऽ देगे अछि। प्रसन्न अछि। वाढकि जडाँ पहिड़ी यान छी, जे हुव्वसँ योयगिन यनी अछि। पानकि एक सायन मेथ, दोस वनप्या मेथ। ओहन-ओहन वनप्या हेश नहै अछि। जे पनह-पनह दगिक ओगिगिन पहिनिहसँ कऽ कऽ पूनवण नपै छै। हथिया मान एक नहि। जेकना वनप्या ऋतु अन्तमि गक्षत कहि टा नहि। पनह-पनह दगि यथे नहि छै। ओना, वनप्याक कोनो डेकान नहि, माघमे पाथन प्यसा उपज उपजाकें नास कनैत नहै अछि। अन्तमि जन्म ताथैत गै हेश जाथैत आदि गै हेश, वनप्या ऋतु आदि आदि। छी। तँ 'आदि आदि अन्त हस' ई मेथ वनप्याक आँट-पेट। पूनवण सज स्पष्ट व्रियान देगे छैथ जे वनप्या कोनो वसिवास नहि जे केतो हएत। १८७१ ईमे वंगला देशक उद्धारक उगग साठे जनि वनप्या हेश नहै, ओहन-ओहन वनप्या हेश नहै अछि। जसमे साएक-साए घन प्यसा नहै अछि। घनमे दवठ वाठ-वृद्ध, माठ-जाठ, यन-सम्पैत श्रुतादि गष्ट हेश नहै अछि। मुदा तैयो वृष्टिगि पेपन जकाँ सज कछुकेँ सोपि एडमक कसिग जीवैक वाट येगे आनि नहै अछि। हुनियोमे गे सायकक कमी अछि। आ गे सायना भूमिक, मुदा मथिषियकें स्नेह कएि? केतौ जाडक सायना तँ केतौ तापक तप तपि तपस्या कनैत, तँ केतौ पानकि तपस्या सौजन्य ऋषि वनिकनैत। मुदा तैयो मथिषियकें सायनाक सुठवाड़ी उगा नपने अछि। जस सुठवाड़ीक सुठ मैथिलिगी सीता सजवैत नहै अछि। गे मथिषिक भूमि वदवठ, आ गे वदवठ ऋतु ऋतुना, वदवठ नहै अछि। प्याठि वगतक नसा घनक समस्या कहाँ? समस्या तँ तपन उठैत तपन नहैक घनसँ घन-गाड़ असुठैक व्रियान जगैत। गाछक गियो साग हाथ, गौ हाथक घनमे जीवण-प्रापन कऽ वेद-पुनास सजिगथैत। की हुनियोकें देपनहिन मथिषियकें छोड़ि देप नहै अछि? जँ से नहि तँ समस्याकें कोन रूपे देपथैत? यएह गे सनकानी योणना जहनि कागपन औषधाधन वना साठे-साठ मनमनक नाओपन योणना छुटाइ नहै आ पान साठक वाद माटपिन प्यसा मठवा हटवैक प्यन्य हेश नहै।

पेटसँ उपज प्यढ, वाँस आ सावेक घन वना समस्याक समाधान कनै छै। ओ सज अपन व्रियानकें स्वतंत्रता नपि स्वतंत्रता जीवण वेगि कनै छै। पढे-ठपिक ओते समस्या नहि, कएि तँ जेहेन जगिगी नहै, तेतवे वुयकि गे जूनन हएत। वेसी मेथसँ तँ ठेक छडेप-छडेप अगको गाछक आम तोड़ए जौए। जेहँ अपन पूनवणक घनाड़ीपन गढ़ियो कएि गे गुकए, मुदा हुनियोकें मान भूमि कहि सेवान नहै छी। ओही रूपक सुसधिन वना जगिगीक गान्दी केने छै। अप्पनका जकाँ नहि, जे एक दसि उगिगी उगा गाँठा तोड़ैक वाट येगे छी आ दोस दसि हजान-दस हजान वनप्य जीवैवठ ऋषि-भुनकि हुहाइ दइ छी। एकैसम सदिमे कियो अपनकें ऐगठ पौढीक गजैक पुतली वना नहै छी। जहनि वनप्या, नहनि जाड आ नहनि



नौदक नाप नापैत लोक अपन वाठ जीवणसँ छऽ कऽ वृद्ध तक अनुभव कएत जनिगीकें असथानि वना नीक-नीक उमेन पवैत नहैत अछि।

पुनश्च उँत जे की एहेन ब्रियान मनीगैत आकजिबति अछि? ने मनैत आ ने स्वस्थ नऽ जीवति अछि गाम-समाजमे छटपटास जिवति जून अछि मुदा। जीवति ऐ नूपे अछि जे अपनो प्येतीकें उत्तम मानैत जास अछि कृषि जनिगीकें थाहियैत। तूमे समाजक सानपन तँ आनो थाहैत अछि जऽ जनिगीमे दोसनाक जूनन बै हुअए तँ ऐ सँ नीक जीवण केकना कहैत? आहुक हवा गैत जेतो जे मानैत मुदा असथानि वस्तुकें कहाँ कछि वगिडा पियैत। अनुभव आन धानमे ने नमन-नमन जेयनक मय नहै छै कएक तँ युमैत यान जहिन-जहिन मोहन खोजैत छै जऽमे ने दुमैक डन नहै छै, जँ से नहै, तँ दुमैक डन केत। नहिन ने यनयिनीक वीथ अछि जहिन पानमि गोह, नकान आदि नहैत नहिन ने यनयिनीपन वाघ, सहिसँ छऽ कऽ गाव सेहो वास कएत।

थाहैत जनिगीक अर्थ ई जे जँ नीग वीधा वा दू वीधा जमीनमे समुयति वेवस्था कऽ प्येती कएत जाए तँ युगावृद्ध मनुष्य वनव वड गानी नहिन जनिगी तपन गानी वनैत जपन गनथाहमे पड जास अछि ओना, कसिनक जनिगीकें पंगु वना देत जे अछि जँ से नहै, तँ कसिन हतिषी कोन जूननक पूर्ण सनकानी वेवस्थामे ने नऽ पाव सिकैत। मुदा नीको-नीको पनविान भागे दस वीधासँ उपनवठ कसिन पनविान ने अपना वेटाकें नीक शिक्षा दऽ पाव नहैत अछि आ ने जगमाना वनिनीक श्रम कऽ पाव नहैत अछि जहिन सुनि उँत 'सोना-नाम', 'नाया-कृष्ण' वा 'सगनाम'क नाम छैत जास नहिन ने आव 'टाटा-पापा' छैत उँत छी। मुदा, की हम सन गढ़ना मकै सद्ध जनिगी बै जीवै छी जे भोगन गाछ नहिति अनुभव केतौ पना नहै। कृषि तँ आमक वगीया वा प्योडाक छती सद्ध अछि जहिन गाछक पठ्ठक मुहसँ गनिहे-गनिहे पठ्ठक नकिहे डानि वनैत नहैत, प्योडा छतीक मुहसँ छती वन श्रुति-श्रुति नहैत नहिन ने जनिगीसँ छी जे यनीसँ जमैत श्रुति-श्रुति वसिनज कना। प्येन तँ ओह सन्पैत छी जे जनिगीकें आगू-वढवैक शक्ति नपैत। केतवो शक्तिशिथी कए ने आगू हुअ मुदा जँ ओमे नव जवणशीत वस्तुक समाज बै हेतौ, तँ केतकाँ ओ जीवति नह सिकैत। मुदा जायैत यान टपनहिन वा सनोवनमे सगन केनहिनकें पानक थाह बै छी जास, जायैत यान टपन वा सगन कनव तँ अथाह नहिन आ जायैत अथाह नहिन जायैत संका नहवे कना। जायैत आसंका नहिन जायैत ब्रियान पुनर्जाति हेवे कना। मुदा एतेक वावजूद हम कए? की हम ने जमै छी जे जायैत कृषिकें सन्वांगि विकासक पुनर्जातिमे ने अपनौत जास जायैत नयानी-सोह केतकाँ सोहनगन हस। हन आदमी आ हन पनविानकें गढ़ नऽ यँक पुनश्च अछि, बै कएक दोसनाकें छटकी मानि पिसवैक।

पाँयटा कसिनक संग वनसिठ सेहो वनगि-दमकक ब्रियानकें आगू वढवैक। पुनश्च कात्यायनसँ सान्म छ वैकमे आवेदन देत। संगीक जूनन तँ पडवे केत, कएक तँ जनिगीमे पहि प्येन पुनश्च कात्यायन आ वैक पहुँचैत अवसन भेटत। नव प्रोपनाक काज वैकमे आएत। ओना गामक आ गामक कसिनक हिसावे वैकक संप्रदाय दूक डाढ़ि छै, मुदा छैत तँ।

वनसिठक आवेदन सूचीक किनैत जमीनक वौण्ड वना मासन एगिशनकें काज कएक गान देत। वैक-कनक सुदि सुन भैत।



माइगन ऐगिशनक आँट-पेट छोटा। एकाएक काजमे वढोत्तनी भेला ने काज कनैक औजान अथकि आ ने कनैवला। तँए ठीकेदानीक यथेन। तहूमे एक अनुमाइडक वीय एकटा कान्थायला छेनहिन हजान हाथ, देनहिन एक हाथ मुदा तैयो वनसिवाक आदेश पत्तकँ श्वसमे छला देउ गेला एक-तहिर सवसिडि छेउ सवसिडि कान्थायक जूनान नहवे कनइ जे जाविक अन्तर्गत छला।

दौड़-वनहा कनैग वनसिवाकँ पत्तक संग-संग साठ वीगिगेल। वनसाजमे एक तँ वसना यँसैक डन दोसनी छोक प्येती कहियो कनान। वीगिक काज छोड़ वनसिवाक प्येतीमे छगिगेल। पहिछ साठ वीग, दोसनी साठ सुनू भेला। ताथैन वैकक कान्थायक वृद्धि व्याजक दनसँ एते मोटा गेउ जे सवसिडि तहमे उथियो गेला।

दोसनी साठ, सुनूहसँ वनसिवाक अपन काजक पाछू पड़ि गेला मुदा आइ-काइकिनैग माइगनो-ऐगिशनक काज आ सवसिडिओ अँशसिक काज छटकथे नहथै। यदैन वैसाय वनसिवाक नघुगदगकँ कहक-

“वैआ, छोड़िहका वीगिगि ने भेउ तँ कनजो तँ नहथिँ भेला वुहवै जे एते दनि घुमवे-श्वनिवे केवौ।”

वैकक पुनकानिया नघुगदगकँ वुहवा वनसिवाक वाग सुगि अवाक भइ गेला मन कथैप उड्यै- वाप ने, सुदी-मुनिछेद। गेथै, कोट-कयहनीक मुद्दा वनगिगेल! दोय केकना छगौ? कोन मुँह छइ कइ समाजमे नहव!

ज्वागसँ नघुगदगक मन वसिशन भइ गेउइ साहस वदोनी वाजक-

“काका, जँए एते दनि तँए दू मास आनो। वैसाय-जोड वँयथ अछा काइहियू, या तँ अपन काज आपस छेव वा हाथ पकैड़ काज कनएवा तइ जे हेतै से देखथ जेगइ”

नघुगदगक वाग सुगि वनसिवाक भैक गेला वाजक-

“वैआ, हम तँ तोनेपनी छी, आगमि जाइथे कहह आका पानमि, तोनासँ वाहन थोड़ हएवा”

वनसिवाक व्रियाग सुगि नघुगदगक मनमे उत्साह जगल। दोसनी दनि दुनू गोने माइगन ऐगिशनक कान्थायसँ वीगिगि गाउँक सामान गेने आएल। गाउँक दनि तकवए गेउ तँ आगूमे भदवा पड़ैत नहइ जोड़-घटाउ कनैग आठ दनि पछाइन वीग कनव सुनू भेला सनिश्चि ठीकेदोनेटा आएल वाँकी सन काज गामेक मजदूर कनान। ओना वीगिक काजमे गामक मजदूर अनाड़ीए छथ मुदा अनाड़ीयो तँ केते नंगक होइ छइ कनि। जेते काज तेते जीवनी आ तेते अनाड़ी। जप्यने काजक छूनि भइ गेउ जप्यने जीवनी, आ जाथैन ने भेउ नहउ ताथैन अनाड़ी। तेतवे नहथि, एक काजक जीवनी दोसनी काजक अनाड़ी सेहे होइथे अछा। तँए जीवनी-अनाड़ीक भेद कनव कइनि। ओना, काजक भतिनी जीवनी-अनाड़ी होइथ अछा। पहिना एकपन साए प्यड़ा अछा। पहिना कहथे तँ ‘एक’ पहिछ सीमा भेउ आ ‘साए’ दोसनी सीमा, मुदा दुनूक वीय अन्त ओतेक अछि जेते एक पुनरिनि आ साए पुनरिनि होइथ। पहिना काजक अछा। एके काजक नीतन साइयो नंगक काजक अँस होइथ अछा। कछि अँसक वादे जीवनी मानथ जाए छगैत अछि मुदा छूनिगि होइथो पूना छूनिगि नहथिँ मानथ जाइथ। पूना छूनिगि जप्यन मानथ जाएत जप्यन काज एक समए-सीमाक नीतन होइथ अछा। ओना, काजक सीमाक नित्यान न्यास पद्यनकि अनुकूल होएत। जँ से ने होएत तँ



कछि एहनो काज केनहिन छैथ जे समैयो-सीमासँ पहिनेहिकऽ छैथ आ कछि एहनो छैथ जे काज तँ कऽ छैथ मुदा समै-सीमा टपा कऽ तँ कऽ ओकरा अगाडी कहल जेत?

मुवाश्म माटी नहेन सवा साए छोट वोन ओठे दनिमे मऽ जेवा छेयनो वढायँ, याविस छोट छेयन। ओना जँ नीक छेयन होश तँ पनहो छोटमे पाँय हास पावनक रंगन पूनास पाव पकड़ैत, मुदा छेयनो तँ ठेकाव नहि, नीक-अथवा संगे अछि कोनो वाउठ-जोना सौगवी-एहेन होश जसमे पावकि मात्ना पनह पुनःशिक आस-पास नहैत आ कोनो एहेन होश जसमे असूसी पुनःशिक तँ पाव नहैत। मुदा वनसिवाक वोन छेयनक स्थिति कछि गनि छल गियँक नीस छोट छेयनमे असूसी पुनःशिक पाव छल आ उपनकामे कमा तँ गिकेदाज वाजल-

“वनसिवाक वावू, अहाँक तँकदीन नीक अछि कहियो वोनगि- मथन गै हएत। कएक तँ तेहेन गयिवा वाउठ अछि जे सभ दनि पाव दिनदनाशे नहैत। तँ नीक हएत जे जहनि मीत-घनमे ठेमा-ठेमा नहैत पड़ैत नहनि कछि दनि जे वोन ठेमा जाएत तँ धँसना धँसैक सम्भावना समाप्त मऽ जाएत। ओना कुनसगि-पासपसँ वोन कएत अछि, पास छोट कएमे कोनो दिकता हेवे नै कत, मुदा अही हनिमे कहै छी।”

गिकेदाज मुहसँ ‘तँकदीन’ सुनि वनसिवाक मन उच्यो जेवा गिकेदाज एगठ वात नीक गहाँत सुनवे नै केक। अन्तर्निमे ‘हनि’क यन्त्र सुनि वाजल-

“गिकेदाज साहेब, अहाँ कऽ कियो वीनाग थोड़ छी जे अथवा कतवा अहाँ तँ सद्यः रूढ़ मगवान छी, जेमहन तँकदिवै तेमहे तँकदिवस जेना-जेना अहाँ कहव तेना-तेना कएत तैयार छी।”

गिकेदाज वाजल-

“हमनो गाम जेना वहुन दनि मऽ जेवा अपन आँखसिक छुट्टीक काजो नै अछि कएक तँ वोन कएक सीमा जेते अछि तँ पूनैमे एकवेन गामसँ दुमि आएत। अहाँक काज नीक हएत आ अपनो काज मऽ जाएत।”

कहि गिकेदाज गाम यठि जेवा

पनह दनि वीनागि जेवा जेठ यठि जेवा नोहिस गच्छतक आगमन मऽ जेवा संयोगो नीक नहल जे अगते वहिदियो हल सेहो मऽ जेवा जहनि मकत मगवानक मठिन होश नहनि वनसिवाक मनमे उठ- अपनो हाथ पाव आवाजि, उपनसँ मगवानो देत। पावकि धनिक वनि जाएत।

जहनि टकुषी अपन पाँयक होश केने वनि हलमे उड़ैत-उच्योश ओतए तँक पड़ैत जास जेत आ ओक पाँयविकावू मऽ टुटि जास छै, मागे माटिक युट्टी वा गाछक घोड़नक पाँय होश जहनि मकत दनि उच्यो जास छै, मुदा वुह नै पवैत अछि नहनि वनसिवाक हँस उठ। मुदा नोहिसयँ हल जहनि धनीक सक्रामि नल उज्जा दैत नहनि वनसिवाक मनमे आएत। पन्थियो आ दुनू वेठोकेँ सोन पाड़क।



छामे अर्वाते तेठ ब्रह्मिण वय्याक मुँह छवि धनैत अगनेवा जकाँ हनियसँ छठ होश देय्यक। नहिना पन्नापौक ओ दनि मन पड़ैत जइ दनि हाथ पकैत जनिगीक गान उठैत छथि कहि गे छेक गान उठैत। जप्पन एकटा नव शव्द गाबैत संग पूजैत जाबैत ओकर मथन होश। गै तँ संगे कहि नहान, वड़िला दुनयिँ छै केतौ बौड़ जाएत। पन्नीक नव रूप देय्य वेटाकें सम्वोधनि कएत वनसिछाव वाजए-

“वौआ, तोना समकें नहिना कोना-काँपमे प्येठयिह नहिना हँसी-पुसीसँ जीवैक ओनयिग सेहे कऽ देठयिह।”

पानकि वाग सुनि सुसीछाक मन पहाड़क हननासँ हड़ैत पानकि यमकैत गेन जकाँ यमकए छथि। वजए-

“सोहहे दीक्षा देगे गै हाएत। एक-एक दनि, एक-एक क्षमाक काजक वाग बुहा दियौ जप्पन हएत?”

अप्पन धनी वनसिछाव कोट-कयहनी कएत वृहन् कछि सीप गेने छथि। गाम-गामक प्येती-पथानी, सुठ-सुठहनी, तीमन-ननकानीक संग गाम-गामक माठ-जाठसँ ठऽ कऽ माछ पोसव श्रृंखला सज कछिकें देय्य-सुनियुक्त छथि।

नहिना मडिठि सूकूक वय्या हरि सूकूमे पुनवेस कएत नव-नव पोथी देय्य छथि। ओत नहिना वनसिछावक दुनू वेटाक जजिआसा जगथि। जजिआसा देय्य वनसिछाव वाजए-

“वौआ, माटमि धन छड़ियिए छै प्याथी वीछनिहिन याही।”

अप्पन धनी दुनू गौर आमक टुकठासँ ठऽ कऽ पाकठ आम धनी वीछियुक्त छथि, तँ वीछैक वाग सुनति जोड़का वेटा-महावीर-पुछक-

“केना वीछियै वावू?”

वनसिछाव वेटाक पुनश्च सुनि पुनश्चि गेथि। आपुन वेटा जकाँ नहि, जे नोकनयि कएत आ नोकनो नयैत। जप्पन अपने काज अछि जप्पन अपनासँ जे समए वयन सहए गे दोसकें देवा वाजए-

“वौआ, अप्पन तँ सज गानी काज कए-जोकन गै मेठह हेन। ओना, कनी-कनी जँ हेन्डठि मानव सीप ठेवह तँ दमकथे यथारु गारु जोतह। मुदा जँ दस कटुगमे साथे गनी ननकानीक प्येती कनवह तँ ओते कोन पनदेशिया कमाएत। हँ समए वदठगे छेक नंग-वनिगक वृत्तियिँ वदैठ छेक हेन। जइसँ कछि अनाप-सनाप सेहे गऽ नहथ छथि मुदा बुधकि संग पूजी आ पूजीक संग बुधकि गै यथ तँ अगेने दव-उगान होश नहान।”

जोड़क पुनश्च दनि वोनगि छेठ मेठ। छेठ होशसँ तीन दनि पहिने अपन उषा मशीन आवगिठ नहथ वोनगि छेठ कऽ गीकेदान-मजदूर मथि माछक गोण प्या, सोठह घन्टा पानि यथ काज सम्पन्न केथक।

अप्पाद यदति मागसून औन गेथि। पहिठिके दनि तेहेन वनप्या मेठ जे प्येन-पथानमे पानिछागिठि नीयथ। प्येती बुडैक उक्षमा धऽ छेठक। तेसने दनि वाढि यथ आएथ। पोप्यै-हँप्यै, यन-याँयन गनी गेथि। पानपिन पानि आ वाढपिन वाढि केते वन



आवागिओ दहान गऽ गेओ एहेन दहान मेओ जे गवान पावैगोकें ओक वसैन गेओ मुदा कानकि अवैन-अवैन नवी-नाय छोटव सुनू मेओ गहुमक प्येगी नै गऽ सकओ कएल तँ अग्नमे गहुमक प्येगी सगसँ महग प्येगी होश। मुदा याग नै मेने कसिगक स्थिति वगिड गेओ।

एक तँ ओहनिओ वनसिओक स्थितिहू साओक दौड-वनहमे वगिडछे छेछे तैपन दाहि आनो वगिडदिओकै। साओ गनी वोनगि-दमकओ वसओ नहि गेओ। नानकानी प्येगीक ओहन दशा वगिडओ जेकन वगान नहि कय्या सौदा, गष्ट होए।

देपैन-देपैन सगासीक वाढिआ अगासीक गुमकम आवागिओ जग-जग वनसिओक श्रुड-श्रुड कनै। श्रुडश्रुड नहओ छओ। नहि वीय वैकक पक्षसँ जमीन-गिमीनीक गोटसि गेटछै।

○

शब्द संप्रदाय : २८४३

पहेशीवेटी

उवाइन होशो घटक काका दाँग पीसैन काकीपन वगिडैन घन छोड़ि व्रिदा मेओ। मगमे उठैन- एहेन पडाइन पडा जाइ जे दोहना कऽ ने घनक मुँह देप्यो आ ने घनेवाओका मुदा ओहन कनोचे आकाहँसेवे कजि दोसनपन नै वसिआ। एक तँ घनक वाग नहूमे पगि-पगिनीक वीयक, तँ अगका वगवो उयति नहि दुगपिमे केकनो कयि ने कहै छस गछे वगि कहनौ दुगपि कए ने बुहति होउ।

मगे मग घटक काकाकें पकयिा गनिमाए गऽ गेओ। ओकोकें कोन माओव छै जे वगाह जाकाँ अगेनो अगका देप हँसदिव आका वगि माओवो-के घनटा गनिकेनौ सोपन पसानदिवा ओगा, घटको काका आग जाकाँ नहि, जे आँगनसँ गनिकेनो डेढ़पन-सँ पाछू घुमि-घुमि देप्यए ठगतिथ, देप्यवो केना कनतिथ? कोनो क अदी-गुदी वयिानक योट ठगओ छैन, पुनूपे छओ। जे अपनो यनविनदास केने छैथ, नहि तँ मूसक दवार पीव नेने नहतिथ।

एक तँ ओहना अपन घटक काकाकें टोकैक ठगन नहि, कानाम ठगनक समए नै छी, ठगनक समैमे ने पगपिनी ठगओ कान नहै छैन, कुसमैमे तँ दुगपिाँक गनिमे छै जे अपनो ओक पुछेछे तैपान नै होश अछि, घटक काका तँ सहजे व्रिदार ठेगहिन छैथ। वगि नेटक आमदनी। जेहेन मुँह तेहेन आमद। ओगा, गर टोकैक ईहे कानाम अछि जे मय-असनेसक गनिहसनी यथैए, आर-काउह जेते समए ओक केकनोसँ गप कनत तोकाओ जँ देहे कुनयिा छै तँ ओइसँ वेसी नीका गगवान केकनो अथवा वगा पडवै छथनि, गछे नोरो-वयिायकिए ने होउ। जँ सग अथवे नहैन तँ कए कयिो देह कुनयिवैछे सोनाक सकिका वगा-वगा आगूमे नपैत। ओहना पैघ शैनीकान कहै छैथ-

“न होहँमे मजा है, न कठकैओ मे मजा है,

पुदा ने दयिा पुजथी पुजथने मे मजा है”



प्याएन जे हौउ। ओना कृषिकानक समए नहने देवयिँ देवना अप्पन छुट्टी भऽ गेने छैथ, यौडयनक पछाइन पत्राइन कनगा। पहिना सुठही थानीमे जोगेकाए दही नहै। ओते वेसी कसाइन होश पहिना घटक कक्काक मन कसाइन भेठ जाइत नहै। पहिना गनै पेटक पुनेम-गीतक सूत्र आ गनै पेटक पुनेम-गीतक सूत्रमे मात्राक भेद होश पहिना घटक कक्काक मनमे उठैत नहै। जे आइ धनी कहियौ नर उठै छै। केना नै उठैत? सभ दनि दस गोनेक वीथ हँसि-वाजा समए प्यटियैत नहै। आ आव जायन शवि ठगिक, सुठ जाकाँ वा गानयिठ-गाइ जाकाँ सुठैवथ भेठ तँ आनक कोन गप जे जाँघन वसैवाथि पानायिँ हुनकानि दैठकै। ई तँ हनिके यावसुसी होनि जे पहन-माहुनक कोन गप जे केकनो भगवनी नै यौहै छैथ।

कसाइन वीथ वसिइन भेठ घटक कक्काक मनमे उठैत। जनिगी गनिये वसवैक काज कनै। एही मुदा? वेठ, पुनेमसँ याहे वगैर कऽ आका पड़ा कऽ पनदेश यथि गेठ तँ यथि गेठ। सवहक वेठ सासुन वास कनै, ओहो कनह। मुदा पानी तँ पानी छी। जाँ घने नहि, तँ घनवाथि की, आ घनेवाथि नहि, तँ घन केहेन। गाड़क घन जाँ अपना घन सन होशै तँ मूसे कएि घनमे घन वनवैत। ओकनो तँ पानयिँसँ आ पाथनोसँ गे जाण वयवैक छश मुदा कएि? अपन घन कयिँ अपना वयियो अपन आँट-पेटक अगुठ भवार्-यौड़र नापिकऽ वनवैए तँ वेसी सुनकषति होइ छश मुदा गामेशजी अपन ब्राह्मणकँ ई वाग ने कएि बुहा देठपनि जे ठेकक घनमे जे घन वनवै छै, से अपने-जोकन वनवहिँ। नर गीतपन घन गढ़ अछि ओकने कएि जाँघन वना दश। जायन गीते जाँघन गऽ जाएन जायन हथिपिक हाँट केना वनदास कनगा! घन प्यसन घन वनहनिहिनक मुदा मूस तँ वीछेमे अगुठक ठेनीपन अनामसँ पड़ैत नहै। ओकना थोड़े कछि होतै, ओ तँ अपन घन पनाए दसि वनौने अछि, आ घन प्यसन धनीपन। कएि ने ओकन जाण वयठे नहै? तैवीय घटक कक्काक मनमे एकटा घटकैनी आवि गेठै। मन पड़ति गेनपन तेना मुसुकी आवि गेठै जे गेन वनदास नै कऽ सकैत। प्यापैड़क तीसी जाकाँ यनयना उठैत। कहू जे वेगवा सन छोड़कँ रगुनक पनी सन कनयिँ केकना कनितवे भेठश मुदा कठपुताक उपकान हया वनवैत। जाँ से नहि, तँ ओकना जाँ अपन उपकान मन पाड़ि दैवै तँ कौओ नै कहत जे पाँयो टुक कपड़ा आ दैछना कथीक गेने नहै। ओ प्यसनामा देगे नहै आका काज कनैक वोश। मन घुमिकऽ पानीक कहै वातपन आवि अँटैक गेठै। कहू ई केहेन भेठ जे मुँह छोड़ि दुसै पानी कहैत जे अहाँ आगू-पाछू कछि सोयै नै छी, जहाँ कोसीकाक वकेनमा दूधक दही आ ठिफोनक नुआ आगू पड़ै आका वुधएि वगैर जाइत! नर पनविन भेठ जनिगी गनियँ-सूस वाजा, नीक-अथवा काजक वयियन नै केथै नर पनविनमे एहेन जाँघन हुअ तँ मनुष्य केनै नहै?

घटक कक्काक प्यौह आनो तेन भेठै। प्यौहान मन कहैकै- पानी नसनामे जोड़ा अँटकौनहिन के? दस गाम धूमै छी, दस ठेकमे नै छी हम आ उपदेश देती ओ! जे सभ दनि जाँघक गयिँयाँ नहै ओ छड़ैप कऽ छातीपन यढि मुक्का देयौती; एहेन पुनुष हम नै छी। पहिया जे होतै से होतै अप्पन घनसँ नै पड़ाए।

घटक कक्काक नक् पुनैत तँ देयैत जे आव तँ कठिनीटन गनी हटि दोसन टोठ भगव पुरैय जेठ छी, घुमिकऽ आँगाज केना जाएव? केनवो कछि भेठ तँ भेठ मुदा पुनुष अपन पुनुषपना केना छोड़ि दैत? गेनौथ थूक केना याटत? मुदा अपने सुनगे घुमवो केहेन हएत? मनदक वाग ब्राह्म समाज होश जे धनुषसँ गकिँठ जेठ गकिँठ जेठ! वड़वड़ाइत घटक काका अपन हुन हथक ननहथी माथपन भऽ वैस नहै।



जहनि कसिअ, वनि पुनपयौक गाछक जड़िआ वैस युटकीर-सँ पढ उपाड़ि किमठैग कनए ठौग जहनि घटक काका धुमैक ओनयिअ सोयए ठावा। मुदा ठावे मन पुनछए ठावेन। ई तँ वोवयि कुकुनसँ टपव हए, जे ने घनक आ ने घाटक नहए। जँ वठजोनी घनमे नहै याहव तँ पत्नी केने मोजए देनी। मन धुमैग। हमनो एते ने अगुतेवाक याही छव जठनी अपनो मेथ। एना जे ठेक छोट-छोट वागपन घनसँ पड़ाए तँ कहियौ कुकुन-वठिअ जकाँ अपन घन हेअ सँहू पहन, जप्पन ठेक वाय-वोगसँ अवेए जप्पन केकना घनमे ने हन-हन-पट-पट होइ छै, मुदा कहाँ कयौ हमने जकाँ नूसि-शुठि कऽ पड़ा जाइए। जँ एकनगी एव-उगन वाग पत्नी कहवे केवेन तँ की हेअ कोनो कि जड़ि मोना कऽ टकि काटि छै। अन्ध्यांगी छैथ, वाठ-वय्या आ पनविनपन जेते अयकान पकि होइ नसँ की कम पनयिौक होइ अछि। वेटा-वेटी तँ हुनूक छी। ई तँ समैक दोप छी जे कप्पनो जगनी आनजगना दैत अछि तँ कप्पनो डँढी आनडँढा दैत अछि। सौहुका हगड़ा नागपिसैत-पसैत मेटाइए जाइए कनि। आका हमने जकाँ दनि-नागि वेने नहए। मोन होइते हुनू पनानी घन-अंगनाक काजमे ठागि जाइए कहाँ एको मसिया। मान-जोय मनमे नपैए। जहनि उकिसनगेमे गवका सव्द अवागि अछि आ जाइतो अछि। जहनि ने घनमे कछि-ने-कछि अवागि नहए आ कछि-ने-कछि जाइतो नहए। मन आगू धुसकैग। आगू धुसकैते घटक काकाकँ मन पड़ैत अपन वआहक दनि समाजक वीय सनयिनी-वनयिनीक वीय तँ हमहि ने हाथ पकैड जनिगी ननी संगे नहैक वादा केने नही, से की मेथ? जहनि कटहि गाड़ी कुजानक नसुतामे कनी एव-उगन नऽ उगटयि जाइए तँ कगि गाड़ीवाग गाड़ी नपनाइए छोड़ि देत। जँ छोड़ि देत तँ आगू केना धुसकत? औगुनाइमे एहेन नानी जठनी ने कनक याही। कोन हुनमयि यदुगेथ जे एना केवौ। एकोनगी उमनोक ठेहाज-वयिअ केवौ? पुआन जकाँ नगिहए केवौ। कहू जे आव हमन उमेन अछि जे संगी छोड़ि असगने नही। कोनो कि संयासी छी जे दोसन ने सोहाए। अपने दनि-नागि घिमे डुमठ नहव मुदा दोसनकँ कुनना जकाँ पयैये ने देव। ननी दनि सनयिहि गुड-याउन यविवैत नहव आ अगका देपवे ने कनवा जँ केतौ जाएव तँ पेटी संगे जाएत। पेटक आगि जेहेन पनविनमे तेहेन नीय-स्थानोमे जगति अछि। ओकना नृपतिकन आवश्यक होइ। जँ से नही, तँ नूपे नपन कए ने होइ। प्यासे के देत? जँ देवो कन तँ एक मुट्ठी देत। एक दनि पेठासँ जनिगीक नूप मेटाएत? जँ से होइ तँ उविपि ठऽ कऽ नकठापन एकोटा नपिमंगल ने मेटैत।

मन धुमैग। हानी मानी हगड़ा अयिअ। जहनि वाढकि तेसना दनि पानी गढ नऽ उगटा-पुगटा दशि पकड़ए ठौग जहनि घटक कक्काक मनमे हुअ ठावेन। अपन वयिअक अगुकूठ वाग केकना अयठ ठौ छइ संयोगी नीक नहैग। मुदा मनमे पनयि ठावेन। समाजो तेहेन नऽ गेथ अछि जे केकना के पुछत? जहनि मोजक जए वानीक मठिअ पनसैए सए माछो-मौसु। कहू ई केहेन मेथ? सन नहक पनयैती वड़के काका कनत। जमीनोक पनयैती आ हुनू पनयिौक हगड़ा हुनके याही। जँ जमीनक पनयैती अमीन ने कनत, अहि सन गुप्तक आधानक से आदमी ने कनत तँ पनी-पयिडीमे कोनो मेद नहए!

ई सन जप घटक कक्काक मनमे नयति नहै, जप्पने सुनए ठावे टोकठकै-

“नाय साहैव, अही ऐगम जाइ छी?”

‘अही ऐगम जाइ छी’ सुनि घटक काका औगाए ठावा। अपन गैन केनए अछि जे जाएत। की कहवै? से नइ तँ ननमे-सनम आँपि मुनि ठऽ छी जे वृहए हवामे अठिसा गेथ छैथ।



उत्तम गै पाव सुन्दर १७७ दोहा देठकै-
“गाय साहैव गुरुआए छी, गुरु प्योछी”

अकयकाश घटक काका वज्ज-
“गुरु, गुरु! कनी आँपि ठागिठो की कहैछ?”

सुन्दर १७७ कहैछै-
“घनपन यछी गयिगसँ वृद्ध देव, नसना-पेनाक गप गै छी।”

एक गँ नाकस दोस गौग घटक काका हने-हने कऽ घन एसि वृद्धि भेछ। मगमे उठैग जे कोनो व्रियाग दोहनाइको कऽ
हेश अछि, किए गे दुनू पनानी मठि छैसँ व्रियानि छै।

घन एसि वृद्धि हेशो घटक काका सुन्दर १७७कँ कहैछ-
“गापो सुनू कनहा जेते भेठ नहान ओते गँ कापो गे भेठ नहान।”

कृपुव्य हेश सुन्दर १७७ कहैछै-
“देप्यौ गाय, वरिह भेठ केकनो आ जहमे अछिहमन वेटा।”

अकयकाश घटक काका पुछैछ-
“से की, से केना?”

“से की, से केना?” वाजघटक काका मने-मन महावीरजी कँ गोड़ ठागि गिसँस छोड़ै, सोयए ठावा- वाप गे एकटा
काजमे जँ एना भेठ, हम गँ जगिगी गनयिए केवौ! पुनी केसमे वेसी दगिक सजा होइ छश मुदा पुदनी-पुदनी केस मठि गँ
ओहूँ वेसयिअए जाइ छश हे गगवान, नय्छ नय्छह! आवो छोड़ि देवाक याहि!

घटक कककाक मन जेना समकए ठावैना समकै मगमे उठैग- जाइ शंजीनयिनकँ जाइ मशीनक वोच गऽ गेठ अछि, जँ
ओइ मशीनक नकनीक वदैठ जाए, नय्छ की हए? दोस गँ काजक ठूनी कहियो भेठ जे कनवा हे गगवान, जगहिह तू!

तैवीय सुन्दर १७७ कहैछै-
“जैया देप्यौ, हमने वेटा सुठवाक वरिह वंगठोने कना देठकै ओह-ओहकँ गाममे के पुछै छश मुदा टनसपोटमे
नोकनी भेठे दनि-दुगियाँ वदैठ गेछ गयो सोपि छैक। अठाना कमार हुअ ठावै वीए पास उड़कीक संग वरिह कना
देठकै।”



घटक काका-

“वीए पास भङकी गछभकै केना?”

सुग्दभभ-

“केहेन गप कनै छी। नपनने ठेक कमए-पटाए भौए नपनने ने सन्तुष्टिकिटक ओनयिग कए भौए। एभए पासक सन्तुष्टिकिट कीननेने अछी।”

घटक काका-

“भङकीवभ केनए-के छए?”

सुग्दभभ-

“नवठेवीक छए। तीस-पैतीस नपन पहिने गामसँ पड़ा कऽ गेभ नोकनी कए भौए। ओतौ पनयिनो नपैए, घनो-दुआन वना भेभका अपन श्वाकाक नानाबुह कुटुमैती कऽ भेभका।”

घटक काका-

“आव की भेभ?”

सुग्दभभ कहभकै-

“वश्रिहक वाद भङकी जोन केभक जो गाम नएवा एवो कएवा मुदा नहिन। पढभ सुग्गा वौक हेन नहिन। वेयानीकँ भऽ गेभ। पनहे दगिने नाकोदम भऽ गेभ। नहिन। सासु अछैए कहए भौए नहिन। ससुनो माथा पीटए भौए। सन-समागक नै यन्ये छोड़ा ने भाषाक नभ-भेभ वैसै आ ने प्पाइ-पीवैक वसुका।”

वियेने घटक काका वभभ-

“ई नै भानी जुभ भेभ! नपन की भेभ?”

सुग्दभभ-

“भङकी पड़ा कऽ दनगामे गाड़ी पकैड वंगेभ। यभ गेभ। हमन। वेटापन केस कऽ देभका। जोभने पढभ अछी।”

उदयिपन अचरि घटक काका वभभ-

“हेन नपनपनगी गामने यभै। अयछा कनी ओहू पान्टीक वाग बुह भेव नपन कहवह। अपैन नह, कनी हमहूँ ओगुनए छी।”



दरवाजापर गठ-गुठ सुनगिया आंगनसँ आवापिनहिंनक मेह जाकाँ वीयमे गढ़ गऽ सोयए ठाँठि- केहेन पुनःप छैथ
 जे थूक छेक पड़ाए नैथ जे घुमकि ए घनक मुँह गै देयव, से साँक कोन गप जे दगि गनगै गमिहिसकल! मुदा मग
 डमकछेन। सप्पन-कनिया छेककें थोड़े टकि पकैड उप्पाड़े छै, जाँ से उप्पाड़ति तँ गनदिनि छेक कएि सग वागमे 'जय
 गंगाजी' वाजिआकिमाटीउग-उग सप्पन प्याइए नहिनि छेक गान-नोटी प्याइए नहिनि ने सप्पनो-कनिया प्याइए वसु
 मेथ। प्येक पयवै, सेन प्येक सेन पयवै। नसे-नसे एहेन पयान पयि जाइ छै जेहेन हूँ-सय्यमे पयथ अछिआ सय्य-हूँमे।
 जाँ तुकवन्दी कनैक ठूनिगऽ जाए तँ सायन-कनविनवे कनव आ जाँ हूँ-सय्य पयवैक ठूनिगऽ जेथ तँ वक्ताकें के कहए
 सेसन 'अनुगवी वक्ता' वनवे कनव। नहिनि तँ हिनको जनिगी तेहेन नहथ छै। नहूमे समाज तेहेन छऽसेस दऽ देगे छै। जे
 साँठे-साँठ थोड़े नुनिअथ कनवए पड़तैन, ना-जनिगी छेथ वनिगैथ छै।

आँपि उग घटक काकापन देथैन तँ देयवैन जे मुँह युआँ केने छतकौने छैथ आ नहिनि कोयठक युआँमे यमकैन विजि
 वनैन नहिनि उपदेश हाड़ि नहथ छैथ। जेप्याक मग नोषा जेथैन। घने पनविनक छेक कएि ने हेथ। मुदा नहिनि गठ, गठ छी
 नहिनि सहियो सेहे सहे छीहे। गठनीक की कोनो पानावान छऽ? नावस जाकाँ ठाप-सवा ठाप थिया-पुना नहिनि जेगामे छैथ,
 जे घटकि द्वापनमे साए-सैकड़ापन यथि एथे नहिनि ने अपनो अछि। नहूमे कछुग छी। पापेक युग। देवतो सग पड़ा कऽ
 उनीकुटी यथिगैथ छैथ। जाए तँ याहथैन समुद्र दसि मुदा मोन हेथो जागे सग नस्रोमे नहिगैथ। नोषाएथ जेप्या हपैठ कऽ
 वजि-

“वौआ, अही सग ने सन-समाज छी। जेहेन समाज नहैए तेहेन छेक काजो-उदेम कनैए?”

जेप्याक वाग सुनि सुगदगठक मगमे पंयक एहसास जेथ। पंयक एहसास हेथो अपन वाग वसैन जेथ। वसैन जेथ
 वेठाक नहथक उपाय। दमकथक यक्का जाकाँ पहियाक रूप वदैथ एक सुने मुड़ी जेथवैन वाजथ-

“हँ, से तँ छीहे केकनो कटगे समाज कटै छऽ। तेहेन छऽसा वनथ छै जे केनवो कटतै तैयो सटति नहौ।”

सुगदगठक वाग जेप्या गर वुह विजि-

“गर वुहवै अहाँक वाग।”

नहिनि नमहन गाँजैन नमहन जागवनक पह्यान छी नहिनि ने काजक गाँजैन मनुष्यक पह्यान हेथ छऽ। जाँ से नहि, तँ
 नावससँ पैघ आसन हनुमान कथीक वनैथैन। अही गाँजैनक वथे ने सौसे ठका जना देयवनि आ अपन कछि ने जेथैन। वुह-
 वनि-वुह दुरियाँमे केहेन हए जे ने हए। कोनो पूनसक उगन दुरीक एक गऽ सकैए। मुदा से हेथ छऽ वुहनिन संग
 वुहनिन नहैन तँ वनि वुहनिनोके संग तँ वनि वुहनिन हेवे कनै।

जऽ काजमे सुगदगठ अपने ओहनाएथ छथ नहि काजक ओहनी छोड़वैक गान छैन वाजथ-



“भौजी, अहाँ-हमनामे कोन भेद अछि नीक-अथवा सभ गप तँ दसि-भौजासमे होशो छश से किकोनो आस आका
अदोस होश आवा-नह अछि देख्यो, नहनि कनोटन शूठक पत्ता-पत्तामे गाछ पैदा कनैक सका अछि, नहनि ने
समाजोकेँ वनवै-भेटवैक दुनू सका छश”

सुन्दरिभारक ब्रियानक सूनमे अपन ब्रियानक सून भिबैत गेप्पा वज्जि-

“वौआ, पहिने कनी भैयाकेँ वुहा दियौन जे नूसा कऽ जे भगवा से कोन अग्यति वा कहयैना”

नमहन हगाड़ा देख सुन्दरिभारकेँ नमहन पंथक एहसास भेठ नहनि नमहन भिब जाश, नहनि सुन्दरिभार भिबैत
वाज्जि-

“भौजी, केना कहयैना हमा सँ-वहुक हगाड़ामे भवेटा पड़ैत अहाँ जे कहौ से तँ भास्यो-साहैव सुनवे केवैना”

नहनि एक युनक जठसँ सौसे घनक वस्तु पवति नहनि जाश नहनि घटक काका अपन गगनन सम्हारैत वज्जि-

“हौ सुन्दरिभार, नहनि तू छोट भाए भेट नहनि ईहे घनेवाछि भेठ। तँए वज्जिमे थोड़े कोनो यनी-योप्पा हएत। पुआनमे
नौगी घनसँ पड़ाश अछि आ उमेन वढने पुनूप। तोहि कह जे कोन जठनी केवै?”

मुड़ी ओवैत सुन्दरिभार वाज्जि-

“से के कहैत जे अहाँ अथवा केवै”

पाशा वदवैत देख गेप्पा वज्जि-

“वौआ, नौए-कौए कऽ भगवान एकटा वेटा देखैना अपने दुनू पनानी ने सोयव जे केहेन पुनोहु एगे घनक गाड़ी ससना।
सगिना-गाटक जकाँ थोड़े मनुष्यक जनिगी क्षमो-क्षम वदैठ सकैत आका क्षमो-क्षम आगू-पाछू भऽ सकैत”

गेप्पाक वाग सुनि, मुड़ी ओवैत सुन्दरिभार वाज्जि-

“हँ, से तँ होशो छश अहि कहू भौजी, केकना यवैत हमहि एगे तवाह छी। उहए छौड़ा माने हमने वेटा एहेन कनिदानी कएि
केठक? नहनि वसिह भेगे अगेने ओक घटक वनिजास नहनि कएि वनठ? नै वनठ तँ नहने कएि अछि?”

गेप्पा-

“अहाँ अपनपन नै भिबौ वेटा केठहा काजक दोप्पी वाप नै होश मुदा भाए-वापका कावहि भऽ कऽ जे कोनो दोप्पी भग
वेटाकेँ कहवै तँ ओ नै मुँह दुसैत कहत जे केकना केठहा छए। नहनि अपन वेटाकेँ पोसि-पाछि वसिह कनै छए नहनि ने सभ
कनैत। मुदा घनक भिबिनी जँ नै कनैत तपन पढैत सुगगा वौक नै होश”

पत्नीक वाग सुगंधिक काका सहमथा। पाछु घुमतिरुचैण तँ वृहपिउरैण पो केरो घुन-वृहप काण भेठ अछा। न्है
हए। ग्रह ने दस गोमेमे वणवौ। कोनो किरिएटा वाग वणवौ। सदकिरि तँ एहेन-एहेन वाग यथिति न्है। वड हए तँ वागव पो
पत्नीक व्रिया। नै भेठै। न्है के एहेन छैथ पो पत्नीक वाग काटि सके छैथ।

मग हठिहो। प्येठए ठाउँ। नहनि। पघिठ कटल गछसँ प्यसिति छँहोछति गऽ छड़िया। नहनि। घटक कककाक
मग छँहोछति गऽ छड़िया। गेठै।

○

शब्द संप्रदाय : २५५५, तिथि : २५ जून २०१२

मग

नानाजूक दुनू पठनाक वीय नहनि। उन्डी ठाउँ न्है, नर सहासाँ वसतु-जानक ओजग मगठ नहनि।
जगिगीक वीय सेहो उन्डी होश अछा। कमठ सुठक उम्मीक सहासाँ नहनि। सुठक सग अंग समान नूपे पवि-पवि पवि
नहनि। जगिगीक होश, मुदा से कहाँ होश?

जगिगीक नानाजूक पठना दू गंगक होश, एक पुठठ दोस गटवौ। पठनाक घटी-वटी भेने नानाजू पसगाँह गऽ नहनि।
नहनि। घटी-वटी जगिगी जीवक दू याने पुनवाहति होश यथए ठाउँ।

एक नहनि। अप्पाठ नहनि। दू गङ्गाक नहनि। जगिगीक होश, ओना एक पूना होश दोस अपूना भेने वीय-वीयमे तेसो
यथि अवे। तैवीय आदना गङ्गाक अपन पूना जगिगी वतिवै। गँ अप्पाठक पहिठ गग हे वा मध्य वा अग। पनह दनि
अगहन वीना आठ शोनाया मास टप गेठ। हाजनी मुकवैठे मौसम जोगान ठाउँ भेने अछि मुदा आदनाक उपस्थिति दिना नै
भेठ अछा। ओना कहैठे साठक पाँच वनपा गऽ युक्त अछि मुदा तैयो आदनाक जग उम्भस अपन पूना जगिगीमे जगमगा
नहनि। अछि। गोगुहाक हवाहकि जगपैक प्यो। जकाँ हाठ वनगीकें छुछुओने अछि।

दनि उगति नहनि। दनिगाथक दनशन होश नहनि। कसिनक वीय गव दनशन आए। ओ छी श्नी-वधिसिं प्येती कन।
मास दनि पून घागक वीआ, जैविक प्याद आ कटिगासक दवाइ श्पादिक वटवाना, पैछा हिसावे ऐवेन श्मानदानीसँ भेठ।
श्मानदानी ऐठे पो नहनि। वैकक कनपैकें ठेक यौक पनहक गुणपा प्या सग दैन नहनि। अप्पन वनकि वीआ-वाठिक हिसाव
नहनि। वैयानकि नूपमे वीआ पाड़ प्येती कनैक समर सेहो पौठका संयोगो नीक नहनि। पो एकटा वनपा सेहो भेठ। वनपा हाथ ठाउँ
कछि गोने वीआ प्यसौठे। द्येवामे वनपा भेठ, मुदा वीआ पाड़वठ नै भेठ। नहनि। वीआ अदहा-छदिह जगमग। कछि गोने
कठसँ आ घेठसँ पटा दुमा हाठ वन। वीआ प्यसौठे। जगमवेमे ओ सग जीगठ। मुदा कछि गोने अप्पनो वीआ घनेमे आदनाक
आशापन नपने छैथ। ओना, अदनासँ नहनि। गङ्गाक वीआकें गनीग मगठ गेठ अछि मुदा नहनि। गङ्गाक पछाश
हिसावकें अगदपि केने वीनाडेमे वीआ जगवो कनै। प्येतीक एक उपाय तँ हाथ आए। मुदा मूठ उपाय-पागि नै आए। एक
पाशापन गगवान वैसठ, दोस २००८ ईक कोसीक व्रिषिकि गहनकें प्या गेठ, नर ठाउँ १८८७ ईक वाढि आ १८८८ ईक
गुमकम वीस-पय्योस वन्य पहि वीगिकें प्या गेठ छठ। जगिगीक यथी कमने पोपैक उगहि सेहो नूकिये गेठ नहनि।



ओ अपने तेना नोगा गेथ अछि जे जान-थे नविके संग एकादशियी कनैए मनुष्यक जन्म-संस्कार ओन पनपव सुनू होश जेन ओकन जन्म होश अछि ई दीगन वाग जे केनौ पेटक वय्याक सेवा पोनगैसँ पहिनिहिन ओ ओन केनौ नसो-पेने जन्मो छै आ पाछो-पोसो जाइत।

आइनाक कानूनव्यक्त आपनवाहिसँ जग-जगक वीय नवाहि तँ ऐछे, जे श्रमक घटवी सेहे वेसियाइए गेथ अछि मुदा कछिओ कएि ने होउ आपनि वसन्तक उगाड़ियी मास तँ छीह तँ कएि ने वाग-वगीयामे वगवान वसन्तक संग यैतावन आ वनमासा गाएत। आमक संग-संग जमुनियी यान सेहे वहीत अछि।

ठेठक पाँय गोजेक गाछी एकठाम छै। साधानस पनविन तँ छोट-छोट गाछी छै। मुदा कठमी-सही सग नंगक आम ठुवथ अछि सग मछि कऽ कनीव पय्यीस तीस गाछ पाँयो पनविनक जीवन-सैथि एक नंग कऽ देगे अछि तँ वयिनोमे एकनूपा छै। एते जून छै जे वगि कहने कयि कोनो गाछपन ने देपा छैक आ ने हाथसँ तोड़ैत। मुदा पसठ आमक कोनो नोक नहि जइसँ येन तँ अपन-आनक ठेकाज जून वुहैत मुदा वाठ-वोच नहि।

पाँयो पनविनक ययि-पुता एकेठाम प्येवो कनैए आ आम पसठापन पवैठे दौड़वो कनैए। ओना अवोच वय्या नहने, अवाजकें ठीकसँ नै अकानि कयि केम्हो कयि केम्हो दौड़ जाइत मुदा केकनो भेटवापन एते पुसी सगकें जून होश जे हेनाए भेटै।

नानकि हू वगैत। उमस नगठ दनिक संग अहं नानियी वीन गेथ। एक वगेक वाह पूनवाक ठहकी उठै। दनि ननकि गुमनाए भग नोन दिस दौड़ै।

हुनू वेटाकें संग केने गुठजानी आमक गाछी वदि भेटै। अष्टमीक यान ठुपन नऽ गेथ छै। जइसँ अन्हाक साम्नाप्य पसैत गेथ छै। आठ गोजेक पनविन गुठजानीका तीनू वापन मछि आठटा पाकठ आम भेटै।

आँगन आवाँ डविमिक जगतमे आगे आम गन छोटका वेटा वाजठ-

“जोते गोजे घनमे छी सग-ठे एक-एक हिसावसँ आमो अछि।”

नाथेश्वरामक वाग सुनि गौनीशंकन वाजठ-

“जहनि छोट-पैघ आम अछि नहिना तँ घनमे ओको अछि, तँए।”

“नैय्या, अपन माएकें नपैठे दऽ दहका अपना सग पारवेन-मे पारवा।”

नाथेश्वराम वाजकिऽ युप नऽ गेथ।

○

शब्द संप्रदा : ६४६

मनोमथ

जहनि शोभा काका सभ छुट्टी गामेमे वतिवै छैथ तहनि सभ नवयिी वतिवै छैथ सुवयिी छैथ पाँये कोसपन वदियाथ छैथ, साइफि छैन्हे तँ अवे-जामे असोकनो नहयिँ होइ छैथ। शनकिँ सूकूओ अदहे होइ छैथ, सेहो सुवयिी भाइए जामे छैथ।

अगे शनजिहाँ साग वगे साँहमे शोभा काका गाम पहुँचथ। पछवनिा घनक दावा ठग। साइफि गढ़ कऽ कैनिनिपन सँ होना उतानि आँगनमे पएन नयनि छथि कनि पत्नीपन गजैन पड़थैथ।

जैठ-अप्याढ़ मास तँ उवियिी नेसैक ओनयिीन सुगयिी काकी कहै छैथ। ओना, उदियिीपन जामेमे साइफि पड़पड़एव सुनथैथ कविहूँ गेथि जे एहेन अवाज तँ अपने साइफिक छी। आ आँपि उँवते गजनिथि पड़ए गेथैथ।

जैठ-अप्याढ़ मास ए ठेठ जे पूनामि मऽ गेठ मुदा सकनँइ पछुआए छथि मुदा काकीक संयोग नीक नहथैथ जे गजैन-मे-गजैन नै मथिथैथ। जँ गजैन मथि जइथैथ तँ यूँही पजानि उवियिी नेसव वायति मऽ जइथैथ। तेकन ठाम सुगयिी काकी उँवते केथि। ठाम ई उँवते जे पतिक आगत-भागतकँ एक नम्वन काजक सूयिसँ गयिँयाँ उतानिहूँ नम्वनमे नयनि, कुशठ कानोगत-कठकान जहाँ एक काजकँ वसिनिज कनैसँ पहिने दोसनक संकल्प ठऽ छैथ। मने-मन वयिीन छैथि जे जावे जातैक युआँ सुनयि हए-हए जावे साँहो धुमा छेव। काजमे ठाठ देप्य शोभा काका वनि कछि वजने कोनयने ठासँ होना ओसाक योकीपन नयि पाकि पुनोक्था कनए ठाठा। केना ने कनिथि, जायैन घनवैया दिससँ पएन घोखे पानि नै पहुँचैथ जायैन कानपाना जहाँ उपस्थिति केना वगैथ। मुदा ईहे तँ मऽ सकैए जे अजगगतक सेवा योग्य पनविन नै हुअए? सुगयिी काकीक मनमे ईहे उँव नहैथ जे भाषाक कठकानी होइ जे एते सभैमे एतेटा वात वाजिदिव मुदा काज नइसँ वहुन हून होइथ। ओना, यथगतिनकँ पैनक गतिनोकिनिहिन सेहो वीथमे आवाँ सकैए नहयिँ औत, तँ ए जामे ‘हँ-नइ’ दुनूक सम्भावना होइ ओकन गान्दी शा-पुनशिशा नै कए ज सकैए। तँ सुगयिी काकीकँ हेना जे जैठम दुवयिी अछि तैठम सावयानी नै कनव तँ नेछे-ट्येन जहाँ एकठाम वठि मने गजगव्य स्थाग वनि वठिमेते ससनवा तेते नहै, अदहा दनिक यथ छैथ, वाटमे केतए आ की देपने हेना, जँ कही एहेन समस्या देपने आएथ होथि आ नसुतापन अमरी काँटक हाँगेड जहाँ नयि दैथ, नयन तँ जनिगीए ढंस मऽ जाएथ! मोजकठ जँ पानिक वनने सुटि जाए नयन पानि केना पनसव?

सभ काज सम्वानि सुगयिी काकी हाथमे छेटा घनवैथ शोभा काकाकँ पुछथनि-

“हाठ-याठ सभ आनन्द कनि?”

काकीक पुछव जेना शोभा कक्काक मनकँ हौन देठकैथ तहनि मने सभैम जेथैथ जे ननसिक कोनो आकनोश छैथ। मुदा अगुकुठ समए नै पावै, उतान देपयनि-

“पुनवतो”

शोभा कक्काक उतान सेहो सुगयिी काकी गानि छैथ। तँ उयति समए नै पावै सुगयिी काकीक मनमे नेथैथ जे पएन घोखे दनवज्जापन जेवे कनता तँ कएि ने टकिमे यडियडि ठग। दएन जे जावे यडियडि छोड़ैना-छोड़ैना जावे याह वना छेव। काज औगतने तँ नइ होइ छइ वड नूय ठागए तँ पानक वदथ हाथे नै पसानि दएि!



वज्रि-

“नीमक गाछमे गनाड़ छागिठ अछि से कनी देप्य छेव?”

सुगायि काकीक वाग सुगि शोभा काका वज्रि कहि, मुदा मनमे उठैत जे नीमक गाछमे केनौ गनाड़ छाग! एहेन वाग किए कहैत? गनाड़केँ मोड़ जाड़ पयै छ? नीम केना पयत। मुदा सेन मनमे उठैत जे पुनपुनक गाड़ी गानीक गाड़ीसँ गनिन यैए तँए समए छावै दुआने जाँ कहने होथि। मुदा से केना वुहव जे केने समए छाएव? गऽ सकैए जे जेतवे समए जाड़ि प्योनी गनाड़ देप्येमे छाग तेने, मुदा से अपने केना वुहव? तसँ नीक जे जावे वज्रि व गै औगी जावे गै जाएव। पैछछे शनि जप्पन आएत नहि तँ पएन घोषक वाद याह पञ्चौने नहिथ। नहिना याहे वनवै दुआने जाँ टाने होथि नीक हएन जे जावे चर्न कऽयि छऽ कऽ जाड़ि प्योनी-प्योनी नहव जावे चर्न वज्रि व गै औगी।

याह छागि औसाक यौकीपन नप्पि काकी दनवज्रि दसि वदैन वज्रि-

“जअ काटए जेवौ तँ सगुआन केनहि एवौ! याह सेना कऽ पानि गऽ जेव आ हूँ-सूसेमे छटक छी!”

‘हूँ-सूसे’ सुगि शोभा काका यौकवा, कहू जे अपने छटक छी आ कहि के कनिदानीए छटक छी? मुदा कहि वज्रि नहि मनमे उठैत जे जऽ सुगयक कोनो मोजत गै छै, सेहे छुमैत-सुगैत केनए-सँ-केनए उड़ि जाइत अछि। मुदा ई तँ शव्दब्राम छी, कागजुसुम्डी जाँ समुय्या दुनियौ देप्यो! पुछप्यनि-

“केहेन याह वनेवौ जे छाग पानि गऽ जाएत?”

जहनि मन्दनिक वीथ गकूत गज्जानक आगू गढ गऽ हूँ हाथ जाड़ि अपन मनोतथ मनमे दाव, पहिने सुगि कनैत नहिना मनक वाग मनमे नप्पि सुगायि काकी वज्रि-

“नवधमे नपते याहक ने सुआद होइ छै, जाँ से नहि, तँ जहनि अर्धक वोप्यानक आगू कम वोप्यान, वोप्यान गै नहि जाइत नहिना ने याहे होइ छ?”

गुप्पठकेँ पहिठ कौन आ पयिसठकेँ पहिठ छोट जहनि सुप्पद होइ छै नहिना याहक छोट जेवते शोभा काका वज्रि-

“गाम-धनक की हाथ-याथ अछि?”

गाम-धनक हाथ-याथ सुगि सुगायि काकीक मन उड़ए छागैत। वज्रिसँ पहिने सोयए छागि जे कनिहसँ वाजि। गाम दसिसँ आकपि नानि दसिसँ सम्हनैत वज्रि-

“गाममे तँ एवेन साक्षात् सनोसनाये आवागिथि। एकोटा बहियान्थी सेव गै गेथ”

सगकेँ पास सुगि शोभा कक्काक मन ओहना जेवैत। जप्पन सग पास केक जप्पन सुशीक केना वुहव जे केनेसँ नीक केनेसँ अथवा केक। पाशा वदैन पुछप्यनि-

“केकना कोन उवाजत गेथ?”



काकीक मग पहिनिहसँ उड़ै नहवे कनै, जहनि दौड़ैकाँ पैरक ठेकान नै नहै नहनि पुनसँगकें सुआदने वनि
वज्जि-

“सगसँ वेसी नम्वन अपने सुशीकें अछा”

“सगसँ नीक सुशीकें सुनिशोना काका वज्जि-

“अपने जे हुअए मुदा सुशीकें आगूओ पढ़ाएवा”

आगूक नाओ सुनि सुगिया काकी गकना शूठ जाँ वज्जि-

“नजिउट गकिउवापन जप्पन सुशीक संगी-साथी सगसँ गैट कऽ आएउ जप्पनेसँ मग पसठ देखै छए!”

“से कए?”

“कहए जे आगू पढ़ैठे सग वाहन जाएत?”

सुगिया काकीक व्रियाकें शोना काका व्रियानक अठभानीमे योपेगैत वज्जि-

“नीक हए जे वौश्रैकें सौ सोन पाड़ैछियौ। पनविनक सग मठि किऽ कए ने पनविनक काजक व्रियान कनवा केकनो
मनोनथकें कए कियौ दावत?”

शोना कक्काक व्रियान सुनि सुगिया काकीक मग प्यापैड़क घाग जाँ ऐ गगसँ ओर गग कनए उगठेग। मुदा पतिक
वाग वुहै हिनछीन नै कऽ कन्हउगू वनए जाँ पू गेथी।

सुशीक संग आवाकाकी अपन घनमे अन्धाराग जाँ वज्जि-

“वौआ, पहिने वावूकें गोड़ उगठेग”

ओना सुशीक मगमे अपनो नहवे कनै जे अपन कन्तव्यक पाठन केन केने छी से तँ पतिक वगैठ नसत।
छएन, तँ ओर पगक पग-सँ-पग टपवै। जप्पन कए ने ओकने हथियान वना जीवन-कर्म कनवा

पतिकें गोड़ उगठेग सुशीक मुँह उग असीनवादक पुनकिषा कनए उगठेग

सुशीक माथपन हाथ नपैत शोना काका पुछएपनि-

“वाउ! आगूक की व्रियान होए?”

सुशीक वज्जि-

“सग वाहन जा-जा नाओ ठपौत”



शोभा काका कहएअनि-

“मनोनथ अपनो अछि, माइयोक मन तेहने देखै छी। यागि-पाँय साँठ नोकनी नहए अछि। तैवीय देखवे कनै छहक यागु जाए-वहनि पढ़ै छह, दनि-दनि आगुए वढ़वह। मइसँ मनयो वढ़ति जाए। केते कमाइ छी से केकनोसँ छपिअ अछि। नयन तँ आमद-मन्य देख कऽ जाँ पनविनक गाड़ी भै पयिवह तँ केते दनि पनविन गढ़ नहए।”

पानि वागकँ अगसुन कनै। सुगायि काकी वयियेमे टपैक उठि-

“हम केकनासँ थोड़ छी। जे अपन मनोनथ पूना भै कनए। नहनि। सवहक वेटा पढ़ैवे वाह। जाए। नहनि। हमनो सुशोभ जाए।”

पानीक वयिनसँ शोभा काका सकपकेछ। नहनि अपनो मनोनथ, पानीयोक मनोनथ आ वेटोक मनोनथकँ पानि-यनि-गेवोक नस जाँ घोड़ए उठि। मुदा मनक वाग कहयनि केकना। नौन उठि कयनो पानी तँ कयनो पुनपन दै। वयिनए उठि। वयिन सूर्यानि वनिगिअ अछि। नोकनीक याहमे छेक केनए-सँ-केनए जागि नहए अछि। कएि गे जाग। जे हवा वनि गेअ अछि। आक वनि जा नहए अछि। नइमे ननिगीक ज्ञान पाछू पड़ि नहए अछि। नव नकनीक संग नव मनुष्य पैदा भऽ नहए अछि। जेकन दूनी एते-वढ़ि नहए अछि। जे यनि-पहयनिह नक समाप्ता भऽ नहए अछि।

○

शब्द संप्रदा : ११६२

११ पानी

ऐ नयनापन अपन भंगवृत्त गजापेनदनाब्जद्विषयोम पन पडाउ।

नापदेव भासुठक

जग नैमन

उपन्यासक रेगा कड़ी

१७



कुठानन्दक पए नहए छए आ मने पति। यन्मठाक कहए एक-एकटा वाग आवि नहए छेए।

“कुकरम केवै तँ उमूड भोजै तैयान नह। माग्यक वषी छी जे नोसना गाममे नहि अछि, नहि तँ एके मनिटमे पना यथि जाइ। डेढ़हथीसँ माथ ओड़ि देने नहै। नोसना नहि छै तँ की भेए। गीताक वाप मटनूवा तँ गाममे छश आगि भोजौ तँ मुहेवाक उपाय प्यो। कोनो नसना नहि भेटत तँ हडैक कऽ मनवा।”

ई वाग सुनबाक वाद कुठानन्दकें छड़पटी वढ़ि गेए छेए। केतोक पडयंत आकना मने जन्म पैत छए आ केतोक मनी जाइ छए।

एक गठनीसँ वयवाक छेए ओक हजानो गठनी कनैत अछि। अन्ततः पछाशा जनिगी वीत जाइ अछि।

कुठानन्द मने-मन मँज्यावए ठाए जे मटनूवासँ गाममे केकना-केकना हगाड़ा भेए छश ओ सभ कोन नहै हमना पक्षमे नहै।

सुआनथी आ ठेगी तँ सभ होशे अछि। केकनो टका-पैसाक ठेग देएक तँ केकनो आन यीजक।

ऐ नहै गीता घनक आस-पासक ओककें अपना पडयंतक जाइमे छँसा छेएक। अपन वय्याउक सभ नसना वना छेएक। मटनूवाक अपन जागिरी कुठानन्दे दसि वजाए ठाँ।

जम्पन कुठानन्द घन दसि घुनए जम्पन ओकना मुँहपन मुस्की गायि नहए छेए। आँपमि मनए छेए पडयंतक छँह।

○

१८

सामूहिक चक्का वड़ जोजान होइ छश वहिड़सि। केतोक घन-पनविन ओइ चक्कासँ उजैत कऽ नाश भऽ जाइ छश मुदा जे छवि-पनपंथी अछि ओ समाजक चक्काकें युटकी वजा कऽ उड़ा दऽ छश।

आइसँ नहि पहिनीसँ अहनि होश आएए अछि जे समाजक चक्का दीन-हीन आ दवठ वेकनीकें वेसी ठाँ छश पैघ आ मुँहगन ओक तँ एहिसँ वयठे नहै छश कागस ओ सभ छठ-पनपंथ नूपी कवय पहिने नहै अछि।

यन्मठा समाजक पैघ ओक। पनपंथी जाइ छेकैमे वेसी तोजान। तँए वेटोमे ऐ गुप्तक मात्रा पूरा।

कुठानन्द पहिने पना ठाँ छेएक जे भूमासँ मटनूवाकें हगाड़ा नहै छश मटनूवाकें पड़ोसिया भूमा। हुनू एके जागि।

कुठानन्द दोह पैत भूमाक दुआपिन वैस नहए। भूमा केतौसँ घुमि-झुमि कऽ आएछे छश कुठानन्द ओकन काग भनए ठाँ। गीताक वषियमे जेतोक यन्मठा सकठ अकट-वकट कहैत नहए। सँगे पाँय साए टाका हाथमे जुपेयाप बना देएकै। अन्तमे ईहो कहएकै जे सँग-साथ देवाक छेए तोना जाग्यिक आन ओक तैयान नहै। केतौ गोनेसँ गप्प भऽ गेए छौ।



भूमा दुसमगीक कामे मटनूवापन वगिउठे नै छै। उपनसँ पाँय साए टाकाक ठेग ओकना आनो उन्साहि कि देउका।

उठैकाठ कुठागन्ध ईहे कहि देउकै-

“नौ भूमा, नौना जाकि सवाठ छौ। जाकि वेटी। तेकन रज्जुना। ओर रज्जुनाकें दोसन जाकि छोड़ा नास कऽ देउकौ। पौनकि नोसन। जाकिं ठाणे नहि छौ। तू आव जाग। नौना जे कहैक छैसै से कहि देउयौ।”

भूमा उदहन्ती हाथमे छैन श्रुङ्कैत वज्र-

“अहाँ जाऊ ने यौ। आयनि जाकि सवाठ छर कनि। मटनूवाकें कामि-युग नहि ठावा। तँ हमन नाम भूमा नहि ई वेशनमी प्येठ-प्येठना तँ जाकिं नकिठि देवैना।”

कहैत ओ मटनूवाक घन दसि वदि गऽ गेठ। कुठागन्ध कुटि मुस्की दैत यथि देउका।

○

१८

हठहठ अगहन गऽ गेठ छै। यनमठाठ वाटक कामे वैसठ सोयनिहठ छै- कोन याठि यथव जे ‘साँपो मन जाए आ ठाँयि ने टुटए’

ऐसँ पहिने ओ तीन वेन मटनूवाक वागेमे पना ठाँवेठे गेठ छै। मुदा मटनूवासँ मेटे नर मेठस कामस मटनूवा वजान यथि गेठ छेउर।

यनमठाठ सोयनिहठ छै जे पहिने मटनूवासँ गप्प कऽ छै। वाप-वेटीक वीय तँ गप्प गऽ जेतै तँ हमन कुयाठिकें वुह्मि जाएत। तँ मटनूवाक काग वाटेमे गनिदि से गेक होएत।

उयतिमे साथ दस्वठा पति। तँ होशे छर अगुयतिमे साथ दस्वठा पति। होर छर

वापक जाठ अठग वेटाक जाठ अठग। मुदा उदेस एकेटा।

कछुकाठक वाद मटनूवा कपानपन मोटा ठादने ओहि वाटे आवनिहठ छै। यनमठाठ गढ़ होश वाजठ-

“नौ मटनूवा! कनीकाठ गढ़ हो। नौनासँ एकटा गप कनैक अच्छी”

“हे यौ, अप्पैत तँ कपानपन गानी समान अच्छी”



“एकेगी गढ़ ने गहा दू टपकीए गप छश”

मटनूवाकें अगसोहॉन ठाँवै मुदा यमठाठ वावूक वाग केना टाग। वढ़ठ पएग घुमा ठेठका ठाँमे जा कऽ पुछठक-

“कहू, की कहवाक अछा? सुनै छी हमन जामस्यो गामपन गेठ अछा पानियाँ-वैसक कयिो ने देगे हेगश”

कनीकाठक ठेठ यमठाठ युप गऽ गेठ छठ। जेना पुनपयक नीन मनमे तैयान कऽ नहठ होश श्वेन माथ कुड़ियैव वाजठ-

“नौ, कहवाक रथछा तँ नही होश अछा मुदा नऽ कहवो तँ वगन केना। जेहने तोहन वेटी तेहने हमन वेटी। वेटी तँ पूना गामक होश छश”

मटनूवा यौकैत पुछठक-

“धौ गनिहा, साश्च-साश्च कहू ने। नीनयिसँ की कोनो गठनी गऽ गेठ?”

“हे नौ, तूँ एकना गठनीए कहै छी। तोहन वेटी तँ समाज आ जातकि नाक काटि नहठ छौ”

“की वाग भेठै? हमना तँ कछि ने वुहठ अछा”

“हेनौ की। नीनयिक याठि-यठन पनाव भेठ जाइ छौ। कछि-दनि पहिने तँ नजेसना आ नीनयिक वषियमे हो-हठ भेठ छेवौ”

“ऊ वाग हूँ छेठ गनिहा। वुहै नही छयि। समाजमे तँ हति आ मुहँ सगकें छश। तँकि तँ गऽ वना देठकै”

“तूँ सगकें हूँ वुहै छी। मुदा ऐसँ सग वाग थोड़ हँपा जेतौ। कछि एहने वाग गऽ गेठ छौ जे हँपा नऽ सकै छौ। पुछवीहि नव ने पना यठनौ”

मटनूवाकें नामससँ मुँह ठाठ गऽ गेठ तेकना दवैत ओ वाजठ-

“अहाँ केना वुहै छयि?”

“वुहठ छै नव ने कहै छयि। आर तँ आन वयित्तिने वाग देपठयि”

“की वयित्ति वाग?”

“कहवाक वयित्ति तँ नऽ छठ, मुदा कहवौ नही तँ वुहवीहि केना। आर कुठानगदक सँगे ओ कोनो अथठा गप्प कनै छेवौ। दू यमेटा ठाँ ओ नीनयिकें गगा देठकौ। हम दुआनपिन सँ सग कनिदानी देपै छेठयि”

मटनूवाकें माथपन सँ मोटा ससैन गेठश ओकना सम्हनए ठाँठ यमठाठ जाइसँ पहिने श्वेन वाजठ-

“अपनो सभे छौ। सभैट-ठे अपन वयि-पुताकें समाज जाँ वगिड़तौ नव वुहवीहि”



मटनूवा अपना टोभमे घाय वनौने छथि जातूनासँ कहि वेसीए कमा-पटा कऽ जमा कऽ छै छथि पनविनो छोटे छेउस।
सूनी यागि वनिसि पहिने मनीगै छेउस। दूटा वेटी मातू नहऽ जोडकी वेटी वसिह-दुनागमनक वाद गहियै अवै छेउस वाप आ
वेटीक छोटे-छोण पनविन कमा-पटा कऽ यथै नहऽ छथि।

मटनूवाक आस-पड़ोसमे हनदम हगडा होशो नहै छथि सगटा सुसादक सैसथ मटनूवे कनै छथि। गँए ओ अपनाकें
शुणान-पुनपिगवठा वुहै छथि। मुदा यममठाक गप सुनथ पछास आर ओकना वुहै पड़ै जेना यातूनक यनी हठि नहऽ
अछि। वनग वनाएथ शुणान जेना प्यास-प्यास गऽ नहऽ अछि।

नामसे ओकन सौसे देह थन-थन नहऽ छेउस। माथक मोटाकें सम्हनैत मटनूवा उपकैत घन दसि ब्रदि गऽ गेथ।

○

रु

अपन टोभ ठा आवा मटनूवा वडीकाठ नक सोयैत नहऽ।

जऽ वनदकें पानि नहऽ कोनो वनद छी। जऽ मनदकें आन नहऽ कोनो मनद छी। नीगिया सग शुणान-पानि आना
देउका ओक सग कहवे कन- ‘रु, पंय वनग छथि। आव कनौ अपन पंयैनी। ओक ठा कोन मुहसँ वजव? के वाजए देन? कए
वजए देन?’

सोयैत-ब्रियैत जावे घन ठा पहुँचत जावे नागि गऽ गेथ छेउस। ओकन पड़ोसिया बूमाक दुआपिन ओक सग वैसथ
छथि। आपसमे घोर-सुथकका गऽ नहऽ छेउस।

ठाठेनक मुकमुकास शोनामे कीड़ा-खगि। खनि नहऽ छथि ओहठिम ओकन जमाय मुँह उठकौने वैसथ छथि।

मटनूवाकें देख्यो एक गोने टोकथक-

“ओनए अंगना दसि केनए जाइ छथि एनए आउ योउपनी”

मटनूवाक टाँगमे जेना पथथथ वनह गेथ। नसे-नसे ठा आवकिऽ गऽ गेथ। बूमा ओकना नहऽ देख्यो ओ जोग-
जोगसँ वाज नहऽ छथि-

“इ वेह्यापन हम अपना जागमि नहऽ देवस केयो पुश नहै वा नापुश। एनामे तँ ओकक कथा-कुटमैनी सगटा मानथ
जोगै ने। यो उगिउगिया नाथ, वजै नहऽ छथि”



उगिउगिया एहेन ठेक जे माथकि-माथकि कहिकऽ केकनो डकिछै। अछा ओर टोपन मुँहपुनपी कनवाक ओकन पहिनेसँ इच्छा छेउर। मुदा कहियो पंथैतीमे जोनसँ वाजकिऽ पंथ वगवाक कोशसि कहै छै तँ मटनूवा ओकना मुँहपन यट-दे कहै छेउर-

“नौ ठवपन ववाजो मेर तँ दाठकिँ कहक- वेकुंछा”

ई सुनति वेयायेक मुँहक वाग मुँह नहि जाइ छेउर।

आर सौभाग्यसँ समए मेरठ छै। मटनूवा आर मुँहपन केना वजान। उगिउगिया जोनसँ वाज-

“ठिके कहै छैए नूमा माया हम अपना जानकिँ वनि। ठामक नहि नहि देवस। दोसना टोपक छौड़ा सग नव ने कहै छै जे ए टोपक इज्जतकिँ कोनो डेकान नहि। हम तँ कहै छौ जे अप्पनी एकना वेटीकेँ ए टोपन सँ नकिाठि दियो। ई तँ जोकना संगे नहौ ओकना पनाप कनौ।”

कहै। उगिउगिया जेवीमे हाथ देउक। कुठानन्दक देउ टका हाथमे डकै तँ श्वेन वाज-

“प्रौ, अहाँ सग वजै कएि नहि छैए?”

जुवक सग एके साथ उगिउगिया आ नूमाक समन्थन कनए ठाठावुढवो सगकेँ हामी ननए पड़ै।

“वागकेँ नहि मानत तँ मटनूवाक मुँहमे कानपि-युग ठाठो जोनस से वुहठिअि”

मटनूवाकेँ तँ पहिनेसँ मन्माहा योट ठाठे छेउर। ओइगमक स्थितिदिप ओ अन्वयवर्धपिण जकाँ नऽ जेठ। माथ पनक मोटा एक कान नप्यथिस-दे वैस नहै। ओकना देपने नूमा कहुनीसँ इशाना केउक। उगिउगिया पाछू मुँह नकठक आ मटनूवाकेँ देपने वाज-

“की हौ मटनूवाकाका, वजै ने कएि छहक?”

मटनूवा ओकना दसि नकैत वाज-

“कह्योहि नव ने। की कहै छै?”

उगिउगिया ठेक दसि नकैत वाज-

“हे ठिअि आवा कहै छै ने- सौसे नमायस सुना देवौ आ सुनगहि। छै वहीना।”

वागकेँ काटे। नूमा कहक-

“एना हँपने-तोपने काज नहि यैत। सग गप प्योठिकऽ कह्यौ।”



उगिउगिया एकवेन मटनूवाक जमाए दसि तकक ओकना जमाइक आँपि ठोठे-ठाठ मऽ गेठ छेउओ ओ मुड़ी गोलने छथ। कुटुमक सोहसमे मटनूवाक वेशजगती होश देप्य मूमाकेँ पुशी भेउओ ओ वजग-

“धौ मटनूवा काका! हम तँ कछि दनि पहिने येना देने नहूँ जे गीतपिक याठि-यठन प्याप मऽ गेठ अछी ओकना हम जगेसनाक अँगनासँ नागिँ नकिछै दैप्यने नहिए। ओइ दनि तँ सज गोने हमना पुठकानि दैथिए। आइ ठिने, सजटा पाप उगियाइ दैप्या जऽ गेठ। आव हँपनेसँ कोन वाग हँपठ जाएना”

मूमाकेँ युप होशे उगिउगिया टपकठ-

“हे धौ, आइओ कहँदग कुठनगद सँगे कोनो अथवाह जापु भेउओ ठिने, केतो सम्हानवा”

मूमा वजग-

“हँ धौ, कुठनगद तँ अपने हमना कहैठे आएठ छथ आइ यनि हमना सज युप नहौ मुदा आव नहिनहवा आव टोठमे मटन काका नहए वा हमना सज नहवा मागजिन एकन गनिगय अपनी दैथि”

सज ऐ वागक समन्थन कए ठाठा वड़ीकाठ यनि यमन्थन होश नहथ अगामे गनिहए सुनौठक-

“सुनौ जाउ। हमन गनिहए ई भेठ जे मटनूवा अपना वेटीकेँ ममहन वा कोनो आन सम्वन्धी ठा भेज दौ। ऐ टोठपन गीतपि नहौ तँ दैप्या-दैप्यो दोसनोक वेटी ओकन याठि-यठन सीप्य छेउओ तँ ऐ टोठपन नहिनहसिकै छथ आने गामसँ ओकन वआह-सादी कऽ दौ। जँ गीतपि दुनकिऽ मटनूवाक अँगना औत तँ मटनूवोकेँ कानपि-युग ठा कऽ जानसिँ वाहन कनि दैवश”

मागजिनक गनिहए सुनि सजसँ वेसी पुशी मूमा आ उगिउगियाकेँ भेउओ कएक नहिनहौ, दुनूक जेविने पँय-पँय साए टाका कऽकऽ नहथ छेउओ

मटनूवाक जमाए शुभैक कऽ वदि होश वजग-

“हम आव ऐठम अगजगठ नहिकऽ सकै छी। जा नहथ छी- गामा”

“एना यऽशुडाउ नहनि”

मटनूवा मुड़ी गोलने वैसठे छथ। तामस आ ठाजसँ ओकना मुँहक वयित्तिन स्थितिविगठ छेउओ

मूमा ओकना ठामे जाइ वाजग-

“पंयक गनिगय तँ सुनि छैथिए। आवो ओइ कुठछनीकेँ नकिछवै की नहनि?”

मटनूवाक जमाइ जाइ-जाइ उठै कऽ वाजग-

“जइ मनइकेँ ठाजे ने छै ओ तँ।”



मटनूवाक क्नोयमे जमाइक वाग जेना आगमि तेथक काण केथक।

सम्वन्ध, सगिह आ वेवहास सभटामे जेना क्नोयक आगिठगिठेथ। वुथिआ व्रियाक व्रिगास गऽ जेथ।

डुवैग श्रृणान-पुनरिषिड देप्प ओकना आँप्पकि आगू अगहन सग ठाँ। ओ खुडकैग उडग एक गोमेक काँप्पन सँ उडहन्थी घीय छेथक आ यम-यमाश्र अंगना दिसि वदि गऽ जेथ।

गीगा भूपथ-पयिसथ घनमे हुवकथ छेथ। जप्पनसँ कुठनगदक अंगनासँ आएथ तप्येनसँ गोन वहि नहथ छेथ। मुदा गोन पोछा के? केकना दठिक वाग कहल? एगे तँ एहेन षडयन्त्रक जाग छैथ। देगे छेथे जे केकना कहलै, जे सुनलै सएह ठगियलै। एहेन सभैमे तँ सहाना एक मात्र वापेटा छेथ। सेहो गामपन नहि छथ। तँ अपनार्क वेसहाना वुहिएकटा कोनमे वैसथ कागनिहथ छेथ।

सोयगे छेथे- जे वावूकँ अवागि सभटा गप्प प्योकिऽ कहि देवऽ गनीवक पास श्रृणान नहि होइ छथ। आइ सभटा धनकिपना घोसाइ देवऽ पंथैगी वैसा कऽ वेदशा कनवा देवऽ।

मुदा ओकना की पना छेथे जे ओगए दोसरे गटक नयथ जा नहथ छथ। टोथपन होइ हथ-गुठगसँ अगमिअन ओ घनमे गोन वहि नहथ छेथ।

एगए उडहन्थी नेगे मटनूवा केवाड ठा पहुँय जेथ छथ। पतिाकँ अवैग देप्प गीगा जोनसँ कागए ठाग।

अन्धधकि हुप्पमे कोनो आत्मीय जगकँ देप्पते वेदना आन उश्वाग मानए ठाँ छथ। आँप्पसिँ सूत्राः गोन वहए ठाँ छथ।

गीगाकँ तँ एक मात्र सहाना वापेटा छेथ। वापकँ देप्पते ओ वोम पाडकिऽ कागए ठाग-

“वावू यौ वावू”

मुदा गीगाक कागव मटनूकँ ढाठ पसानव सग वुहैथ। ओकना माथपन तँ क्नोयक श्रृण गायनिहथ छेथ। श्रृणान-पुनरिषिड दाउपन ठाग छेथ। समाज कुटुम सग छुटा नहथ छेथ। ओ गामसे तेगेक आगहन गऽ जेथ छथ जे गीगाक वागो नहि सुनै ठाग। ‘खटाक-खटाक’ उडहन्थी गीगा देहपन वजाडए ठाग। कोमठ देहपन वज्ज सग उडहन्थीक योट! कनूसा कनूदन कनैग गीगा। योटसँ केतेको जगह यमड़ी खटाजिठेथ। वुहवे गर केथक वेयानी जे आप्पनि वाग की छथ। कए उडहन्थीक योट ओकनेपन गनि नहथ छथ। तैयो अपनार्क सम्हनैग पुनः वपौक कोशकि केथक-

“कोन जगती गेथे यौ वावू?”

कगिगु खैन मटनूवा उडहन्थी देहपन गनिवैग वज्ज-

“जै कुठवोनग! तँ हमना केतौ नहि नयथ। तँ वुहगियौ एहेन हेवै तँ गूग यटा कऽ जगैभते माना दैगियौ”

गीगा अवार्क गेथ वापक मुँह दिसि नाकनिहथ छथ। मानसिँ देहक तेहेन दशा गऽ जेथ छेथे जे उडगइ असंभव।



मटनूवा डेढ़लूथीसँ हूँ माँगै छै वाज-

“गै कुछनी, ममह यथि जा। जई नकिध घनसँ नहि तँ समाज हमना नकिधि देना जो दुमकिज मनी जइहै”

कहै-कहै मटनूवा कबै ठाठा आ कागै वज-

“जई नकिध जो हमना सोहासँ वुहै तोह वाप मनी गेवै। तँ मनी गेवै हमना छै। जँ दुमकिज एवही तँ हमना मथ देपवै”

कहै मटनूवा डेढ़लूथी अंगामे पटक देठका आ तोजीसँ वहना दसि यथि देठका

वडीकाध घनीना वदहवास भेठ पड़ै नहै जावे ओकर मग थनि भेठे तावे आया नागिनी गेठ छेठ आ कुहै न उरिज वैसवा यानूभन नकधका केतौ कथि नहि छै नपै आसमान दसि गेठ आ अकासमे मुकमुकाश नगेग देपठका सौसे टोठ नशिबद गेठ छेठ केतौ-केतौ कुना काग नहै छेठ वाधमे नदिया ‘हुआ हुआ’ कबै छेठ यानूभन जेना अगहनक यदहै नगा गेठ छै

ओ उरिज गढ़ भेठ साँस छोड़ै घन दसि देपठका केवाड़ ठाठा छेठ आंगना शून्ना केतौ कथि नहि आ घन दसि डेठा उठैठका वापक कहै वाग यट-दे मग पड़ि गेठ- ‘वुहै तोह वाप मनी गेवै। तँ मनी गेवै हमना छै। जँ दुमकिज एवही तँ हमना मथ देपवै’

नीनाक मगमे आएल हम केनए जाएव? वापक सवि हमन के? जगमदो घनसँ कए नकिधि देठका? कोन कुकनम केठि? कोन वातक दसुड? केकनोसँ सगह नकिज सकै छै कथि? प्रेम भेगरी की केकनो वसमे छै?

अगेको प्रसन्नक वीथ नीनाक मग औनाए ठाठै औनाश नीनाक काग ठा पतिाक कहै दोस नक्क सगसगेठै- ‘जो दुमकिज मनी जइहै’

ओ सोयठक- जो ओकरा नहैसँ सगकें दुपे-नकथि छै तँ मनी जाएव से नीक होए। मुक्तीए भेट जाए।

सोयै आ वदि गेठ डेठा वदवै गामसँ वाह न गेठ दुमकिज एकवे गाम दसि नकधका मोहक एकटा छै न मगमे उठै मुदा अपमान आ पीडाक योडसँ मोहक छै न तुनगे उड़ि गेठ आँपकि नीनकें पोछठक आ शीघ्रतासँ वदि गेठ वाध दसि

यानमे पूव जोनगन वाढ़ि आये छेठ यानूभन पानि हड़हड़ा नहै छै ओ सोयठक- अही यानमे दुमकिज मनी जाएव

नपैने पाछूसँ कछि अवाग सग वुहै ‘छपन छपन’

ओ दुमकिज नकधका मुदा कछि नहि दिये पड़ै मगक नून वुहै छै आग वदै

आगूमे हुहारा यान उच्चन माँगै पानि काँट-कुश, गाछ-पाग दहारा मँसै



घानक कछेनपन कछुकाठ नक गढ नहठ गीना। नापोसनक सगिह ओकना मन पड़िगेउर मुदा ओ तँ वहुन दून छथि
उयानीक गो न ओकना आँपसँ टघै न गेठ।

मनैतकाठ मनमे केनेक व्रियति न यति न सभ अवै न है छर। नहूमे ओकना मन अपन प्यास ठेक वुहै छै ठेक न सुनना
मेगाइ सोभावकि अछा

नापोसनक प्रादि अवति गीना नीनसँ हठि गेठ। गो न पोछै न वाजठ-

“अहाँक आ हम न सगिह केकनो नहि सोहैछै। तँ ए हम पुठ्ठी दुनयिसँ जा नहठ छी। सँगा-साथ नहि देवौ। मास कऽ देवा”

ओ दुवैक उदेससँ साड़ीकेँ समेट घानमे कुदवाक येष्टा केठका। नपैने कयिो पाछूसँ नाना पाँजमे पकैऽ छेठका गीना दुन
कऽ नकठका। समानपुनवाथी नापोसनक गौजाइ ओकना ठेक वगै कहै छेठर। ओ गीनाकेँ पाँजमे पकड़ने छेठर।
समानपुनवाथीक आँपसँ गो न वहि नहठ छथि। गो न सुड़सुड़ा नहठ छेठ। जेना कछि वजैक कोशसि कऽ नहठ होइ।

गीना समानपुनवाथीकेँ देपने कानए उठाठ। समानपुनवाथी सेहो ओकना गठा-मे-गठा जोड़िबोम पाड़ि कऽ कानए
उठाठ।

गीनाक एकटा वानसँ अयनज नऽ नहठ छेठर। समानपुनवाथी नहयिसँ वगै निकाँ कनए उठाठे नहयिसँ ओकना कयिो
कौनो-वजै नहि देपने नहऽ। मुदा आइ एके पनविनान केना नऽ गेठर।

ओकना मुँह दसि नकै न गीना कौन वाजठ-

“हमना मनए दसि आव हम जीवयि कऽ की कनव? ऐ दुनयिसँ हम न के अछा?”

कहै न ओ वगै नसँ छुटवाक कोशसि केठका। समानपुनवाथीक सुड़सुड़ाइ न गेसँ सुन नकिठठ-

“हम अपनी जसि न छी। जावे हम छी जावे अहाँक मनए नहि देवा हमना सगटा वानक पना उठाठिठ अछा। अहाँ कछिक
यतिना नहि कनू।”

“हमना छेठ मनगइ गीके होए। आव हम केनए नहवे? नपैने वापे हम न नहि मेठ तँ दोसन के सहना देना”

अपनासँ वेसी दुपति वेकनीकेँ देपनासँ सोभावकि नूपे ठेककेँ अपन दुप घटि जाइ छर। ऐ कानासँ समानपुनवाथीमे
एके पनविनान नऽ गेठ छेठर। ओ गीनाकेँ अपना दसि घयि न वाजठ-

“अहाँ जँ मनजिने तँ हम न दसि न कथी उऽ कऽ योनज वगैलो। हम की जवाव देव ओकना। यँ अहाँ हमना घन-
अँगनामे नहवा”

“समान द्वाना हमहूँ तँ पुनानाति छी। सग तँ वानने अछा। देपवै, जे हमना नोकैठ के अवै छर। हमहूँ ओकना अपन
नाज देप्या देव न वजगहिनकेँ मुँह नोयिठेव न हम कमजोर नहि छी।”



गीता छेन जोन-जोनसँ कागए छाए। समिगपुनवाषी अपना आँयनसँ ओकन गोन पोछै। वड़ीकाए यनीवोए-गनोस दैन
नहए। समिह सपनसँ गीताक अपन माए मन पड़ि गेछ।

केलक काए नक हुनू पुनेम नसमे डुवए नहए पना नहियेछै।

हुनू गोने जपैग घन दसि ब्रदि। मेथ नावे मोनुकवा ना। उगी गेछेछ। मटनूवा वाये-वोन वड़ीकाए यनीवोआश नहए।
जपैग ओकना माथपन सँ नामस कछि नयियाँ। उतए नव गीताक वषियमे सोयए छाए- केनए गेछेहौ केनए नह। एहेन
वेवहा नइ कनवाक याही। आपनि अछि तँ वेटी।

छेन वापक समिहअनानमे जगमए छाए। जेना कछि मोनानमे औढ़ मानकै। आँपमि गोन मन गेछ। शुनशुना कऽ गढ़
नऽ गेछ। घन-अंगानामे प्योउक। केनौ कछि पना नह। अनानमे पछनाश वाय दसि ब्रदि मेथ।

नावे समिगपुनवाषीक संग गीता। आव नहए छ। गुका कऽ मटनूवा हुनूक गप्प सुनएक। सुनिकऽ मन थीन नऽ गेछ।
सोयएक- एगो नसना। उगी गेछे से गेके मेथ कम-सँ-कम यैनसँ नह तँ सकै। अछि मन तँ नह। समए एषापन सग कछि
गेक नऽ जोनस समए सग कछिके गेक कऽ दइ छ।

मटनूवा संगोषक साँस छेक आ युपेयाप अग्नानमे गुका नहए। अग्नान सग कछि दैपै-सुगै। युप नहए।

○

२१

समए वोत नहए छ। समए तँ वगिने नहै छ।

समिगपुनवाषीक वनहपनी छुट गेछेछ। गीता आव ओकने ओइगम नह गेछे छ। समिगपुनवाषी आ गीता हुनू गोने
काज-उदम कनैछे दोसन गाम यथी जाइ छेछ। कमा-पटा कऽ साँह नक कछि छ। अगै छ। नाजोसनक पुनीकषामे नागि कटा
जाइ छेछ।

गौआँ सग कए वेन हुड़ंग मयौक जो गीताक गामसँ वाहन नकिाई दै। मुदा वुढ़-पुनाग नोकक आ कहक- ई
वाग अनुयति होए। ओ आपनि आगि-पागि ढाड पनविनमे नह नहए छ।

तैयो एक दनि जुवक सग डेढ़ियापन जा कऽ हड़कम्प मयौक। मुदा समिगपुनवाषी हँसुआ छेने आगूमे अड़िकऽ गढ़
नऽ गेछ। ओकन नौद नूप दैप गान-वाग दैन सग आपस नऽ गेछ। आपनि ढाड-वागह पनविनमे ऐसँ वेसी की कऽ सकै
छ। उनो छेछे जो वाग वेसी वढेसँ कोनो घटना नह घटि जाए।

नाजोसनक घनमे गीताक महनिासँ वेसी वोत गेछे छ। कनिनु नागिँ एोक कछमछाहट कहियो नइ मेथ छेछ।



पहन नागविन गेठ छेथ सनसाक समर टपि-टपिशन पागकि वूग यमय्या सनमे वेगक टन टन ओर सुनसँ मथिन हगुनक संगीता ऽन वसाक होकसँ सहित देह

ओना तँ सुनौकाठ नाजोसक प्राद अवे पाइ छथ मुदा आई वेसो। गीताक गगिन आर वैनि गऽ गेठ छथ ओ डेढ़ियापन आरि कऽ वैस गेठ छथ

दगुका गप्प नहि-नहि कऽ ओकना मनकें थोट पहुँया नह छेथ वाचक एकपेड़िया घेने ओ आरि नह छथ दू-तीनटा औनगिया नसूनाक कानमे गढ़ छेथ गीताकें देप्प ओ सन आपसमे आँपमिटकवए उगाथ मुदा ओनवेसँ ओकना सनकें सनोप्य गर मेथे तँ एकटा वाजथ-

“आ गै दाय गै दाय एहेन ददिगना वाप गकिथि दिकै तँ वनि वयिहवे साँझक घन यथि गेथ गै देप्पहि, एकोनती ठाज-चाप्य होइ छथ!”

दोसना औनगिया टोन देथ-

“हे ऐ काकी, ठाज-चाप्य होशौ तँ जोवति नहि। हमना एहेन दशा गेठ नहि तँ वप्पि प्या कऽ मनि गेठ नहि। ठेकक सोहल गकिथे छै केना!”

तेसना आँपनि यवै वाजथ-

“जागकि ठेक सन तँ वऽ हुड़ंग मयौने नहि, मुदा समानपुनवाथि, उ उगयिहि अऽ गेठ नह ओकना गुऽन आँपि देप्प सन दुआनपिन सँ जागि गेथ”

पहठि औनगिया शेन वाजथ-

“जागति नहि तँ की कनि? अगका पाननि मनि जशै? कोन डेकान, उ मौगयि कहि जाहू-टोना यथ दशै। देप्पिहि पहठमान सन साँझकें यवि गेथ”

दोसनाकें शेन वाजए पऽथे-

“हे ऐ काकी, हमना तँ बुहपिडै अछि जे गीतयिक डायन-मंगन सप्या देने हेत देप्पवै, कहियौ नजोसनाकें यवि कऽ प्या जेत”

इ गप-सप्प जप्पैसँ गीता सुनने छथ जप्पैसँ ओ वेयै गऽ गेठ छथ

पुनः ओर दगिक घटना ओकना समनस गऽ गेठ- जहिया वाप मानि-पीट कऽ घनसँ गगा देने नह

ओ मनमे सोयए-वयिनाए उगाथ- केहेन वेद नऽ गऽ कऽ वावू माने नह की गऽ गेठ नहि ओर दगि हमन गप्पोटा सुनैथे तैयान नहि नह गसियति छै जे कुठानन कोनो जाठ शैथेने हेत गीके कहै नहि ओ-



“नोहल जनिगी वेनबाद कऽ देवौ नीना।”

मुदा हमन वावू ओकना जाअ-खेवकें गर वुहैकै।

छगेमे ठोक केठोक वदैठ जाइ छश वाप-वेटीक मजगून वग्यन छगेमे केना टुटिजाइ छश आइ जँ हमन माए नहैल तँ एहेन दगि गर देयए पड़ैल। ओ जूनू हमना वागकें सुनैल। कहियौ जँ वेमान पड़िजाइ छेथए तँ माए मन-मनाना जागि किऽ ओगाने नहै छथ। आयनि दुधुआ वेटी छेथए कनि। मुदा पुनुपक ह्दय केठोक कडेल होइ छश आयनि हमन वावूओ तँ एकटा पुनुपे अछथ।

ओ अपना आँपसिं वहैल गोनकें पोछठक आ पुनः सोयमे डुमिगिथ।

“ठीके कहै छथ- जियिगावाथी। वास्तवमे वनि वशिष्ठ एना अगका घनमे नहगार केठोक अथवा गप्प छश ठीके हमना ठाज-चाप एकोनती नहि अछथ। दोस जोगे नहति तँ मनगिठ नहति। हम वड कडिगीव छी। ओ जँ घुनकिऽ गाम औना तँ हम केना जेवे सोहल? की कहल ओ मनमे? अपैगो तँ हम वोहो वनठ छए- समानपुनवाथीपन। मनदिनि त्रेयानी पनेशन नहै छश।”

तपैगे ओकना देहपन हाथक हठठक सपुस सग वुहैथ। ओ यौकैल ओमहने नाकठका हाथमे वडिटा होना गेगे जागेसग गढ छेथ।

नीनाकें सपना सग वुहैथ। ओ आँपसिं मडिठ खेनसँ देयठक। मनम दून गऽ गेथ १से-१से ओ उठकिऽ गढ गेथ।

जागेसग एकटक ओकने गहिनानिहठ छथ। ओकना मुहसँ गकिठठ-

“नीना! अहाँ?”

नीना जेगा सुप्रप ठोकसँ गयियाँ उठग होइ वहुन दगिसँ पयिसठ मनकें जेगा सुप्रयुख सनोवन भेट गेठ होइ नहनि। मनमे एकटा उखान सग एठ आ आँपसिं हमहमा कऽ गोन पसर ठाठ। ओ आगू वढि जागेसगकें पाँजमे पकैऽ छेठक आ जाग-जाग कागए ठाठ। जागेसगक आँपसिं जीगठ छठ तैयो ओ नीनाकें १से-१से हँसोतैल वोठ-मनोस दऽ नहठ छथ।

नीना कछि वाग कहवो केठक आ कछि गहियौ कहठक मुदा जागेसग सगटा वुहगिथ। जेगा एक-दोसगाक आँपसिं मठिन सग कछि समहा-वुहा देठकै।

कनीकाठक पछाश जागेसग पुछठकै-

“माए आ मौजी कहाँ अछथ?”

अवाज सुनठसँ समानपुनवाथीकें गनि टुटिगठ छेथ। ठा आवाहुनूक मठिन देयठक तँ ओकनो आँपसिं पुसीक गोनसँ मनगिठथ।



गाजोसक माए ठाडी टेकैत पाछूसँ पहुँचैत वेटाकें देख्यो जेना कछि भीतसँ उमड़ैत। सूप सग कथेना गऽ गेथ। सगिहक गोत हाहा कऽ हहड़ए ठाउँ।

हुपक समुदायमे दहश-भँसयोश सुपक कन्यापौटा सहारा मगमे आशाक संयात काशे दऽ छऽ। ठाँत नहै छै जे सग कछिमे पनविनाग गऽ गेथ छऽ।

घन-पनविना आ सन-समाजक स्थानिक वषियमे सग गोते गाजोसकें सुनवैत नहथ।

वयियेमे एकवैत गाजोसक माएकें वाजए पड़ैत-

“है वौआ, समाज तँ मानौ नही मुदा गगवानक गजौमे तँ सग वनवैत छऽ भीतमे मग्दनि यथिजा आ गेम-यनमसँ गीताक सगिनादग कऽ दहिक आ असनिवाद पैत आपस घन गेने अवहिक।”

गप-सप होश-होश गागिवात गेथ छथ। गाजोसक संगी गुप्पना घनक आगू होश जा नहथ छेथ।

गाजोसक अवाज सुनिगुप्पनाकें भठिक रूखा भेथ। मुदा डन होश जे कथि देखैत पैत तँ गुनमाग गे ठाँजिए। तँए आगू-पाछू देखए ठाँज। केकरो नऽ देखैत। नसियनि गऽ कऽ अंगना गेथ। ओकना देख्यो गाजोसक सत्कात कथैत ओसातपन वैसैथक। हुनू गोतेमे जात आ समाजक स्थानिक वाजेमे गप्प हुअ ठाँजगप्प कथैत-कथैत गुप्पना वयियेमे वाजैत-

“जठ गँवत जाकाँ समाजक एकटा जाठ होश छै जऽमे अहाँ सुँसगिठौ। एकना गोडैवे अहाँकें ठड़ए पड़त।”

गाजोसक थनि गऽ वाजैत-

“ठड़क वदथ सागुनिगऽ गऽ सकै छऽ? अपकानक वदथ उपकानसँ नऽ देख जा सकै छऽ? नही तँ एकन अगु केना हएत?”

“सग कछि गऽ सकै छऽ मुदा?”

हुनू गोते गप्प कनति नहथ। तैवीय पूवमे गवका कनिमि उगिठैथ छथ।

○

२२

गहो मास अपन नंग आ गाठ देखौगऽ सुनू कऽ देखै छथ। ऐवेन वनयो तँ कछि वेसीए भेथ छैथ। तँए पहिसँ पोषैत-हाँषैत, डवना-शना, गदी-गावा सगटा डवडवाए, पानसिँ गनथ।

यनोपनीक वाद गामक ठोक सग गयिग जाकाँ गऽ गेथ छथ।



काज गीकसँ पूना भेग वाद जाँ सुनसैग होइ छै तँ मगमे पुशी होइत छश काजक सुशुभ भेटैक आशा नहै छै, तँए सुनसैगक पठ हँसो-पुशीसँ वगै छश मुदा जाँ काज गीकसँ गइ होइ छै तँ वेयैनी वढि जाइ छश गनहनीक युक्त तँ साँठ नगकि वादे गे सुधान गऽ सकै छश

वैसाखमे गामक ठेक अपना-अपना प्येक सुसठकँ देप पुश होइत अछिवा आपसमे गप हाँकैत अछि साँह-पूना एकठाम जना होइत गपपन गप यथे करौ।

“है, नजोसना गाम एठै तँ केना की केठकै?”

“हमहूँ तँ गाममे नहियँ छै। सुनै छी जे नजोसना आ गीताक वआह मगदनिमे गऽ गेथै नजोसना अपना संगी-साथीकें भोजो पुओठकै।”

“ढाड पहरिवाक भोज के सभ प्येठकै यो?”

“युन, कयिँ देपठकै जे देपठकै सेहो भोज प्येठकै जवाहि के देत?”

“शजोमे होइत नव गो अग्नयमे सभ कछि गुका कऽ गेथै के सभ छैथै केना वुहगि।”

“गीके, केकना ओतेक सुनसैग छै जे गँजियोगे घुनौ। सभ अपना-अपना काज-वग्यामे उगठ नहै छश।”

“थेकनि दोस नजोसना वा पंयैनी होइ नहियी सभटा हँह उमैड कऽ सोहा एतश।”

“हँ-हँ, याउन सहि कऽ पहपैटा देपठे छी, केतेकठाम एगे भोजनगैयन नहै छै आओन पंयैनी होइत नहै छश।”

“की हेतश केते पठिवामे तँ ऐसँ वडका वाग सभ भेठश कहाँ कछि भेठश कुम्हड़पन सतिआ योप होइ छश।”

“आगहि-वहिङि केतेकाठ नहै छश कनीकाठक वाद सभए छेन गीक गऽ जाइ छश।”

“हँ यो, आव नजोसनाक वेवहागेमे अग्नय आवागेठ छश।”

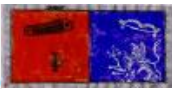
“गीके कहै छी। हम सोयै छैए जे गाम अवागि कूद-खान करौ। कुठनगदसँ हगड-हाँट हेतश मुदा से सभ कछि नहि भेठश वडि सागसिँ सवहक संगे वाग-वयिआ करै छश जेना कछि भेवेगे केठश।”

“हँ यो, अंगूठीमाठ जाँ ठेक वदैठ सकैत अछि पनविनन तँ संसाक नयिम अछि तँए पुनकृति नक्षत्र वदैठ नहै छश।”

“साँह पडठ जाइ छै यो। घनो दसि यूर गो आका यौवटयिपन गप छोटैत नहवा।”

“मगयना केनए दौगठ जाइ छै यो? है की वाग छश?”

मगयना अपसयिँत होइत वाजठ-



“हे यौ, याने पानि विडीजोसँ वढि नह छश वुह पड़े छै कसगन वाढिएनश”

“अयछा, सेन पानि घटि जेनश केनेक वेन एना होइ छश ई कोनो वडका वाग थोड़े छश”

“नहि हो, स्थिति सिमान्य सन नहि वुह पड़े छश पानि नूयसँ वुह पड़े छै जे गामक स्थिति पिनाप कनह”

“तँ की कनवाक याहि?”

“हम तँ कहै छी- घन-हुआन किं छोड़ि दियौ। रसकूठक अँयका जगहपन यूँ”

“है वावू, केनौ जेवहक, कपान जेनह संगो घन छोड़ि घन मुड़िया प्येवा जे हो, देपठ जेनह ओक संकटकाठमे घन दसि गौ छै आ हम वाहन जाएवा”

“ओके छश पानिसँ घेना जाएव तँ औना कऽ घनेमे मनवा पहिने जान वँया अशि जान वँयए तँ ठाय उपाया”

“है, तँ सन ऐगम वाकट्टी कनै नहवहका ओनए अँगना-घनमे वाढकि पानि ठुका गेठह माठ-जाठक वोनी सुनै छहका”

सन अपना घन दसि दौगा

वाढकि पानि हुआनपि न पहुँचथ। सेन अँगनामे हुँको मानठक आ देपठो-देपठो घनमे जवन दसती ठुका गेठ ओकना के नोकन? ओना, ओनेक वेगकेँ नोकने केना जेनश

हुआन-वथान, अँगना-घन सनटा पानिसँ एकटान। मोन-वाहन पानि नमि सँघन टाट, दियान जँहपि टान ओघना-ओघना कऽ गनिए ठाठा ठौ छे छे समुँह उघिया जेठ होश सन कछि केँ पानि गनिने जा नह छेछश अग-पानि सन गँसाए ठाठा समान सन जेठे अपनमे नापै ओते अपन गुननेमे पानियाँ पहुँच जाश

जे हाथ से साथ टोठक ओक अपन-अपन समान ठऽ कऽ गागए ठाठा पहिने कागज-पत्तन आ छोट धिया-पुनाकेँ धारि कऽ गागए सेन माठ-मवेशीकेँ अँयका स्थपन पहुँचा आएठ। सन अपने समांगकेँ वँयवैने अपसियाँगा।

जेकना पानि अगुदा नहै आ पानिसँ डुमठ वाट मँजियाँ नहै से सन गामक पयछमि होश सूकूठक अँयका जगह दसि गागए जेकना नहि वुह नहै ओ पूव होश नकिठठ आ वेगयुक्त यानक पानि मँसियाश कऽ पान मेठ। पान होशे घनक देवनाकेँ सुमनिन कनै सुपठ जगह दसि गागए कथि-ठे कथि आनो गोने दसि नाकन आ दोसरो गोनेक जान वँयौ।

एकमात्र नानेस नोस नोसक मँहै कऽ नह छश तँ ओको सन एहेन वक्रित समैने नानेसनेकेँ सोन पाउँ छेछश

नानेस नपना समांगकेँ पहिने सूकूठक अँयका जगहपन नपि आएठ छश गीता वुढिया सनकेँ हाथ पकैऽ पान उगावै छश आ नानेस वुढ, वेदना, गेगनाक अपन नपि-नपि अवै छश



नापोसनीं देह-हाथक कोनो सोह-वोह नहि ओ जी-जागसँ लोककें वँयवैने उगए छथ। सौसे देह थाए-कादो सटए नह। देह-हाथमे पोय उगए कपड़ा-वस्त्रन छटए। वूग-वूग पूग नकिवैत नह। कपानमे थाए उगए नह। गेन सुप्पकिऽ खाटगिओ छेथ। तैयो कमजोर लोककें नेगसँ पकैऽ अपन ओ जाइ छथ।

पागकि अपनमे अन्हाए पसए उगै। यातूनन जे-जए सूकूक अंगीक अछि। यातूकान जमगा। उगै छैथे जेना जमपुनय होशमहासंभुटन मय्य अंगीकस्थवगा सग उगै छेथ। जमक वछिगापन अन्हाए सग-सगा नह छेथ। वाढ़कि पागि संगे हहना नह छेथ। मेघसँ टप-टप युवैत वूग। उगै छैथे- महावगाश आवागिओ होश जगोन कनवाक पुन्यासमे हवा अवरोधक वगनह छथ। कगिपौटा मुकमुकाश नोशनीकें देपने अन्हाए दौगैत छथ आ अजगन जकाँएकेवेन ढप-दे गनि छथ छथ। लोक सग अपना-अपना देवताक गाओ छथ सुनैत नह छथ।

लोक देपना-देपनी जिवैत अछि आ संघर्षो कनैत अछि। एक-दोसनाकें देपनासँ उगो जागिजाइत अछि संगे सगकें उगए देपनासँ उग उपस्थिति गऽ जाइत अछि।

हमिजगन लोक सगिश्चि वागसँ नर वक्ता किन्मसँ संकटकाठमे नाथक वगै छैथ। तौवैवठा गजोन देपैत नहैत अछि। जे केकन मागसा-वाया आ किन्मसा एक जगक अछि।

अवैवठा लोक सग आवागिओ छथ। जे वाँकी वँयथ छथ, ओ सग हेलैत-डुमैत आवागिओ छथ। नापोसनी दू-तीन संगीक संग अजैवो सुनिशिग नहवे कनए। जे कमजोर छैथे तेकना नसस पकड़ा कऽ पागकि वेगसँ वाहन नकिवै छथ।

नीतोसँ जेतोक मदैत संगव छैथ ओ कऽ नह छथ। अजैव ओ यनमठाक वेटी सुठेप्याकें कँप्यौने आए छथ आ दोसन दसि नकिवैत गेथ।

सुठेप्या वोम पाड़िकऽ कानि नह छैथ। वेयानी- अंशकासँ घेनाए छैथ। साठे ननपिहने सुठेप्याक पागि कान एकसीउगटमे मनिगिओ छेथ। पाँय वन्यक वेटापन सगतोष वेगे जिवैत नहथ। अछि जमनीसँ वाढ़कि हे-हठेथ भेटैत जमनीसँ ओहे वेटा नहि भेट नह छेथ। धनक दवाइ जमैत जमैत सग जोने धनसँ वाहन नकिवैत गेथ छेथ। जमनी यनमठा गानकि नाका-हेनी केने नह। केने जोनेकें पुछनौ नह। नहि भेटेथ। वेसी जोनेक यए अगुमान नहै जे केकनो संगे सूकूक ऊँयका जगहपन यगिओ होएत। मुदा एनौ जे नहि भेटैथे तँ सवहक पनाग उड़गिओथ।

सुठेप्याकें कनैत-कनैत हाथ पनाप गऽ गेथ छेथ। कुठागट नाकैत-नाकैत अपसियाँत। वेटीक हाथ देप यनमठाक आँपसँ दहे-वहे गोन वहि नह छेथ। वजोतकाठ मुहसँ अवाज नकिवैने कष्ट गऽ नह छेथ।

वपितकाठमे लोककें हति आ मुदैक अगुमव होश छथ। अपन कए कन्या-कन्याक पुनशिखे भेटै छथ। समाज आ सामुहिक अक्ताकि अगुमव तँ संकटकाठमे होश छथ।

लोकमे हड़कम्प मयथे छेथ। सग अपने सेन-सम्पैत, माथ-जाथ आ सन-समांगकें वँयवैने जवाहा यनमठाक वाग के सुनत। ओ जोन-जोनसँ कानए उगए। नापोसनीक यथिग ओनए गेथ। उगने जा कऽ पुछथक-



“अहाँ कएि कबै छी?”

यनमठा मगकें थनि कनैत वाजठ-

“है, हमना बेटीक एकमात्र सहाजा छेथर सेहो हमन गानगिहमेट नहथ छर केना कऽ हमन बेटी बीनज यनै हौ”

यनमठा कानि-कानि सभटा वाग नाजोसकें वुहवए ठाँवै अन्तमे नाजोसक कहथकै-

“एतेक अन्तमे पागसिं घेनाएठ टोठपन जेनाइ कठिग छर मुदा हम जाएवा अहाँ आशा नाप्पू जाँ वौआ केतौ हेतै तँ हम गसियति ओकना गेने आएवा”

कहैत ओ तोजोसँ ब्रह्म मऽ गेथ

यनमठा सोयए ठाँव- सुआनथमे डुमठ ठेके केतौ गीय कन्म कनए ठाँव छर गौआँ-घनूआ, अड़ोसी-पड़ोसी, गाय-मैथानीक वीय जे नसिना-गाना नहै छै तेकना छनेमे तोड़िछर छर ईहो वसैन जाइ छै जे सेनो एकेशम नहए पड़त एक-दोसनाक आवस्यकता पड़वे कनत। नाजोसकें केतेक कष्ट देथिह हमने कानमे केते वेन आनो ठेकसँ दुप्य पहुँचैथिआर ओ सभटा वसैन हमना ठेठ केना तैयान मऽ गेथ जाग हाथमे थऽ कऽ हमना गानकिं वँयेवा-ठे गेथ अछा

अपैने सवहक मुँहपन डन गायन नहथ छथ के कथी वपै छेथै तेकन कोनो पना गहियथ नहथ छेथर मुदा यन्त्रा सवहक हाथ-पैत यथ नहथ छथ नहि-नहिकऽ कपि केकनो सोन पाड़ए ठाँव छथ कानव आ वाजव दुनू मसिनति मऽ कऽ एकटा तेसने स्वन गकैथ नहथ छथ ओहि वीयमे वुहैथै जे कछि ठेक नाजोसक जय-जयकान कऽ नहथ छर वेसी हठसुगि ठेकक संगे यनमठा गणदीक जेठ तँ देपठक नाजोसक कपानसँठहू वह नहथ अछा तैयो अपना पीठपयनमठाक गानकिं गदने आव नहथ अछा

एकजोने पुछथकै-

“है नाजोसक, कपान केना सुट गिथर?”

“हे यौ, टुटवाहा दवाँत ठाँव यय्या वेहेश पड़थ छेथर उदवैतकाठ उपनसँ एगो ईटा हमना कपोपन पसि पड़थ”

“अय्यछा, कहूना एकना वँया कऽ थऽ अगठक इह पैघ वाता”

“युन की कहवा आसुते-पन-आसुता अवैतकाठ जठमँचनमे सुँस गिथ छेथै कहूना ठपैक कऽ गाछक डान पिकड़ै। कनछी काट किऽ मँचनसँ गकिथै। गह तँ पनाग यथ जाइता”

“हे यौ, यय्या डगक अछा आक गिहति”

जमछा प्योठि यय्याक पीठसँ उगातैत नाजोसक वाजठ-

“हँ यौ, यय्या ठीके छै कनी डेना जून जेठ छेथर”



गाणेस सपनाक संसागमे यथगिठ छथि सपनामे देखैक जे ओ अगहन घनमे वग्न अछि जेम्हने जाइ ओम्हनेसँ गेकन छै। ओ छेक के मदनक छेउ सोन पाउँन अछि, मुदा कयिगह अथै अछि अगहनमे असगने औगा नहै अछि नपैने गयंकन अवगाक संग शोण होश अछि शोण होशे छेउमे घनक पुगाठ दुआनदिपै अछि

गाङगाङहटक सूत्र सुगि गाणेसक गनिग टुगिठ छथि अकासमे हेविकप्टन यकमौन मानि नहै छेउसँ साश गेन वा मन्नी वाढि पौडनिक नक्का छेउ आवा नहै छथि।

छेकक मुष्पन आशाक कनिमि पसै गेठ छथि

○

समाप्त

ए नयनापन अपन मंगल गगाणेनहान्दहियेन पन पडाउ

नवगहन गानायस मसिन

- आठेप-

कनोय

मनुष्य गावुक पुनासी होश अछि दैहिक आवश्यकताक पूर्णक संगहि संग ओकन मनोवैज्ञानिक आवश्यकताक पूर्णक सेहो आवश्यक अछि। जपन कयि केकनो दैहिक वा मानसिक कष्ट दै अछि तँ ओकना मनमे कनोयक पुनाहुन गाव होश छश आएव कनोयक हेतु आवश्यक थकि जे कयि केकनो कष्ट पहुँचैक संगहि ईहो आवश्यक जे कष्ट पहुँचैगहिनक पना होशक अज्ञान वेकती द्वागा उपग्न कष्ट कवि सूत्र अपनेसँ मेठ कष्टपन कनोय गह होश अछि उदाहान सूत्रूप अगन दाढी वगवए-काठ गाठक यमनी कटि जाए, पून वहि जाए वा हाथक छेडा योपासँ पैनपन पसिपिडए आ पैनक आँगुन थक्या जाए तँ कनोय गह होश अपति पस्यागाप होश जे एना वेसम्हान दाढी गह काटक छथ वा छेडाकेँ सम्हानि क नपवाक याहि छथ कति जँ कयि आन हमना पाथनसँ मानए कवि मानवाक उपक्रमो कनए तँ नामस यड दय गय जाए।

कनोयक मोजग थकि वविक वविके नहसँ मनुष्य जानवनसँ श्नाक अछि मनुष्य सोय सिकै अछि नीक-वेजाए केन व्रिया कए सिकै अछि कनिगु ई सन काज वविकसँ उपग्न होश अछि मुदा जाहि मनुष्यक वविक गष्ट गज जाश छै ओ वहुन नास अनुयाति कथा वपौन अछि एवम् कन्म आ अकन्मक वीय मेदगाव वसै जाश अछि कनोय अति नीक-सँ-नीक



ओककक वविक मनीजाश छश आकाना विगिड जाइ छै एवम् नकनयाप वढा जाइ छश कनोयावेगमे मनुष्य गडवड काज कऽ छै। अछा अन्ध-अनन्धक भेद वसैत जाश अछा आ तँए सोभाविक नूपँ वनिास दसि अग्नसन गऽ जाश अछा।

कनोयक पुनवठ वेगमे मनुष्य ईहे नहि सोयि पवैत अछा। ओकना ओ कष्ट पहुँचौक तेकना एहेन अग्नपिनाय नहऽ वा नहि। ऐपनकानक सभसँ गोक दृष्टागत यासकयक ओर आयनासमे भेटैत अछा। जपन कओ कऽ गडिजेवाक कानासँ सभ कऽकेँ उप्पाना ओकना जनिमि यो न देवए उगाछा।

कनोयक वेन एहेन होश अछा पाथनसँ योट उगाछासँ ओक पाथनेपन योट कनए उगाछा अछा। एहेन कनोयकेँ जडकनोय कहल जाइ अछा। कानास कनोयोकेँ एवो अग्नदान नहि नहै छै। ओ उगाछा स्थापन गछा नूपँ कनोय कऽ नहऽ अछा।

कनोयक जन्म कष्टसँ होश अछा। सोभाविक अछा। ओकनामे सहनशीलता। ओक वेसी होतै तेकना कनोय ओक कम होश। वनानाग सभमे वढैत महत्वाकांक्षा एवम् वैजानिक विकासक कानासँ पानस्पनिक टकनावक संभावना सेहे वढा गेल अछा। जपन एकके वस्तुके हेतु कएक गोटे पुनर्गठनशील होत। तँ संघर्ष अनिर्वाण गऽ जाइ छश तथा असंख्य नहनि। वेकरीकेँ कनोय होए सोभाविक।

कनोयमे ओकक आत्मसंयम समाप्त गऽ जाइ छश। ऐ अवस्थामे ओक वहुन नास अन्त-सन्तवाजा जाश अछा। पनासिमस्वरूप पुनाग-सँ-पुनाग सम्वन्ध ओ मतिना गष्ट गऽ जाइ छश। तँए उचि ओ नामसमे गुम्न गऽ जाइ। तँ कयि नामसाए अछा। तँ ओ अन्त-सन्त वाजिसकैत अछा, ओ सुनिहमहँ अतोपति गऽ सकैत छी। पनासिमनः मानि-पीट वा एहेन कोनो अशुभ काज गऽ सकैत अछा। तँए उचि ओ ओतए अतोपना होइक तौगमसँ ससैत जाइ। जऽसँ अन्तगऽ कथा ओ काज देय हमनो अतोपना नहि गऽ जाए।

कनोयक सीमति ओ संयत पुनयोग ठाकानी गऽ सकैत अछा। मानि छि ओ कयि गोटे अहाँक टका नयने अछा। आप्य पुन्यासक अछैतो ओ टका आपस नहिकए नहऽ अछा। जपन कनोयक पुनयोग केँसँ गऽ सकैत अछा। ओ वेकरी टका आपस कए दए। पनगु एहेन ठाकानी कनोयकनयामे आत्मसंयमक पुनयोग होश अछा। कानास कनोय कनैत-कनैत तँ सीमाउधन गऽ गेल, वहुन नास नामस गऽ गेल तँ पनासिम अनिष्टकानी गऽ सकैत अछा। टका तँ वुडयि जाएत संगे अपनसँ मानयो ठागिसकैत अछा।

कनोयक पुनयोग पुनर्कानक हेतु सेहे होश अछा। तँ टनेगसँ यातना कनैत कयि यक्का मानि दैत अछा। किन्तु टनेगसँ यकयि कए नयियाँ प्यसा दैत अछा। तँ ओकनापन कसिके नामस गऽ जाश अछा। पनासिमस्वरूप हमहुँ ओकना कोनो-कोनो दमूड देवए याहै छए। यदुपए वातक कोनो संभावना नहि नहै छै। ओ ओर आदमीसँ दुवाना कहियो भेंट होएत वा नहि।

कनोयक पुनयोगप्रदा-कदा आत्मस्वान्ध सेहे होश अछा। कानास तँ कयि वेकरी अहाँकेँ कोनो पुनर्कानक क्षणि पहुँचा दैत अछा। तँ अहाँक सोभाविक स्थिति नहैत अछा। ओ दुवाना छैन एहेन क्षणि नहि हो। तँ ओर वेकरीपन कनोयक पुनयोग कए घटनाक पुनर्वाताकि नोकवाक पुन्यास कए जाश अछा। ऐ पुनर्कानसँ कए गेल कनोयमे आत्म नक्षाक भाव वेसी होश अछा।



कनोयक शकिा नो क-सँ-नो क ओक नऽ जाश अछि कोनो अवस्थक नहि जे अहाँ कोनो गठनी केनहि होइ आ नहि कामँ अहाँकेँ कोपगान होमए पड़ै हो। असए वाग तँ ई थकि जे कनोयक मनुष्यक दृष्टिमे जाँ अहाँ कोनो पुनकानसँ कषा पड़्येवाक जेष्टा कए अछि तँ ओ कनोयक नऽ जाएत। एहेन पनस्थितिमे कनोयसँ वयवाक एक मात्र साधन सहनशीलता थकि।

कनोय दुपक येन कामक साक्षात्कान वा पनजिआनमे होश अछि आएव जेन काम कानक सम्वन्धमे जुटा होएत ओन कनोयमे योपा नऽ सकैत अछि दोसरा वाग जे कनोय केनहिन ओक जेमहनसँ कनोय अवै छै तेमहेन दैपैत अछि अपना दसि नहि दैपैत अछि कनोयक ई पुनवृत्त रूपा होइ छै जे जे वेकरी ओकना कष्ट देत अछि ओकना गश होइक मुदा ओ कयनो ई नहि सोयसकैत अछि जे ओ जे कऽ नहैत अछि से अनुयति छै, कविा तेकनी की पनसिमान हेनत।

कयनो-कयनो ओक कनोयमे अपने माथ पटकए जौत अछि तेकनी काम जे हुनकन ए काजसँ हुनक नकिट सम्वन्धी, जगिकासँ ओ कनुद्वय नहि छैथ, हुनका कष्ट होइ छैथ। तँ एहेन कनोयमे जाँ कयिओ अपन माथ पटकए कविा स्वयंकेँ कहुना कष्ट दैत तँ वुही जे ओ कोनो अपने वेकरीपन कुद्वय अछि।

कोनो वागसँ पौहाएव कनोयक एकटा रूप छै। एहेन वेकरी मागसकि रूपसँ नोगगनसत होइ छैथ। ओ सामान्यतः छोट-मोट गडवडी मेथसँ पौहा जाइ छैथ। केतोको वुढ-वुढागसकेँ अहाँ कोनो गप्प कहियौ, सुनति देनी ओ डैगाँ उऽ कऽ दौग जाएत। कनोयक ई रूप सामान्यतः वृद्ध वा नौगीमे देखना जाइत अछि।

याहे जे होएत तँ ननिवविदे जे कनोयक पनसिमान वनिठे नो क होश अछि सामान्यतः कनोयमे समस्याक समाधान हेवाक वजाय नव-नव समस्याक पुनानुवाव नऽ जाइत अछि। कनोयक आवेगमे कए जे गठनी केतोको-वेन मनस-पुनगत पस्यानापक काम नऽ जाइत अछि।

आएव कनोय सवहक छेउ घातक होश अछि ऐसँ अध्यात्मिक पुनगामि व्यवधान तँ होश अछि संगे सांसारिक विकास सेहो अवनूद्वय नऽ जाइत अछि अस्तु कनोय अवस्थ प्राप्त थकि।

दशिक- २४०११८८८

ऐ नयनापन अपन मंगल गुणागेनहानावदिलयोन पन पडाउ।

१७० शिव कुमार पुनसाद- ओप-दति साहित्यकेँ आन साहित्यसँ छुटकेवाक पुनयोजन २७० कैलाश कुमार मशिन नमाकूँ सं वनवाद होश मैथिलि आ मैथिली संस्कृति।



१

डॉ. शशि कुमार प्रसाद- आठेप-

दरि साहित्यकें आन साहित्यसँ छुटकेवाक प्रयोजन

साहित्य तँ साहित्ये होइ छश गद्य वा पद्य जातवा नयना अछि वा सगिजग जा नह अछि तस्मे कोनो एक वषियकें छुटकाएव ने तँ असाग अछि आ ने हमना वुहने उयति। शीर्षक दऽ देव वऽ असाग छै पनगु जायन वषिय-वस्तुक अनुसन्धानमे डूमए पडै छै जायन वुहना जाइ छै जे एक दृष्टिकें नयवापन दोसऽ दृष्टि, आ दोसऽ नयवापन तेसऽ दृष्टिके पनगि अन्वयायान हुअ छै छश साहित्यमे जायन स्वात्थक वन्यस्व वढए छै तँ गौं-गौंकि वोठ वा गाना अपन उडए छै छश

दरि साहित्यकें आन साहित्यसँ छुटकेवाक प्रयोजन आइ कएिक गऽ नह छश? हिनदी साहित्यमे सेहो ई आन्दोलन उडए नहश कछि मुट्ठी गनौ छै साहित्यक मंथपन अपन गाओ कमाइए ऐ नहक प्रयास कएल। स्थिति एए एक पहुँच जेठे जे कथासम्प्राद प्रेमयन्दोक नयना जाना देठ गेठ।

“प्रेमयन्द दरि साहित्य नहि छपिठ, ओ दरिकें अपमान केठ।”

ऐ नहक अनेकानेक घटना आ वक्तव्य मडियामे अवैत नहठ कोनो-कोनो वषिपक्ष नयनाकानकें ऐ हठमे शामठि कऽ छैठ गेठ। मुदा आइ हिनदीमे केठौ ‘दरि वमिन्श’क गानाक प्रयोजन देयवामे नइ आवै नहठ अछि।

साहित्य नाजनीति नै छएि साहित्यमे नाजनीति वषिय-वस्तु गऽ सकै छै मुदा नाजनीतिकें साहित्यमे प्रवेश नेने साहित्य मनी जाइ छश यनयि आ पाठकक कयिनी नै छै साहित्य! साहित्यक वसिन्ा संसाग छश ऐ साहित्यकें वासन, कायस्थ, नाजपन, नूमहिन वा पछिडा, आन पछिडा, अनुसूयति जाति आइकि साहित्यमे वमिजानि नहि कएल जा सकैत अछि तँ हमना वुहने दरि साहित्यकें छुटकेवाक कोनो प्रयोजन नहि।

मैथिली साहित्यक एकटा सगसँ वडका हुनगऽ नहठ अछि छपिठ कछि छै साहित्यकें अपन पागगी सम्पैत वुहनि छैठपनि हुनका सगसँ छैठ जे जँ कही ई भाषा अनका हाथमे यठि जाएत तँ हमन हाथे हेन जाएत। पनमिाम छैठ जे उमेनक हिसावसँ मैथिली दुवनाशन नहठ। पनना सटैत जेठेठ, डॉन हूकैत जेठेठ। ऐ नूपे भाषाकें पकड़नहिन सवहक पीढ़ी-दनी-पीढ़ीक हाथमे गयान गऽ वठिपैत नहठ।

भाषा पौनी-मौनीक वस्तु नहि आक मुनहन कोठि वा वपानीक जगिसि नहि ई कनिको मनौसी डीह वा प्येन नहि।

भाषा साहित्य तँ हऽ-हऽ वहैत हऽना थकि साहित्यक यान होश अछि जे मात्र अपन कगिछैनेटा मे नहि वनग कगिछैनक संग-संग अपन वागहकें तोड़ैत केठौ-सँ-केठौ यन हऽ नूपी नूवककें आप्ठवति कऽ दैत अछि।

भाषाकें सुगव, पढव, छपिठ आक वाजवपन जे एकाधिकान वुहैत छठ ओ हमन मैथिलीकें मात्र जे आ कऽ नयने छठ। काजानक कछि पनगामे सकुडठ प्रष्टि साड़ी जाकें जिवति भाषाकें सगनी वमिन्श, वा गाना वमिन्श, दरि



साहित्य वा दृष्टि वनिम्स, पछिऽउ साहित्य वा पछिऽउ वनिम्स अथवा कोनो जातिवा वेकतीक वनिम्समे बाँटबासँ साहित्यक विकास अवबुध्य गऽ सकैत अछि

दृष्टि वनिम्सकें छुटकेवाक आचार को?

(क) जे दृष्टि आक-वथून छपिने जाइ छैथ सभकें साहित्य माना छैथ जाए?

(ख) जे दृष्टि, दृष्टि पात्रक यतिनास साहित्यक दृष्टिसँ कऽ नहै छैथ ओकरे दृष्टि साहित्य माना जाए?

(ग) साहित्यक विविध विधा यथा- नाटक, एकांकी, उपन्यास, कथा, कविता, आलोचना, समालोचनादि सभकें अलग-अलग दृष्टि साहित्यक प्माणमे नाप दिने जाए?

(घ) उच्च वर्गक नयनाका दृष्टि दृष्टि यतिनासकें दृष्टि वनिम्समे नाप दिने जाए?

(ङ) उच्च वर्ग दृष्टि दृष्टि साहित्यकें दृष्टि साहित्यमे कोनो स्थान नहि दिने जाए?

(च) उच्च जातिके दृष्टि पात्र छैथ, हुनकासँ सम्बद्ध साहित्यकें दृष्टि साहित्यमे नाप दिने जाए अथवा नहि?

ऐतह दृष्टि साहित्यकें आग साहित्यसँ छुटकेवाक छैथ अनेक विविध वनिम्स उपस्थिति गऽ सकैत अछि ओना एकटा विविध दृष्टि वनिम्सक माटे कछि नामक अनुसंधान केने अछि जे निम्नवत् अछि^[१]:-

“वृष्टि पाससाग ब्रह्मिण, उँ वृथू पाससाग, उँ महेन्द्र गानायस नाम, उँ श्रुषे पाससाग, उँ गानागद व्रियोगी, उँ सुभाष यन्द प्रादव, उँ सत्य गानायस मेहना, उँ गानायस प्रसाद, उँ गानायस देवी, उँ अमोघ नाथ, उँ नवगिन्द्र कुमान यौधनी, उँ गानायस प्रादव, उँ अशोक कुमान मेहना, उँ मेघ प्रसाद, उँ देव गानायस साह, उँ नाम सेवक सहि, श्रीमती व्रिणा नागी, श्री गानायस प्रसाद मम्स, श्री उमेश मम्स, श्री गानायस मम्स, उँ गुरुवैश्वना गुनमैना, श्री नाम गानायस कापडि गानायस, उँ गानायस प्रादव, उँ अगध कुमान, सुश्री मंगू कुमान, उँ श्री प्रकाश गानायस, श्री कपवैश्वना प्रादव, श्री वनिन्द्र कुमान प्रादव, श्री मोहन प्रादव, श्री गन्द व्रिणास नाथ, श्री कपवैश्वना नाथ, श्री उमेश पाससाग, श्री गानायस प्रसाद मम्स ‘हानूदा’, श्री नाम प्रवेश मम्स, श्री संग्रह कुमान मम्स, श्री अय्येछाई शास्त्री, श्री नाम व्रिणास साहु, श्री वरनाम साह, उँ शिव कुमान प्रसाद, श्री मथिष मम्स, श्री सुधी कुमान ‘सुमन’ श्रीमती मुग्गी कामा, श्री उमेश कुमान कामा, श्री श्रुषे गानायस साहु, श्री उमेश प्रसाद प्रादव”

कछि नयनाकाक नाओ ओ नयना निम्नवत् अछि जे हमना व्रियोगे दृष्टि वनिम्सक सूची प्रस्तुत केनहिन समीक्षककें गौनपन जगु नहि पड़ैत अछि हमना वृद्धे ऐ कोटमि घनेनो कवि-कथाका छैथ, जसमे कछि निम्नवत् अछि-

(१) सत्त्वश्री व्रिणा आनन्दक- ‘स्वाद’, ‘जानवना’, ‘काठ’ आ ‘पुठ्ठा’ कथा^[२]

(२) अमोघ हाक- ‘येना’, कुमान गानायस काश्रपक- ‘जान पेट’, ‘जानक आगू’, उँ शम्भु कुमान सहि नयति-‘जोड’ आ ‘पूस’, ‘जानमी’ आदि^[३]

(३) मनोण कुमार कर्मा 'मुग्गाणी' क कथा- 'गिष्ठि', 'आनक्षति', 'काँट' आदि।^[४]

एततिक 'पृथ्वीपुत्र', धूमकेतुक 'मोड़पन', नामानन्द नेमिक- 'दूध-झुठ', धीनेश्वर धीनेन्दन- 'कदो ओ कोयला', 'हुमक वूह कमला', मनपिन्दक उपन्यास- 'नागा सवेस', 'बैका वगणाना', कथा- 'झूठपाथ', एतिते नयति- 'पटाक्षेप', ब्रह्मिनाथ हा ब्रह्मिक- 'ब्रिष्ठो वेसना', 'कौसविद्या', गणेश्वर गकुल- 'सहस्रन शीन्षा' आदि-आदि।

आर सगसँ पैघ पुनर्ग अछि, साहित्यिकें छुटकवैवला नागा पुनर्गमन्ती वा मुप्यमन्ती तथा हुनक मन्ती नाम्दक सदस्य कनिका मागए जाएत। हम जे कहै ओ अहाँ मागएव? आकि अहाँ जे कहव ओ हम मागएव? नहि!

हमन मैथिली भाषा आ साहित्य अप्पनो अल्प विकासित अछि। साहित्यिक विकास हेतु संसाधनक घोर संकट अछि। मुट्ठी गनी छोक अपन कैया-कौड़ी जोड़ि-जोड़ि कछु पोथीक पुनर्काशन कएवा १९९ छैथ। पुनर्काशक नूपैआ ए कऽ पोथी तँ पुनर्काशति कऽ दऽ छथनि मुदा पोथीक पुन्यापन-पुनसान आ विक्री केन्द आदि अस्वयिसँ अथवा अपन भाषाक पोथी प्पनदवाक अनूयिक कामे हमन मैथिली सन्वत्सापी नहि गऽ पावै १९९ अछि।

संगे-संगे ऐ आठेपक माध्यमसँ ईहे आग्रह कएत यैहे छी जे जऽ वेकती वा समूह द्वारा मैथिली साहित्यिक सेवा आकि विकासक कार्य गऽ १९९ हे हुनका सम्मान देए जाए, हुनका सहयोग कएए जाए। साहित्य सवहक सम्पैग छै। साहित्यिकें वेकती-व्रिषिष, व्रग् व्रिषिष आकि जाग व्रिषिष वा समुदाय व्रिषिषक वीय व्रिषिष नहि कएए जाए। जऽ मथिषि-जऽ मैथिली।

[१] मैथिलीक एतति साहित्यिकान, आठेप- 'सम्पन्ति' एतति साहित्यिकानक सूची- डॉ. शिव कुमार यादव, सम्पन्ति अय्यक्ष मैथिली व्रिषिष, मानवाड़ी कौषिष, भागएपुन। यूजीसी संपोषति संगोष्ठीमे पठति आठेपक संयमन- पृ. १६६-१७०

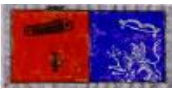
[२] कथा संग्रह- काँट (व्रिषिष आनन्द)

[३] ब्रह्मि ब्रह्मिकथा संग्रह- श्रुति पुनर्काशन एतिसँ पुनर्काशति। पृष्ठ- ८२, ८३, १०५

[४] ब्रह्मिकथा संग्रह- 'पुनिक' (मनोण कुमार कर्मा मुग्गाणी) पृष्ठ- ६०, ४५, ३८

२

डॉ. कैलाश कुमार भस्मि



गमाकूँठ सं वनवाह होश मैथवि आ मैथवि संस्कृति

मथिथिक संस्कृति केन दू अशिशिप अछि: गमाकूँठ आ मांगा। पना गहकोना ई दुनू सभ मैथवि संस्कृति सँ जुड़ि गेल? दुनू के सेवन मथिथि मे गसा केन सुनेमी मे गह अवेत अछि। गमाकूँठ न वाप सं वेटा, यनवाह, हनवाह सं गनिहल नक मांगि प्यैत छथि। गमाकूँठ के नाम सुनति मैथवि के एक यन्यति गीत नकना आरयो वहुन सुवाद सँ सुनल जाइत अछि। स्मनास आवाज अछि:

मामा यौ कनि प्यैनी दीय

अपनो प्याऊ कनि हमनो दीय

जौ गह दैव न कही दैव नहि मानी के

गमाकूँठ के प्यैनी, सुनति, गमाकूँठ आदि गाम सं जागल जौत अछि। ई अपन समग्र अवस्था मथिथि के संस्कृति मे नयन वसत अछि। लोक न वानी-हानी मे प्येवा जोग गमाकूँठ उपजा छैत छथि। छैन ओकन कटनी, छटनी कनैत छथि। शीत-नौद देप्यैत छथि। आ अंत मे प्य मे नाप्य साँठ गनि छैत जमा कनैत छथि। गमाकूँठ के ऐडी आ फूम मे सेहो कवा देप्य सकेत छी। कम्पनी सव के आवाजोवाक वाद सकनी कट आ आनो गंगक गमाकूँठ वाजान मे उपव्य अछि। कनि गेन उगावा छैत कम्पनी सव ओहि मे एसडि डाँटैत छैक। लोक कहला, “वड्ड यहगान अछि”। गमाकूँठ लोक सीधे यूग उगा प्याइत छथि, नोसि छथि, वीड़ी मे, सगियेट मे, युनट मे, सगिग मे, पारप मे, गुटप्या, गुडाप्या, गूठ आ गह जाग कथि-कथि मे प्रयोग होश अछि। आन न आन एकटा गूठ केन कम्पनी “गुठाव गूठ” नाम सँ अपन पुनोडक वनवैत छै। ओहि उर्विवा मे एक यहगान सुठोगन नैक - “गूठ हमागा आविषिकान है”। आव कहू, कुनो जोड़ अछि एकन महान्व के?

मुदा जे सवसँ प्यननाक ननीका गमाकूँठ प्येवाक अछि। से अपन मथिथि आ आसपास केन क्षेत्र मे देप्य जाइत अछि - सुद्व गमाकूँठ मे यूग मथि आ युगेतिक गेन मे आँगन सँ दुसरे ठेगाई ई साक्षात् प्रम के गौत देवाक प्रथा अछि। उपन सँ ई लोक के असग्य आ सुयति के सद्दिवाग सँ दून सेहो गगवैत अछि। लोक गमाकूँठ दुसरे प्रान्त-गान्त-सन्वन्त थुकैत नैत छथि। ई एहेन पपयिह छैत अछि जे समाजवाद केन सद्दिवाग पन अटकत अछि। समाजवाद, मानकसवाद, ठेगनिवाद के जोड़ सँ पकड़ने अछि। की वनाहमास आ की हनपिन, की हनिदू आ की मुसुठमाग, ईसाई आ वहुन गम सन्तीगाम नक एकन सुवाद सँ हुमैत नैत छथि। ओक समाजवादी जे नकिशा पन यद्व हकमि नकिशावादा सँ दाँत गपिडैत वनि। कुनो माग सम्मान के यति केने गमाकूँठ माँगि अपन गेन मे दुसरे छथि। नकिशावादा सेहो जे कनकवेकाठ पहिने उद्युसंका केने छै आ पानि के अनाव अथवा आन कुनो कामे हाथ गहियोने छै। अपन ओहि पवित्र हाथ सँ पूव मोन सँ गमाकूँठ के यूग सँ गजैत अछि। आ हकमि के दैत छनि। वाह! की दृश्य - जेहनि हकमि नहिनि। नकिशावादा दुनू मसल।

गमाकूँठ के सेवन केनहिन गंग-गंग के वहागा वनवैत छथि। कथिक एकना न न छ अन्था। वुद्विन्त्यक यूनास न कथिक आनो कछु कहि संवोधति कनैत छथि। आ मांगि - मांगि के महमा के वप्याग कनैत छथि। हमन एक सम्बन्धी एक घंटा

मे २० वेन नमाकूठ गेल नैन छथि एकरा स्त्रोस मे काज कएल छल। हवाई जहाज केन रंग केन अग्यिना नहथि हुनका वागे मे एक वाग प्रयति छल। जप्पन कपनो स्त्रोस हवाई जहाज केन रंग मे कुनो पनापी होइक आ हुनका मांगट वुह मे गहि आवगति वनषिद अचिकानी कहैल, "भाई, हुनका युग नमाकूठ दियौल, ई गुन सव कछि ठीक क देनाह।" स्त्रो की ठेक गुन नमाकूठ गैया कएल छल, हुनका दैल छल आ ओ वहुन गन्वति होइल नमाकूठ के गेल मे दुसैल अपन काज मे मनोयोग सँ ठागि जाइल छल। ई वाग अछि अछि जो वाद मे दम्माक गहन नोगी न गेल। हाँकि नमाकूठ केन ठा एप्पन यनगिह गेल अछि हुनका पत्नी ओना न नमाकूठ पेवा छेहुनका सँ हजगैल नहैल छल। मुदा जप्पन ग्रैह वाग एक दगि हुनका छोट भाई बुहाव' ठागथि न पत्नी के भेठगि, "नमाकूठ के रम कुनो वड्ड कठकक वाग थोड़े ने भेठ? पार्श्व छथि कोन कुकर्म?" हट दगि पार्श्व सुन कवय वगैर अपन देव के उंय नीय कहल। सुन केठगि: "अहाँके अगवो संस्कार गहि वयठ जो जोड भाय सँ कोना वागी? कोना हम्मि भेठ हुनका भाषम देवके? नमाकूठ पार्श्व छथि कुनो कुकर्म गहि" वेयाना छोट भाय, काट न पून गहि आ नमाकूठ दुसा स्त्रीमान अपन पत्नी सँ गदगद भेल।

जप्पन दठि धूगत्रिस्तो केन हँसुठ मे नहैल नहैल नहैल अनेक वहिनी भर्ति सव नमाकूठ पैन छल आ एकना वहिनी आ भर्ति के संस्कारिक योह नकाँ मगैल अपन ठा पन गतिनाइल छल। धन-नान-सन्तान थुका के पनपना के सेहे शास्त्र केने छल। एक भर्ति न एहेन छल जो की कहल। वहुन ज्ञानी, पढ़वा मे वधिकषाम, कुशाग्रवृद्धि मुदा नमाकूठ पेवाक घनघो न समथक। वाक्यपटु सेहे छल। अपना सङ्गे अनेक वहिनी आ वहुन नास आगो गम के ठेक के नमाकूठ दुसवक ठा मे गपिस केने छल - सद्यस्स गुनु जकाँ कहियो काठ यठिम सेहे देखै छल। वाद मे आई पो एस अचिकानी भेल। भर्तिना एप्पनो अछि मुदा नाम देयान गहि कनवा हमन न कछि गहि कनवा कनदियान न जेनाह।

भान के अनेक नथाकथि शैक्षिक कौशल मे भाहिन वसिष्ठद्विप्राध मे न नमाकूठ सङ्गे वीड़ी के प्रयत्न न गेल। ठेक वीड़ी के युआं मे समाजवाद के संगीतक आनंद आ पनमानद मे भेल होमय गेल। अनेक महिष सव सेहे एकना समाजवाद, वृग वशिष्ठ हटवाक, आ स्त्री-पुन्य के समाज के रंडकिट के रूप मे देखै छथि सना मे, जेहि मे ठेक वीड़ी पवित्र मस्त भेल मकुनी हाथी जकाँ यठैल नहैल छथि जेना वीड़ी केन होक कस सँ एक कुपथा के सन्वनास क जेना, समाज सन्ध आ सम्यक न जैन, माओ, गक्सठ सव समस्या के यट सँ गदिना।

मुदा नमाकूठ के आयुर्विज्ञान आ वैज्ञानिक शोध के नाना पन जप्पन न ठागन जो ई दानु सँ अधिक हाकिनाक अछि कैसन केन पना सव सँ अधिक नमाकूठ सँ ओहू मे गेल मे सोये युगेठ नमाकूठ सँ अछि।

वैज्ञानिक भाषा मे कहल न नमाकूठ के गाछ गकिटियाग पनागान के अछि जकन जङ्ग भान मे गहि अपति दक्षिण अमेरिका मे छैक। दक्षिण अमेरिका सँ ई पुनगाठ आ पुनगाठ सँ भान १६०० ईस्वी मे आनठ गेल। आई वसिष्ठ के कुठ उपाद के उट पुनगान नमाकूठ अपन देश भान मे होइल अछि जो अनेक छल, हाकिनाक छल, व्याथ के घन छल से अपन भेल अछि?

कहल ई पार्श्व छैक जो एक वेन पुनगाठ स्थिति क्लासिसी नागून जॉन गकिट अपन देश के गानी ठा नमाकूठ के विया भेजल आ अहिनहँ प्रायिग शाहिस मे नमाकूठ नामक ई गाछ प्रयति न गेल जो आई समस्त वसिष्ठ छेठ पैघ समस्या वगैर अछि गकिट महेंद्र केन नाम सँ एकना गकिटन कहल गेल।

एहन हमना कछि वृद्ध आ जागका सव सूयना देठ अछि जो जप्पन वीड़ी के कंपनी सव वीड़ी वगेठक न ठेक ओकना पीवे गहि कएक। जो गहि व्यवहार कनै न व्यापार कोना होक? एकना व्याप मे नपैन कंपनी सव कछि कठकाक के एकनति केठक आ अनेक सहन, गाम, यौनाह पन ठेक सवके छेठ मजून, सीनी सुहाद, सुठाना जाऊ आदिनाटक केन



आलोचन करे छै। ओकर सव के वना मंगनी मे गटक देखै आ वीय-वीय मे वोड़ी छुटवै। ओकर गहु-गहु वोड़ी पगई सुन केओका नसा केन प्रयोग वदे छै। वोड़ी सँ वन केन नयना मे। वनाहमा सुन मे वोड़ी नहि पठिनी सोन वनाहमा - नाम-नाम कोना छोट ओकर योज गहमा कनिथि? ऐकन एकन स्वाद के ययवाक आकांक्षा सव के छै। ऐन की समाधान? समाधान के रूप मे पहिने सँ युगेट नमाकूठ न छै वाद मे सजिये आवाजि। सजिये मे न क्वास न गे। ऐन की वनाहमा आ की नमोदानी। वुहू जो सजिये न मँडन आ पढ़े छपि ओहू मे आयुनकि आ अंग्रेजी शिक्षा केन मापंड न गे। जो मथिथि आई सँ ४०-५० वर्ष पून टमाट के सात्वतागकि गोण मे, आ अग व्यवहार मे अगवाक अनुमानि नहि देगे छै। यूँकि ई विधि सँ आय नहैक नहि एकन विधि की कहै छै। निमन-नमकानी मे टमाट के वदवा आमि आ नेवो के प्रयोग करै। छै वैह समाज वनि कुनो मोन-मेय केने नमाकूठ के कोना अपना छै? छैक ने गूढ़ वा। आन-न-आन, नमाकूठ न गे सुदय, छुआछूत सँ सेहे मुक्ता केहू उपास मे आनो कछि प्याउ-क-नहि प्याउ नमाकूठ यूँसि सैकै छै। कर्मकाण्डी के एकना गहमा कनवा मे कुनो हन नहि, साधन गगवान वैकुण्ठ सँ अनुमानि प्रदान केने छथि।

हमा न छै। अछि। मथिथि आ मथिथे कथि समस्त वहिन मे दान संग नमाकूठ आ मांग पन वंदी करै। अथवा अवस्थकन। अछि। नीति कुमा न की कर्महो व्याग दियो। ओ न एयनो नमाकूठ के प्रोडक्ट वने वना कर्मपनी सव पुण उक वन अछि। कुनो प्रविद्य नहि पश्यि। देस वशिष नूँ अमेरिका मे नमाकूठ उत्पाद के कोनोवानी के अपन आमदनीक एक पुष्ट मांग 'कैसन' आ दोसन असाध्य नोकर स्वागत हे। उवा पडै। छन किन्तु एही नहैक नयिम के वागे मे मान मे सोय नहै। अछि। ई अपना आप मे वनवोन यतिव वशिष अछि।

नथाकार्थि सोसराइट, वदिवान आ प्रगतिशील ओकर सव युप छथि। कोकर न स्वयं नमाकूठ युग आ नमाकूठ सँ नमि। अथ वस्तु के उपयोग मे संलग्न छथि। नमसंय्या वशिष्ट के कमान पन गढ़ मान केन वदिवान ओकरा यन, मेजोनी, माइनी, हनिन, गनिन, आ व्यवस्था मे नकि अथवा के मोन-मेय नकिवा मे मेन छथि। नमसंय्या हुनका एसेट वुहना जो छन। कुनो अस्पता के कैसन, यक्षमा, आ हृदय वशिष मे जाउ, स्थितिक मान न जो। दमा के मनि केन सन्वेक्षमा कन यथाथ वुह। जो कम सँ कम नमाकूठ के उत्पाद के पूमान: प्रविद्य करवाक नयिम वा कैंड जा सैकै। छैक जाहि सँ एकन प्रयास-प्रसास कम स कम हो औन अंत: ई समापन केन उग दशि अगसन हो। नमाकूठ सँ घटे-घाटा। नमाकूठ मे मादकन अथवा अलोचना प्रदान कर' वना मुय्य घटक नकिटीन (मायोनि) होन छै। वैह नव सवस अथकि मानुस सेहे होन छै। एकन अनिक्ता नमाकूठ मे अनेक नहैक कैसन उत्पादन कर' वना नव पाय नहै। नमाकूठ के सेवन सँ मुँह, घेठ, स्वांसन आ श्वेडा केन कैसन (मोह, नहो। नह पुन यायेन) होवाक सम्भावना नहै। छैक। वनिनकि अंत औ नहि होन छै। एो यन हृदय के वीमानी (होन वसिसे), यमनी कठिनी, उय्य नकनयाप (हगिह गवोद श्वेससुने), पेटक अस्स (पतोमायह उयेन), अमृपति (अथिथि), अदिना (निसोमनी) आदि नोकर सम्भावना नमाकूठ केन उत्पाद केन सेवन सँ वद जाइ छै।

आदिवासी समाज मे सेहे वनिय सव सगी-पुन्य दुन के नमाकूठ आ एकना सँ नमि। अनेक वस्तु के वाशि। देगे छै। नमाकूठ केन सेवन एक पैघ समस्त अछि। मोन आ शरीर दुन के सवनास क नहै अछि। अहि पन सोयव ननुनी



अछा हम एहि कथ्य के माध्यम सं कनिको ऊँय-नीय गहि कहि नहथ छी। केवल ग्रैह जो ई वृक्ष प्याप रहम अछा, एकन
न्याग कनक याहि।

ऐ नयनापन अपन मंगल गंगाजोहनावादिहयोम पन पडाउ।

इ पद्य

इ आशीष अगयनिहम - कछि जोगीना आ इ टा गज

इ रजदीश यग्न गकु 'अगि' - २ टा गज

इ इनाजीव नज ह- २ टा गज रमेश उप्पामी - महेश पद्मावती - अगुनोय

इ रजदीप पुष्प - २ टा गज

इ पद्मो मसुड - अपना छे अपनहि ठुए पडा

आशीष अगयनिहम

कछि जोगीना आ इ टा गज

जोगी जी सागा नागा नागानागाना नागाना जोगी जी सागा नागा

सागा नागा नागानागाना नागाना जोगी जी सागा नागा

कहानी मेठे काँय कवति मेठे गीत

पुनस्कान छे जूनी ठाँ वापोसँ मोड

जोगी जी सागा नागा नागानागाना नागाना जोगी जी सागा नागा

पोथी छेने धूमै वौआ कोने कोने



जूनी केन दृशन भेछै यागी ओ सोन

जोगी जी सागा गागा गानागानागानागाना जोगी जी सागा गागा

अडहन दनहन सग छै गाड

दरभंगा वहाँ वयछै ने याग

जोगी जी सागा गागा गानागानागानागाना जोगी जी सागा गागा

पटना वहाँ सूनछै छै कस नेपाछी

सहसा वहाँ वजावैए पूववे गाछी

जोगी जी सागा गागा गानागानागानागाना जोगी जी सागा गागा

कथा की कलगी छीपू मगाजक प्येने

पुनस्काग नँ जोगै दरभंगायि के पेटमे

जोगी जी सागा गागा गानागानागानागाना जोगी जी सागा गागा

दू दुनूनी याग पिढा वनछै याग सिए वीस

जूनी के दनवज्जापन यनवै महीस

जोगी जी सागा गागा गानागानागानागाना जोगी जी सागा गागा

गोष्ठीमे गुष्ठीपन होइ छै यन्या

नर वाद भेटै छै यमयाँ पन्या



जोगी जी सागा गाना गानागानागानागाना जोगी जी सागा गाना

वोणै कसोटै कयिकैग मटन

जुनी ठेगावै देया कऽ वदन

जोगी जी सागा गाना गानागानागानागाना जोगी जी सागा गाना

पुनगा ठेयक ठेठ अनेगे ववाठ

गवका हँसोथी गेठ सगहँक माठ

जोगी जी सागा गाना गानागानागानागाना जोगी जी सागा गाना

* स्थागक गाम साहित्यसँ संदग्गति अछी

३ टा गणै

१

देशमे अगुआठ गवका

दूए पुनगे हाठ गवका

घान जागै गेठ सगहँक

माछ पुनगे जाठ गवका

कछि युगौगी शेन एठे

ठेक ठेकै गाठ गवका

छै जूने प्याद शेठ

पेठ पुनगे टाठ गवका



दाग ओगे श्वागते छै
देह याहै थाठ गवका

सग पाँतमि २१२२+२१२२ मात्ताकृम अछि (वहने १मठ मोनववा साठमि वा वहने १मठ साठमि यागिनुक्की)

२
वडका वडका घागे ह।
सौसे छै वुधयिने ह।

मुनदा सग के हुनयिँ छै
की काना हथियिने ह।

सूतठ हुपयि मोन हमन
जागठ वस संसागे ह।

हमना ठा सुपठे सुक्पठ
हुनका ठा नसदागे ह।

अगुअगाधेगे एकै हू
वड वैसठ पछुअगे ह।

सग पाँतमि २२२- २२२- २ मात्ताकृम अछि

३
कनयि हू नवावक गाम
वहुते हू वकिसक गाम



वोयो वोय सुसादी गढ
यातू काग उहासक गाम

कगिको छे हजानो गाम
कगिको छे उद्यानक गाम

वड पुस वाजकिऽ गव गौगाम
युपे यूप पुनागक गाम

अंगमि नूप दुपक सहन छै
दाही माँगै सुप्पाडक गाम

सग पाँतमि २२२९ + १२२२९ मातृनाकाम अछि

ऐ नयनापन अपन मंगल गजापेनहनावहिये पन पडाउ

गजादीस यग्न गकुल 'अगति'- २ टा गज

(१)

कतुमा आद न प्रेम सपिवयि ए वौनहवा भोगके
वटुक कनेक कावमे नययि ए वौनहवा भोगके

देशक आजादीके प्यातमि खाँसी यठवा युवक को
गजान सहिके कथा सुनवयि ए वौनहवा भोगके



जहां-जहांसं होड़ि-होड़कि' होनी अप्पन मनन छी

अप्रायीक कछु पाठ पढ़वय्यो ऐ वौनहवा भोगके

अपने प्यानि कते हनागीसँ पुनै छी जाठ अहाँ

सत्य, सांगिकी वाट धनवय्यो ऐ वौनहवा भोगके

गमन कलू गाना मानाके, अपन संस्कृति, भाषाके

सोह वाटपन गति यथवय्यो ऐ वौनहवा भोगके

(वृत्त- २०)

(२)

पन-यतिनसं मुक्ता कहैए नाम-कथा

जीवनमे सुख-साक्षाति अगैए नाम-कथा

असखी धन की थोक मनानासं सोपू

भोगक सगटा व्याघ्रि कहैए नाम-कथा

सेवामे आनंद कते हनुमाने कहना

पुनव्रत आत्म विश्वास गनैए नाम-कथा

गात्रासं सोपू पनामिअ अहंकारक

गाण स्वयंपन कलू कहैए नाम-कथा



सहस्रीशता, पौषके संगम देखू

गवसागले' गाव वगैए नाम-कथा

(वृत्त-१५)

ऐ नयनापन अपन मंगल गजागेनहान्वाहियेन पन पडाउ

नाजीव नंगन ह- २ टा गजग रमहेश डपनामी- महेश पद्मावती- अनुमोद

१

नाजीव नंगन ह

२ टा गजग

१

अहि हदय के गाव छी

कहू कएक गहि वाज छी

सगल नाग किछमछ कछमछ

अहि याद मे जाग छी

अहिक सपना मे डूव के

मधुन प्रेम नस पाव छी

अहि छेठ अछमिन- आसन

कएक एग छी नाग छी

कुसुम स्नेह अप्पनि क सदपिन

कएक गहि हयि सजाव छी

सुन - अथनक सगुनियो आना

कएक गहि पुन पिसान छी

स्मृति अथन सुधा नस अप्पन

पगो गहि छेठकाव छी



यमकनिह अछिह गगन
गणि छटघन केँ छणिनावय छी

गहि लोक आव गुठुम कतु
लोक कएक कनावय छी

अहि सँ हमन सव मनोय
लोक कएक सनावय छी

हमन शपथ घुनकि' नाकू
कहू पुनहि अहि आवय छी

सुनू गाजवि शपथ मानू
अहि जातिह हम हाय छी ।

मान्ना कृतमः १२२ १२२ २२

२

गाजगीनिसिहंछी मेथ
गोट गोट के मंडी मेथ

सगल देश के ससिस्टम आर
पौछिह एक हंडी मेथ

छेकान्त के सेवक आर
पति पैघ पायंडी मेथ

जातिपातिमे बाँटगहि
मानू भूमि के दम्पती मेथ

शासन मट मे गेना यून
संगी यनघिमंडी मेथ

माछि जगन्तक जे वगथ
वैह गम्हन कुकंडी मेथ

छट पाट गाँव अछिभय
पैप' पीछिता यंडी मेथ

अनन अनन केँ कोटिभैष
गाजवि शक्ति शक्ति मेथ ।



(भाग्या क्रमः २१२१ २२२ २१)

- उद्यय वृत्तीय सहायक गान्तीय जीवन वीमा गगिम समस्तीपुन, वहिन

२

महेश उप्पामी

महेश पट्टावरी

- अगुनीय-

☆

मैथि मय्य गह सहजह एक
धनहि मान सगि नजह ब्रिक्का

☆

वप्पिह वप्पिह वप्पिह वप्पिह
मनहि मनन सुसयवि सुजागा

☆

मैथि पुनवासी संगम एकगमा
सयिह सुभाष जोगावह नामा

☆

कानन कवन सव वैसि वियानी
वृगिन नूटि अवि छेहु सम्हानी

☆

सीता संगतिजानि सव हृदय सगिह सुजाग
कहेउ महेश हति मैथि गेजहु सव अगमिग

☆

गनिन पुष्प अनु गुप्त पुनकूठा
माठा मय्य मगा मंगठ मूठा

☆

अगन पुनीतमिन सगेहु अगुनागे
नवहि पुनम सवहि हियि जागे

☆

मातु एक अनु संगति अगेका
सवहि सहोदर सयिगि एका

☆

धनहु धीन सा कोटि गहिनी
यतिन मनन अव तुम्हनी वानी

☆



ऐ नयनापन अपन मंगल गगानेनान्ददियोम पन पडाउ।

पुनदीप पुष्प

र टा गगन

१

अथके ठ' पाय दू १ ँ गनिगी
केहेन छै गडू १ ँ गनिगी

नकति नह अहाँक गैना आ
सपना क' देन यू १ ँ गनिगी

केओ अपन जाँ संग छोड़ै छै
गानक ठौ गलू १ ँ गनिगी

ककना कहव कडो १ कान्ते १
छै छैन सूद मूड १ ँ गनिगी

सवकें नहस नहस कयै पठमे
सवहक वगठ हलू १ ँ गनिगी
- पुनदीप पुष्प (२२२२ १२१२ २२ सव पाँनमि)

२

हेतौ नहिया शो १ हम मोग पड़वौ
ठातौ गिके वको १ हम मोग पड़वौ

तोना पाछू यथै युपेसँ केओ
धनतौ नहने पछोड़ हम मोग पड़वौ

शेनो केओ नहिनियंदा जाँ मुप
ठातौ तोह १ यको १ हम मोग पड़वौ

जे तोना देप्य मोनमे पूव नस ठ' क'
वगतौ उठना यटो १ हम मोग पड़वौ

वेदीन १ वैस मंग १ पढ' ठेठ वहनि
पहिनतौ जे पटो १ हम मोग पड़वौ
- पुनदीप पुष्प (२२२२२२२२२२ सव पाँनमि)



ऐ नयनापन अपन मंगल गगणोदनाब्जद्विषयोम पन पडाउ
पठ्ठो मासुठ, गाम वेनमा, जाहि मधुवनी

अपना छे अपनहि छुए पड़न

अपना छे अपनहि छुए पड़न

वज्रौ नहना छेक

मुदा अपन जो काज अछि

तेकरा तँ अपनहि करए पड़न

आगाँ वढ़वाक अछि अहाँकें अपने

वतिथ वागकें वसिए पड़न

समय स्वयं पुछैए अहाँकें

जवाव तँ ओकरा देवए पड़न!

कहियो यनबुहैन नहव अपनकें वेयानी

गाथिम अहाँक की, ई तँ बुझए पड़न

केनवो करए कियो काज अहाँकें

स्वतंत्र अहाँकें हुअ पड़न

नव नह, नव डोक संग

अपना छे अपनहि छुए पड़न!

अपना छे अपनहि करए पड़न! !

ऐ नयनापन अपन मंगल गगणोदनाब्जद्विषयोम पन पडाउ

ब्रह्म



122